अष्टक वर्ग

विषय सूची

1. परिचय

प्राचीन ऋषियों ने होरा शास्त्र के अन्तर्गत सूर्य से शनि तक के ग्रहों की शुभता अशुभता ज्ञात करने की एक ऐसी पद्धति का अविष्कार किया जिसके द्वारा यह जाना जा सके कि किस ग्रह की शुभ या अशुभ फल प्रदान करने की क्या क्षमता है। इस हेतु उन्होने रेखा एवं बिन्दु प्रदान करने की एक ऐसी पद्धति को खोज निकाला जिसे आज अष्टक वर्ग पद्धति कहा जाता है। इस पद्धति के द्वारा मनुष्य के कर्मों का शुभ या अशुभ फल आसानी से ज्ञात किया जा सकता है। ज्योतिष के क्षेत्र में उच्च कोटि की सफलता अष्टक वर्ग के ज्ञान के बिना विद्वान देवज्ञ को भी उपलब्ध होना संभव नहीं है। अष्टक वर्ग के ज्ञान के बिना जन्मपत्रिका के गुण दोषों से उत्पन्न शुभाशुभ फल को अच्छी तरह से नहीं जाना जा सकता। इस लेखक ने भी इस पद्धति पर गहन अध्ययन आज से बीस वर्ष पहले प्रारंभ किया था और पाया कि इस पद्धति से श्रेष्ठ पद्धति सटीक फलादेश करने में सक्षम नहीं है।

मनुष्य के समस्त कर्मजनित शुभ या अशुभ फलों को अष्टक वर्ग के द्वारा वैज्ञानिक ढंग से जाना जा सकता है। इसकी सहायता से फलादेश अत्यन्त सूक्ष्म हो जाता है। इस पद्धति में व्यष्टि व समृष्टि के अपूर्व समन्वय का सिद्धान्त लागू होता है। ग्रहों एवं भावों के आधार पर, राशि या लग्न के आधार पर, विशोंत्तरी दशा या गोचर द्वारा जाने गये फलों में परस्पर विरोध, संकट या सन्कुलता हो सकती है। ऐसी परिस्थिति में सही फलादेश का निर्णय कैसे हो सकता है ? अतः पूर्व के विद्वानों ने अष्टक वर्ग पद्धति का आश्रय लेना उचित बताया है।

फलित के सामान्य सिद्धान्तों के द्वारा ग्रह, भाव–जन्य फल की मात्रा, समय व स्वरूप का निर्णय करना अत्यन्त कठिन होता है, लेकिन इस पद्धति के द्वारा यह संभव है। उदाहरण के लिए कोई ग्रह शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर स्वराशि, उच्चराशि या मित्र की राशि में स्थित होता है, तो अपने भाव से संबंधित फलों की वृद्धि करेगा। यह एक सर्वमान्य सामान्य सिद्धान्त है। लेकिन वह ग्रह कितनी वृद्धि करेगा ? अर्थात कुल शुभ या अशुभ फलों का अनुपात क्या होगा ? इस संबंध में अष्टक वर्ग पद्धति निर्णायक मानी गयी है। इसकी सहायता से आयु, धन, विद्या, बुद्धि, पति–पत्नि, सुख, सम्पत्ति, भूमि–वाहन, कर्म के अनुसार लाभ का अनुपात, शुभ दिशाएं, बन्धुओं से लाभ, गोचर में ग्रहों का फल आसानी से जाना जा सकता है।

अष्टक वर्ग बनाने हेतु रेखा एवं बिन्दु का प्रयोग करते हैं। रेखा के चार पर्यायवाची शब्द हैं। रेखा, स्थान, फल एवं कला। इसी प्रकार बिन्दु के चार पर्यायवाची शब्द हैं। बिन्दु करण, दाय और अच्क्ष। अष्टक वर्ग के द्वारा फलादेश करते समय यह देखा जाता है कि वहाँ पर कितनी रेखाएं व बिन्दु हैं। शुभ फल को प्रायः रेखा (।) से अभिव्यक्त किया जाता है और अशुभ फल को बिन्दु (0) के द्वारा प्रकट करने का प्रचलन है। लेकिन दक्षिण भारत में शुभ फल को बिन्दु द्वारा व्यक्त करते हैं तथा अशुभ फल को रेखा के द्वारा स्वीकार करते हैं। इसमें बिन्दु या रेखा द्वारा शुभ–अशुभ फल को किसी भी रूप में व्यक्त कर सकते हैं। यदि रेखा द्वारा शुभ फल है, तो बिन्दु द्वारा अशुभ फल होगा और यदि बिन्दु द्वारा शुभ फल दर्शाते हैं, तो रेखा द्वारा अशुभ फल दर्शाया जाएगा।

अष्टक वर्ग में सात ग्रह सूर्य से क्रमानुसार शनि तक रहते हैं एवं आठवां लग्न को माना गया है। इस कारण इसे अष्टक वर्ग कहा जाता है। कहीं–कहीं लग्न को नहीं लेते हैं एवं सूर्यादि सात ग्रहों को लेते हैं। आगे सूर्य से लेकर शनि तक के सात ग्रहों तथा लग्न का अष्टक वर्ग बनाने की प्रक्रिया प्रस्तुत कर रहे हैं।

सूर्याष्टक वर्ग

सूर्याष्टक वर्ग के अन्तर्गत सूर्य जन्म पत्रिका में जिस स्थान पर स्थित होता है, वहाँ से 1, 2, 4, 7, 8, 9, 10 एवं 11 स्थानों पर शुभ रेखाएं प्रदान करता है। अर्थात सूर्याष्टक वर्ग बनाते समय सूर्य अपनी अधिष्ठित राशि से केन्द्र स्थान, द्वितीय, अष्टम, नवम्, एकादश स्थानों में पड़ने वाली राशियों को शुभ रेखा प्रदान करता है, तथा शेष स्थानों पर बिन्दु या अशुभता प्रदान करता है। सूर्य के रेखा स्थान कुल 48 होते हैं। सूर्याष्टक वर्ग में अन्य ग्रह निम्नानुसार रेखा प्रदान करते हैं।

चन्द्र अपने स्थान से 3, 6, 10 तथा 11 वें भाव में रेखा प्रदान करता है।
मंगल अपने स्थान से 1, 2, 4, 7, 8, 9, 10 तथा 11 वें भाव में रेखा प्रदान करता है।
बुध अपने स्थान से 3, 5, 6, 9, 10, 11 तथा 12 वें भाव में रेखा प्रदान करता है।
गुरु अपने स्थान से 5, 6, 9 तथा 11 वें भाव में रेखा प्रदान करता है।
शुक्र अपने स्थान से 6, 7 तथा 12 वें भाव में रेखा प्रदान करता है।
शनि अपने स्थान से 1, 2, 4, 7, 8, 9, 10 तथा 11 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।
लग्न अपने स्थान से 3, 4, 6, 10, 11 तथा 12 वें भाव में रेखा प्रदान करता है।

सूर्य की रेखाओं का कुलयोग 48 होता है। नीचे दी गयी तालिका द्वारा इसे प्रदर्शित कर रहे हैं।

सूर्याष्टक वर्ग रेखा स्थान (48)

	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.	
	1	3	1	3	5	6	1	3	
	2	6	2	5	6	7	2	4	
	4	10	4	6	9	12	4	6	
	7	11	7	9	11		7	10	
	8		8	10			8	11	
	9		9	11			9	12	
	10		10	12			10		
	11		11				11		
रेखाऐं	8	4	8	7	4	3	8	6	कुल रेखाऐं = **48**

चन्द्राष्टक वर्ग

चन्द्र जन्म पत्रिका में जिस स्थान पर बैठा होता है। वहाँ से 1, 3, 6, 7, 10 एवं 11वें स्थानों पर शुभ रेखाएं प्रदान करता हैं। अर्थात अपनी अधिष्ठित राशि से उपचय स्थान एवं लग्न तथा सप्तम स्थानों में पड़ने वाली राशियों को शुभ रेखा प्रदान करता है।
चन्द्राष्टक वर्ग में अन्य ग्रह इस प्रकार रेखा प्रदान करते हैं।

मंगल अपने स्थान से 2, 3, 5, 6, 9, 10 तथा 11 वें स्थान को रेखा प्रदान करता है।

बुध अपने स्थान से 1, 3, 4, 5, 7, 8, 10 तथा 11 वें स्थान को रेखा प्रदान करता है।

गुरु अपने स्थान से 1, 4, 7, 8, 10, 11 तथा 12 वें स्थान को रेखा प्रदान करता है।

शुक्र अपने स्थान से 3, 4, 5, 7, 9, 10 तथा 11 वें स्थान को रेखा प्रदान करता है।

शनि अपने स्थान से 3, 5, 6 तथा 11 वें स्थान को रेखा प्रदान करता है।

लग्न अपने स्थान से 3, 6, 10 तथा 11 वें स्थान को रेखा प्रदान करता है।

सूर्य अपने स्थान से 3, 6, 7, 8, 10 तथा 11 वें स्थान को रेखा प्रदान करता है।

चन्द्र के रेखा स्थान कुल 49 होते हैं। जिसे नीचे दी गयी तालिका द्वारा व्यक्त कर रहे हैं।

चन्द्राष्टक वर्ग रेखा स्थान (49)

	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.	सू.	
	1	2	1	1	3	3	3	3	
	3	3	3	4	4	5	6	6	
	6	5	4	7	5	6	10	7	
	7	6	5	8	7	11	11	8	
	10	9	7	10	9			10	
	11	10	8	11	10			11	
		11	10	12	11				
			11						
रेखाऐं	6	7	8	7	7	4	4	6	कुल रेखाऐं **= 49**

मंगलाष्टक वर्ग

मंगल जन्म पत्रिका में जिस स्थान पर स्थित होता है वहाँ से 1, 2, 4, 7, 8, 10 एवं 11 वें स्थानों पर शुभ रेखाएं प्रदान करता है। अर्थात अपनी अधिष्ठित राशि से केन्द्र स्थान एवं द्वितीय, अष्टम, एकादश राशियों को शुभ रेखा प्रदान करता है। अन्य ग्रह निम्नानुसार रेखा देते हैं।

बुध अपने स्थान से 3, 5, 6 तथा 11 वें भाव में रेखा प्रदान करता है।

गुरु अपने स्थान से 6, 10, 11 तथा 12 वें स्थान पर रेखा प्रदान करता है।

शुक्र अपने स्थान से 6, 8, 11 तथा 12 वें भाव में रेखा प्रदान करता है।

शनि अपने स्थान से 1, 4, 7, 8, 9, 10 तथा 11 वें स्थान को रेखा प्रदान करता है।

लग्न अपने स्थान से 1, 3, 6, 10 तथा 11 वें भाव में रेखा प्रदान करता है।

सूर्य अपने स्थान के 3, 5, 6, 10 तथा 11 वें भाव में रेखा प्रदान करता है।

चन्द्र अपने स्थान से 3, 6 तथा 11 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

मंगल की कुल रेखाओं का योग 39 होता है। नीचे दी गयी तालिका में देखें।

मंगलाष्टक वर्ग रेखा स्थान (39)

	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.	सू.	चं.	
	1	3	6	6	1	1	3	3	
	2	5	10	8	4	3	5	6	
	4	6	11	11	7	6	6	11	
	7	11	12	12	8	10	10		
	8				9	11	11		
	10				10				
	11				11				
रेखाऐं	7	4	4	4	7	5	5	3	कुल रेखाऐं **= 39**

बुधाष्टक वर्ग

बुधाष्टक वर्ग में बुध अपने स्थान से 1, 3, 5, 6, 9, 10, 11 एवं 12 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

गुरु अपने स्थान से 6, 8, 11, 12 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

शुक्र अपने स्थान से 1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

शनि अपने स्थान से 1, 2, 4, 7, 8, 9, 10 और 11 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

लग्न अपने स्थान से 1, 2, 4, 6, 8, 10, 11 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

सूर्य अपने स्थान से 5, 6, 9, 11, 12 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

चन्द्र अपने स्थान से 2, 4, 6, 8, 10, 11 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

मंगल अपने स्थान से 1, 2, 4, 7, 8, 9, 10 तथा 11 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

बुध की कुल रेखाओं का योग 54 होता है। जिसकी तालिका नीचे दी गयी है।

बुधाष्टक वर्ग रेखा स्थान (54)

	बु.	गु.	शु.	श.	ल.	सू.	चं.	मं.	
	1	6	1	1	1	5	2	1	
	3	8	2	2	2	6	4	2	
	5	11	3	4	4	9	6	4	
	6	12	4	7	6	11	8	7	
	9		5	8	8	12	10	8	
	10		8	9	10		11	9	
	11		9	10	11			10	
	12		11	11				11	
रेखाऐं	8	4	8	8	7	5	6	8	कुल रेखाऐं = **54**

गुरु अष्टक वर्ग

गुरु अपने अष्टक वर्ग में गुरु अपने स्थान से 1, 2, 3, 4, 7, 8, 10 तथा 11 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है। अन्य ग्रह इस प्रकार से रेखा प्रदान करते हैं।

शुक्र अपने स्थान से 2, 5, 6, 9, 10 तथा 11 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

शनि अपने स्थान से 3, 5, 6, 12 वें स्थान से रेखा प्रदान करता हैं।

लग्न अपने स्थान से 1, 2, 4, 5, 6, 7, 9, 10, 11 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

सूर्य अपने स्थान से 1, 2, 3, 4, 7, 8, 9, 10, 11 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

चन्द्र अपने स्थान से 2, 5, 7, 9, 11 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

मंगल अपने स्थान से 1, 2, 4, 7, 8, 10, 11 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

बुध अपने स्थान से 1, 2, 4, 5, 6, 9, 10, 11 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

गुरु की कुल रेखाओं का योग 56 होता है जिसे नीचे दी गयी तालिका में प्रदर्शित कर रहे हैं।

गुरु अष्टक वर्ग रेखा स्थान (56)

	गु.	शु.	श.	ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	
	1	2	3	1	1	2	1	1	
	2	5	5	2	2	5	2	2	
	3	6	6	4	3	7	4	4	
	4	9	12	5	4	9	7	5	
	7	10		6	7	11	8	6	
	8	11		7	8		10	9	
	10			9	9		11	10	
	11			10	10			11	
				11	11				
रेखाऐं	8	6	4	9	9	5	7	8	कुल रेखाऐं = 56

शुक्राष्टक वर्ग

शुक्राष्टक वर्ग में शुक्र अपने स्थान से 1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 10, 11 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है। अन्य ग्रह इस प्रकार रेखा देते हैं।

शनि अपने स्थान से 3, 4, 5, 8, 9, 10, 11 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

लग्न अपने स्थान से 1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

सूर्य अपने स्थान से 8, 11, 12 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

चन्द्र अपने स्थान से 1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11, 12 वें भाव में रेखा प्रदान करता है।

मंगल अपने स्थान से 3, 5, 6, 9, 11, 12 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

बुध अपने स्थान से 3, 5, 6, 9, 11 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

गुरु अपने स्थान से 5, 8, 9, 10, 11 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

शुक्र की रेखाओं का कुल योग 52 होता है। जिसे नीचे दी गयी तालिका में प्रदर्शित कर रहे हैं।

शुक्राष्टक वर्ग रेखा स्थान (52)

	शु.	श.	ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	
	1	3	1	8	1	3	3	5	
	2	4	2	11	2	5	5	8	
	3	5	3	12	3	6	6	9	
	4	8	4		4	9	9	10	
	5	9	5		5	11	11	11	
	8	10	8		8	12			
	9	11	9		9				
	10		11		11				
	11				12				
रेखाऐं	9	7	8	3	9	6	5	5	कुल रेखाऐं = 52

शन्याष्टक वर्ग

शनिअष्टक वर्ग में शनि अपने स्थान से 3, 5, 6, 11 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

लग्न अपने स्थान से 1, 3, 4, 6, 10, 11 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

सूर्य अपने स्थान से 1, 2, 4, 7, 8, 10, 11 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

चन्द्र अपने स्थान से 3, 6, 11 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

मंगल अपने स्थान से 3, 5, 6, 10, 11, 12 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

बुध अपने स्थान से 6, 8, 9, 10, 11, 12 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

गुरु अपने स्थान से 5, 6, 11, 12 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

शुक्र अपने स्थान से 6, 11, 12 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

शनि की रेखाओं का कुल योग 39 होता है जिसे नीचे दिया गया है।

शन्याष्टक वर्ग रेखास्थान (39)

	श.	ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	
	3	1	1	3	3	6	5	6	
	5	3	2	6	5	8	6	11	
	6	4	4	11	6	9	11	12	
	11	6	7		10	10	12		
		10	8		11	11			
		11	10		12	12			
			11						
रेखाऐं	4	6	7	3	6	6	4	3	कुल रेखाऐं **= 39**

लग्नाष्टक वर्ग

लग्नाष्टक वर्ग में लग्न अपने स्थान से 3, 6, 10, 11 वें स्थान में रेखा देती है।

सूर्य अपने स्थान से 3, 4, 6, 10, 11, 12 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

चन्द्र अपने स्थान से 3, 6, 10, 11 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

मंगल अपने स्थान से 1, 3, 6, 10, 11 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

बुध अपने स्थान से 1, 2, 4, 6, 8, 10, 11 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

गुरु अपने स्थान से 1, 2, 4, 5, 6, 7, 9, 10, 11 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

शुक्र अपने स्थान से 1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

शनि अपने स्थान से 1, 3, 4, 6, 10, 11 वें स्थान में रेखा प्रदान करता है।

लग्न की कुल रेखाओं का योग 49 होता है। जिसे नीचे दिया गया है।

लग्नाष्टक वर्ग रेखा स्थान (49)

	ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	
	3	3	3	1	1	1	1	1	
	6	4	6	3	2	2	2	3	
	10	6	10	6	4	4	3	4	
	11	10	11	10	6	5	4	6	
		11		11	8	6	5	10	
		12			10	7	8	11	
					11	9	9		
						10	11		
						11			
रेखाऐं	4	6	4	5	7	9	8	6	कुल रेखाऐं **= 49**

सूर्याष्टक वर्ग से लेकर लग्नाष्टक वर्ग तक ग्रहों के रेखा प्रदान करने के स्थानों की पर्याप्त जानकारी के बाद इन सभी अष्टक वर्गों को बनाने की प्रक्रिया एक उदाहरण द्वारा समझा रहे हैं। उदाहरण कुंडली के जातक का जन्म लग्न वृष है। चन्द्र मंगल राहु लग्न में वृष के, सूर्य बुध शुक्र धन भाव में मिथुन के, शनि तृतीय भाव में कर्क का, गुरु छठे भाव में तुला का एवं केतु सप्तम भाव में वृश्चिक का है। अष्टक वर्ग के समस्त उदाहरणों में इसी पत्रिका का प्रयोग किया गया है। सर्व प्रथम सूर्याष्टक वर्ग से लेकर लग्नाष्टक एवं सर्वाष्टक वर्ग बना रहे हैं। जो नीचे दिया है।

उदाहरण कुंडली
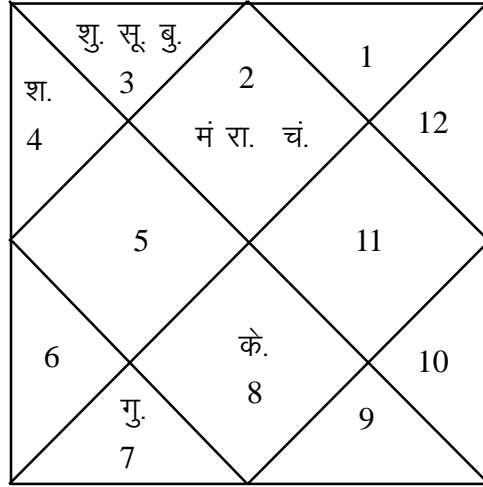
सूर्याष्टक वर्ग की रेखाएं

<table>
<tr><th>राशि</th><th>ग्रह</th><th>सू.</th><th>चं.</th><th>मं.</th><th>बु.</th><th>गु.</th><th>शु.</th><th>श.</th><th>ल.</th><th>योग</th></tr>
<tr><td>मेष</td><td></td><td>|</td><td>0</td><td>0</td><td>|</td><td>0</td><td>0</td><td>|</td><td>|</td><td>4</td></tr>
<tr><td>वृष</td><td>चं.मं.ल.</td><td>0</td><td>0</td><td>|</td><td>|</td><td>0</td><td>|</td><td>|</td><td>0</td><td>4</td></tr>
<tr><td>मिथुन</td><td>सू.बु.शु.</td><td>|</td><td>0</td><td>|</td><td>0</td><td>|</td><td>0</td><td>0</td><td>0</td><td>3</td></tr>
<tr><td>कर्क</td><td>श.</td><td>|</td><td>|</td><td>0</td><td>0</td><td>0</td><td>0</td><td>|</td><td>|</td><td>4</td></tr>
<tr><td>सिंह</td><td></td><td>0</td><td>0</td><td>|</td><td>|</td><td>|</td><td>0</td><td>|</td><td>|</td><td>5</td></tr>
<tr><td>कन्या</td><td></td><td>|</td><td>0</td><td>0</td><td>0</td><td>0</td><td>0</td><td>0</td><td>0</td><td>1</td></tr>
<tr><td>तुला</td><td>गु.</td><td>0</td><td>|</td><td>0</td><td>|</td><td>0</td><td>0</td><td>|</td><td>|</td><td>4</td></tr>
<tr><td>वृश्चिक</td><td></td><td>0</td><td>0</td><td>|</td><td>|</td><td>0</td><td>|</td><td>0</td><td>0</td><td>3</td></tr>
<tr><td>धनु</td><td></td><td>|</td><td>0</td><td>|</td><td>0</td><td>0</td><td>|</td><td>0</td><td>0</td><td>3</td></tr>
<tr><td>मकर</td><td></td><td>|</td><td>0</td><td>|</td><td>0</td><td>0</td><td>0</td><td>|</td><td>0</td><td>3</td></tr>
<tr><td>कुंभ</td><td></td><td>|</td><td>|</td><td>|</td><td>|</td><td>|</td><td>0</td><td>|</td><td>|</td><td>7</td></tr>
<tr><td>मीन</td><td></td><td>|</td><td>|</td><td>|</td><td>|</td><td>|</td><td>0</td><td>|</td><td>|</td><td>7</td></tr>
<tr><td>योग</td><td></td><td>8</td><td>4</td><td>8</td><td>7</td><td>4</td><td>3</td><td>8</td><td>6</td><td>48</td></tr>
</table>

सूर्याष्टक वर्ग उदाहरण कुण्डली
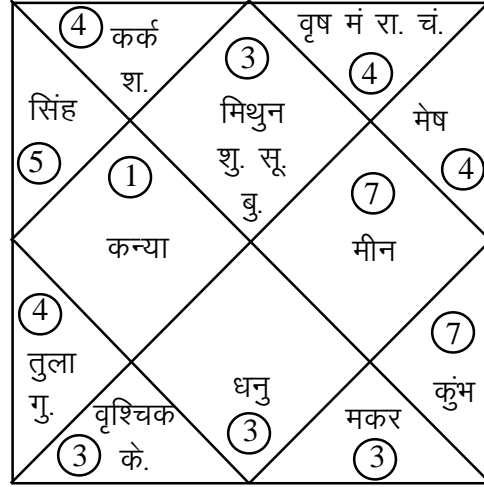
चन्द्राष्टक वर्ग

चन्द्राष्टक वर्ग की रेखाएं

राशि	ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.	योग
मेष		।	0	0	।	।	।	0	0	4
वृष	चं.मं.ल.	0	।	0	0	।	0	।	0	3
मिथुन	सू.बु.शु.	0	0	।	।	0	0	0	0	2
कर्क	श.	0	।	।	0	।	0	0	।	4
सिंह		।	0	0	।	।	।	0	0	4
कन्या		0	0	।	।	।	।	।	0	5
तुला	गु.	0	।	।	।	।	।	0	।	6
वृश्चिक		।	।	0	0	0	0	।	0	3
धनु		।	0	0	।	0	।	।	0	4
मकर		।	0	।	।	।	0	0	0	4
कुंभ		0	।	।	0	0	।	0	।	4
मीन		।	।	।	।	0	।	0	।	6
योग		6	6	7	8	7	7	4	4	49

चन्द्राष्टक वर्ग उदाहरण कुंडली
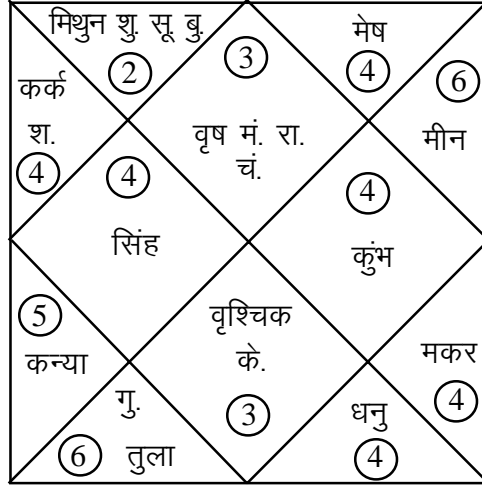
मंगलाष्टक वर्ग की रेखाएं

राशि	ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.	योग
मेष		|	0	0	|	0	|	|	0	4
वृष	चं.मं.ल.	0	0	|	0	0	|	|	|	4
मिथुन	सू.बु.शु.	0	0	|	0	0	0	0	0	|
कर्क	श.	0	|	0	0	|	0	|	|	4
सिंह		|	0	|	|	|	0	0	0	4
कन्या		0	0	0	0	|	0	0	0	|
तुला	गु.	|	|	0	|	0	0	|	|	5
वृश्चिक		|	0	|	|	0	|	0	0	4
धनु		0	0	|	0	0	0	0	0	|
मकर		0	0	0	0	0	|	|	0	2
कुंभ		0	0	|	0	0	0	|	|	3
मीन		|	|	|	0	|	0	|	|	6
योग		5	3	7	4	4	4	7	5	39

मंगलाष्टक वर्ग उदाहरण कुण्डली
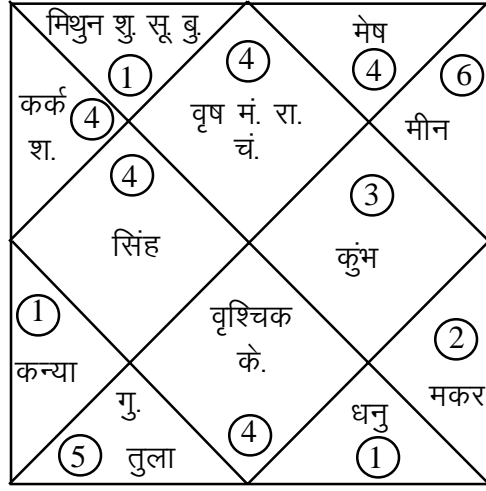
बुधाष्टक कुण्डली की रेखाएं

राशि	ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.	योग
मेष		।	0	0	।	0	।	।	0	4
वृष	चं.मं.ल.	।	0	।	।	।	0	।	।	6
मिथुन	सू.बु.शु.	0	।	।	।	0	।	0	।	5
कर्क	श.	0	0	0	0	0	।	।	0	2
सिंह		0	।	।	।	।	।	।	।	7
कन्या		0	0	0	0	।	।	0	0	2
तुला	गु.	।	।	0	।	0	।	।	।	6
वृश्चिक		।	0	।	।	0	0	0	0	3
धनु		0	1	।	0	0	0	0	।	3
मकर		0	0	।	0	0	।	।	0	3
कुंभ		1	।	।	।	0	।	।	।	7
मीन		0	।	।	।	1	0	।	।	6
योग		5	6	8	8	4	8	8	7	54

बुधाष्टक वर्ग उदाहरण कुण्डली
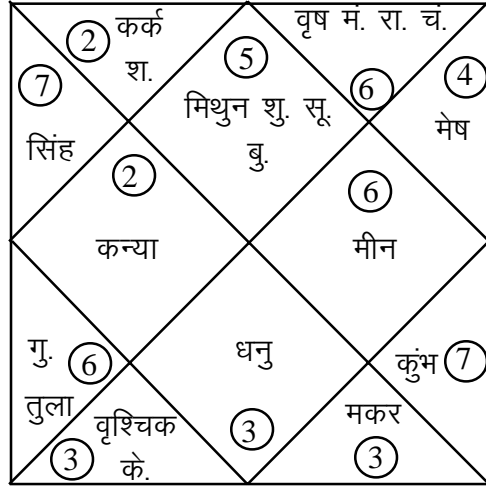
गुरुअष्टक वर्ग की रेखाएं

राशि	ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.	योग
मेष		।	0	0	।	।	।	0	0	4
वृष	चं.मं.ल.	0	0	।	0	।	0	0	।	3
मिथुन	सू.बु.शु.	।	।	।	।	0	0	।	।	6
कर्क	श.	।	0	0	।	।	।	0	0	4
सिंह		।	0	।	0	।	0	0	।	4
कन्या		।	1	0	।	0	0	।	।	5
तुला	गु.	0	0	0	।	।	।	0	।	4
वृश्चिक		0	।	।	।	।	।	।	।	7
धनु		।	0	।	0	।	0	।	0	4
मकर		।	।	0	0	।	0	0	।	4
कुंभ		।	0	।	।	0	।	0	।	5
मीन		।	।	।	।	0	।	0	।	6
योग		9	5	7	8	8	6	4	9	56

गुरु अष्टक वर्ग उदाहरण कुण्डली
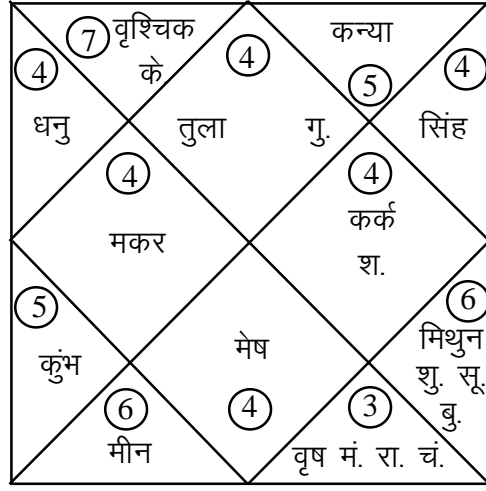
शुक्राष्टक वर्ग की रेखाएं

राशि	ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.	योग
मेष		।	।	।	।	0	।	।	0	6
वृष	चं.मं.ल.	।	।	0	0	।	0	।	।	5
मिथुन	सू.बु.शु.	0	।	0	0	।	।	0	।	4
कर्क	श.	0	।	।	0	।	।	0	।	5
सिंह		0	।	0	।	।	।	0	।	5
कन्या		0	।	।	0	0	।	।	।	5
तुला	गु.	0	0	।	।	0	।	।	0	4
वृश्चिक		0	0	0	।	0	0	।	0	2
धनु		0	।	0	0	0	0	0	।	2
मकर		।	।	।	0	0	।	0	।	5
कुंभ		0	0	0	।	।	।	।	0	4
मीन		0	।	।	0	0	।	।	।	5
योग		3	9	6	5	5	9	7	8	52

शुक्राष्टक वर्ग उदाहरण कुण्डली
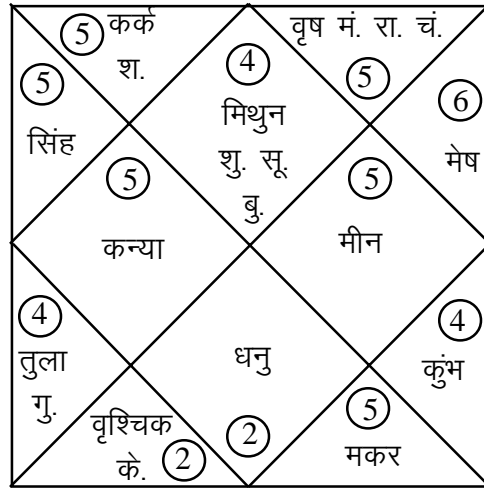
शन्याष्टक वर्ग की रेखाएं

राशि	ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.	योग
मेष		।	0	।	।	0	।	0	0	4
वृष	चं.मं.ल.	0	0	0	।	0	।	।	।	4
मिथुन	सू.बु.शु.	।	0	0	0	0	0	0	0	1
कर्क	श.	।	।	।	0	0	0	0	।	4
सिंह		0	0	0	0	।	0	0	।	2
कन्या		।	0	।	0	।	0	।	0	4
तुला	गु.	0	।	।	0	0	0	0	।	3
वृश्चिक		0	0	0	।	0	।	।	0	3
धनु		।	0	0	0	0	0	।	0	2
मकर		।	0	0	।	0	0	0	0	2
कुंभ		0	0	।	।	।	0	0	।	4
मीन		।	।	।	।	।	0	0	।	6
योग		7	3	6	6	4	3	4	6	39

शन्याष्टक वर्ग उदाहरण कुण्डली
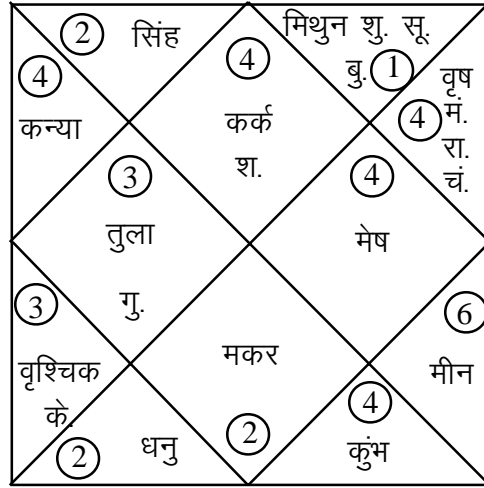
लग्नाष्टक वर्ग की रेखाएं

राशि	ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.	योग
मेष		।	0	0	।	।	।	।	0	5
वृष	चं.मं.ल.	।	0	।	0	0	0	।	0	3
मिथुन	सू.बु.शु.	0	0	0	।	।	।	0	0	3
कर्क	श.	0	।	।	।	।	।	।	।	7
सिंह		।	0	0	0	।	।	0	0	3
कन्या		।	0	0	।	0	।	।	0	4
तुला	गु.	0	।	।	0	।	।	।	।	6
वृश्चिक		।	0	0	।	।	0	0	0	3
धनु		0	0	0	0	0	0	।	0	1
मकर		0	0	0	।	।	।	0	0	3
कुंभ		0	।	।	0	।	।	0	।	5
मीन		।	।	।	।	।	0	0	।	6
योग		6	4	5	7	9	8	6	4	49

लग्नाष्टक वर्ग उदाहरण कुण्डली
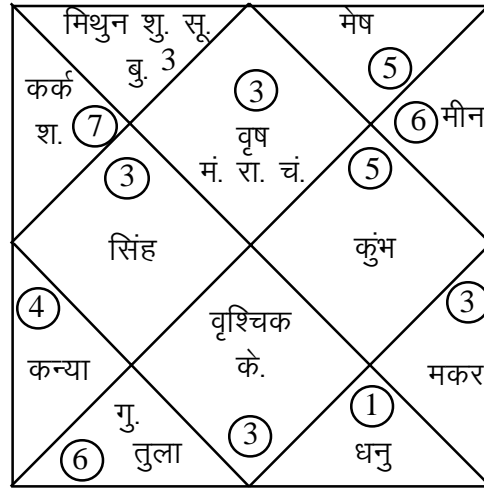
सूर्य से लेकर लग्न तक के समस्त अष्टक वर्गों को मिलाकर सर्वाष्टक वर्ग बनाया जाता है। सर्वाष्टक वर्ग में सूर्य चन्द्र आदि ग्रहों ने जो रेखाएं दी हैं वह प्रत्येक राशि अनुसार एकत्रित करके सर्वाष्टक वर्ग बनाया जाता है। जैसे मेष में सूर्याष्टक वर्ग में 4 रेखाएं हैं, चन्द्राष्टक वर्ग में 4, मंगलाष्टक वर्ग में 4, बुधाष्टक वर्ग में 4, गुरुअष्टक वर्ग में 4, शुक्र अष्टक वर्ग में 6, शनि अष्टक वर्ग में 4 एवं लग्न अष्टक वर्ग में 5 रेखाएं हैं। जिनका कुल योग 35 सर्वाष्टक वर्ग की मेष राशि और बारहवें भाव में जाएगा। सर्वाष्टक वर्ग की लग्न वही रहेगी जो जन्म की है तथा ग्रह भी जन्म के अनुसार स्थापित किए जाएंगे। नीचे सर्वाष्टक वर्ग दिया जा रहा है।

सर्वाष्टक वर्ग उदाहरण कुंडली

राशि	ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.	योग
मेष		4	4	4	4	4	6	4	5	35
वृष	ल.चं.मं.	4	3	4	6	3	5	4	3	32
मिथुन	सू.बु.शु.	3	2	1	5	6	4	1	3	25
कर्क	श.	4	4	4	2	4	5	4	7	34
सिंह		5	4	4	7	4	5	2	3	34
कन्या		1	5	1	2	5	5	4	4	27
तुला	गु.	4	6	5	6	4	4	3	6	38
वृश्चिक		3	3	4	3	7	2	3	3	28
धनु		3	4	1	3	4	2	2	1	20
मकर		3	4	2	3	4	5	2	3	26
कुंभ		7	4	3	7	5	4	4	5	39
मीन		7	6	6	6	6	5	6	6	48
योग		48	49	39	54	56	52	39	49	386

सर्वाष्टक वर्ग उदाहरण कुण्डली
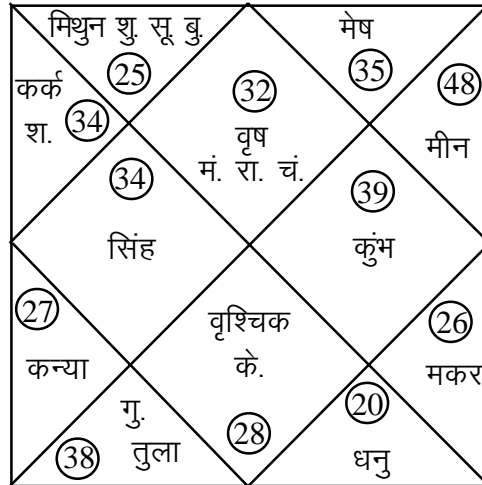
रेखा फल

अष्टक वर्ग के फलादेश में इन रेखाओं का अत्यधिक महत्व है। जितनी अधिक रेखाएं होंगी फल भी उतना अच्छा होगा। चार रेखा पर फल समान है। चार से कम अशुभ और चार से जितनी अधिक रेखाएं बढ़ती जाएंगी ग्रह के फल देने की शुभता में बढ़ोत्तरी होती जाएगी। गोचर में भी ग्रह जब अधिक रेखा वाले स्थान पर आएगा तब शुभ फल अधिक देगा और न्यून रेखा पर अशुभ फल ज्यादा करेगा। रेखाओं का फल निम्नानुसार है।

रेखा	फल
एक रेखा	कष्टप्रद
दो रेखा	धन हानि
तीन रेखा	तनाव एवं क्लेश
चार रेखा	सम (न शुभ न अशुभ)
पाँच रेखा	सर्वदा सुख
छह रेखा	धन लाभ
सात रेखा	सम्पत्ति वृद्धि या लाभ
आठ रेखा	समस्त प्रकार का सुख

उदाहरण पत्रिका के सूर्याष्टक वर्ग में कुम्भ एवं मीन में सात रेखाएं हैं, जिसका फल सम्पत्ति वृद्धि या लाभ है। अतः जब–जब सूर्य कुम्भ एवं मीन राशि में गोचर में भ्रमण करे तब–तब नये कार्य करना इस जातक के लिए लाभ दायक रहेगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के गोचर भ्रमण करते समय रेखाओं की संख्या के अनुसार फलादेश करना चाहिए। नीचे उदाहरण पत्रिका के सभी अष्टक वर्गों की रेखाओं के फल दे रहे हैं।

सूर्याष्टक वर्ग रेखा फल

राशि	रेखा योग	फल
मेष	4	सम
वृष	4	सम
मिथुन	3	तनाव एवं क्लेश
कर्क	4	सम
सिंह	5	सर्वदा सुख
कन्या	1	कष्टप्रद
तुला	4	सम
वृश्चिक	3	तनाव एवं क्लेश
धनु	3	तनाव एवं क्लेश
मकर	3	तनाव एवं क्लेश
कुम्भ	7	सम्पत्ति वृद्धि या लाभ
मीन	7	सम्पत्ति वृद्धि या लाभ

चन्द्राष्टक वर्ग रेखा फल

राशि	रेखा योग	फल
मेष	4	सम
वृष	3	तनाव एवं क्लेश
मिथुन	2	धन हानि
कर्क	4	सम
सिंह	4	सम
कन्या	5	सर्वदा सुख
तुला	6	धन लाभ
वृश्चिक	3	तनाव एवं क्लेश
धनु	4	सम
मकर	4	सम
कुम्भ	4	सम
मीन	6	धन लाभ

मंगलाष्टक वर्ग रेखा फल

राशि	रेखा योग	फल
मेष	4	सम
वृष	4	सम
मिथुन	1	कष्टप्रद
कर्क	4	सम
सिंह	4	सम
कन्या	1	कष्टप्रद
तुला	5	सर्वदा सुख
वृश्चिक	4	सम
धनु	1	कष्टप्रद
मकर	2	धन हानि
कुम्भ	3	तनाव एवं क्लेश
मीन	6	धनलाभ

बुधाष्टक वर्ग रेखा फल

राशि	रेखा योग	फल
मेष	4	सम
वृष	6	धन लाभ
मिथुन	5	सर्वदा सुख
कर्क	2	धन हानि
सिंह	7	सम्पत्ति वृद्धि या लाभ
कन्या	2	धन हानि
तुला	6	धन लाभ
वृश्चिक	3	तनाव एवं क्लेश
धनु	3	तनाव एवं क्लेश
मकर	3	तनाव एवं क्लेश
कुम्भ	7	सम्पत्ति वृद्धि या लाभ
मीन	6	धन लाभ

गुरु अष्टक वर्ग रेखा फल

राशि	रेखा योग	फल
मेष	4	सम
वृष	3	तनाव एवं क्लेश
मिथुन	6	धन लाभ
कर्क	4	सम
सिंह	4	सम
कन्या	5	सर्वदा सुख
तुला	4	सम
वृश्चिक	7	सम्पत्ति वृद्धि या लाभ
धनु	4	सम
मकर	4	सम
कुम्भ	5	सर्वदा सुख
मीन	6	धन लाभ

शुक्राष्टक वर्ग रेखा फल

राशि	रेखा योग	फल
मेष	6	धन लाभ
वृष	5	सर्वदा सुख
मिथुन	4	सम
कर्क	5	सर्वदा सुख
सिंह	5	सर्वदा सुख
कन्या	5	सर्वदा सुख
तुला	4	सम
वृश्चिक	2	धन हानि
धनु	2	धन हानि
मकर	5	सर्वदा सुख
कुम्भ	4	सम
मीन	5	सर्वदा सुख

शन्याष्टक वर्ग रेखा फल

राशि	रेखा योग	फल
मेष	4	सम
वृष	4	सम
मिथुन	1	कष्टप्रद
कर्क	4	सम
सिंह	2	धन हानि
कन्या	4	सम
तुला	3	तनाव एवं क्लेश
वृश्चिक	3	तनाव एवं क्लेश
धनु	2	धन हानि
मकर	2	धन हानि
कुम्भ	4	सम
मीन	6	धन लाभ

लग्नाष्टक वर्ग रेखा फल

राशि	रेखा योग	फल
मेष	5	सर्वदा सुख
वृष	3	तनाव एवं क्लेश
मिथुन	3	तनाव एवं क्लेश
कर्क	7	सम्पत्ति वृद्धि या लाभ
सिंह	3	तनाव एवं क्लेश
कन्या	4	सम
तुला	6	लन लाभ
वृश्चिक	3	तनाव एवं क्लेश
धनु	1	कष्ट प्रद
मकर	3	तनाव एवं क्लेश
कुम्भ	5	सर्वदा सुख
मीन	6	धन लाभ

रेखा एवं बिन्दु शोधन

रेखा या बिन्दु में से जो अधिक हो उसमें से कम को घटाइये, जो शेष बचेगा वह शोधित रेखा या बिन्दु होगा। यदि रेखाओं की संख्या अधिक होगी तो घटाने पर बचने वाली संख्या रेखा कहलाएगी और यदि बिन्दुओं की संख्या अधिक होगी तो घटाने पर बचने वाली संख्या बिन्दु कहलाएगी। किसी भी स्थान की रेखा संख्या को आठ में से घटाने पर शेष उस स्थान की बिन्दु संख्या होगी। नीचे उदाहरण पत्रिका के प्रत्येक ग्रह की रेखा एवं बिन्दुओं का शोधन कर रहे हैं।

सूर्याष्टक वर्ग का रेखा व बिन्दु शोधन

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
रेखायोग	4	4	3	4	5	1	4	3	3	3	7	7
बिन्दुयोग	4	4	5	4	3	7	4	5	5	5	1	1
शुद्धरेखा	0	0	—	0	2	—	0	—	—	—	6	6
शुद्धबिन्दु	0	0	2	0	—	6	0	2	2	2	—	—

चन्द्राष्टक वर्ग का रेखा व बिन्दु शोधन

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
रेखायोग	4	3	2	4	4	5	6	3	4	4	4	6
बिन्दुयोग	4	5	6	4	4	3	2	5	4	4	4	2
शुद्धरेखा	0	—	—	0	0	2	4	—	0	0	0	4
शुद्धबिन्दु	0	2	4	0	0	—	—	2	0	0		

मंगलाष्टक वर्ग का रेखा व बिन्दु शोधन

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
रेखायोग	4	4	1	4	4	1	5	4	1	2	3	6
बिन्दुयोग	4	4	7	4	4	7	3	4	7	6	5	2
शुद्धरेखा	0	0	—	0	0	—	2	0	—	—	—	4
शुद्धबिन्दु	0	0	6	0	0	6	—	0	6	4	2	—

बुधाष्टक वर्ग का रेखा व बिन्दु शोधन

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
रेखायोग	4	6	5	2	7	2	6	3	3	3	7	6
बिन्दुयोग	4	2	3	6	1	6	2	5	5	5	1	2
शुद्धरेखा	0	4	2	—	6	—	4	—	—	—	6	4
शुद्धबिन्दु	0	—	—	4	—	4	—	2	2	2	—	—

गुरु अष्टक वर्ग का रेखा व बिन्दु शोधन

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
रेखायोग	4	3	6	4	4	5	4	7	4	4	5	6
बिन्दुयोग	4	5	2	4	4	3	4	1	4	4	3	2
शुद्धरेखा	0	—	4	0	0	2	0	6	0	0	2	4
शुद्धबिन्दु	0	2	—	0	0	—	0	—	0	0	—	—

शुक्राष्टक वर्ग का रेखा व बिन्दु शोधन

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
रेखायोग	6	5	4	5	5	5	4	2	2	5	4	5
बिन्दुयोग	2	3	4	3	3	3	4	6	6	3	4	3
शुद्धरेखा	4	2	0	2	2	2	0	—	—	2	0	2
शुद्धबिन्दु	—	—	0	—	—	—	0	4	4	—	0	—

शन्याष्टक वर्ग का रेखा व बिन्दु शोधन

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
रेखायोग	4	4	1	4	2	4	3	3	2	2	4	6
बिन्दुयोग	4	4	7	4	6	4	5	5	6	6	4	2
शुद्धरेखा	0	0	—	0	—	0	—	—	—	—	0	4
शुद्धबिन्दु	0	0	6	0	4	0	2	2	4	4	0	—

लग्नाष्टक वर्ग का रेखा व बिन्दु शोधन

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
रेखायोग	5	3	3	7	3	4	6	3	1	3	5	6
बिन्दुयोग	3	5	5	1	5	4	2	5	7	5	3	2
शुद्धरेखा	2	—	—	6	—	0	4	—	—	—	2	4
शुद्धबिन्दु	—	2	2	—	2	0	—	2	6	2	—	—

रेखा फल

रेखा एवं बिन्दु का क्या फल होता है, यह बताया जा रहा है। प्राचीन विभिन्न ग्रन्थों में अलग–अलग फल मिलते हैं। जैसे वृहद् यवन जातक, जातक पारिजात, होरा रत्न, फल दीपिका, वृहद् पाराशर होरा शास्त्र, जातकादेश मार्ग चन्द्रिका, मानसागरी आदि में से सर्व मान्य प्रचलित फलादेश यहाँ ग्रहण किया है। अधिक जानकारी हेतु उपरोक्त ग्रन्थों का अध्ययन करना लाभप्रद रहेगा। आगे सभी ग्रहों की एक से लेकर आठ तक की रेखाओं और बिन्दुओं का फल दे रहे हैं।

सूर्य रेखा फल

जन्म के समय पत्रिका में सूर्याष्टक वर्ग में सूर्य एक रेखा से युक्त हो तो जातक हाथी, घोड़े, या कार, स्कूटर, मित्र, स्त्री आदि से युक्त होता है। तथा सज्जनों की संगति में रहकर समस्त रोगों से मुक्त रहता है।

सूर्य दो रेखाओं का हो तो जातक राजा का प्रिय होता है। शत्रुओं को जीतने वाला, विद्या का धनी, शांत हृदय, एवं अच्छी धन सम्पदा से युक्त तथा प्रतापी होता है।

जब सूर्य तीन रेखाओं से युक्त होता है तब जातक ऐश्वर्यशाली, धन की प्राप्ति व व्यय दोनों से युक्त तथा अच्छी संगति वाला होता है। ऐसा जातक अच्छे चरित्र से युक्त, इर्ष्यालु शत्रुओं द्वारा पीड़ित, एकान्त में वास करने वाला एवं सोना, पुत्र, धनादि से युक्त होता है।

यदि सूर्य चार रेखाओं से युक्त हो तो जातक सुन्दर स्वभाव वाला सभी मनुष्यों और राजाओं द्वारा सम्मानित, सुशील, धर्म युक्त होता है। परन्तु चार रेखाओं वाला सूर्य मनुष्य को स्त्री परायण भी बनाता है। अर्थात ऐसा व्यक्ति स्त्रीयों से पराजित होकर स्त्री के अधीन रहता है या अत्यन्त स्त्री प्रेमी होता है।

जब सूर्य पांच रेखाओं से युक्त होता है, तब जातक को गाय, भैंस, ऊंट या दुपहिया, चार पहिया वाहन का लाभ, अपने कुल में उच्चता, देव व ब्राह्मणों का भक्त तथा उत्तम पुरुषों की संगति में रहने वाला बनाता है।

यही सूर्य जब छह रेखाओं से युक्त होता है तब जातक शत्रुओं का नाश करने वाला, धन एवं लक्ष्मी से सम्पन्न, मनुष्यों में श्रेष्ठ, अत्यन्त वैभव से युक्त गृह वाला, देवताओं और गुरुजनों का भक्त तथा उत्तम धन–सम्पत्ति वाला होता है।

यहाँ पर वृद्धयवन जातक के अनुसार छह रेखाओं से युक्त सूर्य हो तो मनुष्य सब प्रकार के ऐश्वर्यो से युक्त होता है। लक्ष्मी का आशय यह है कि व्यक्ति के पास अच्छे स्त्रोतों से सम्मानपूर्वक कमाया गया धन खूब होगा तथा लोगों में उसका आदरणीय स्थान होगा। समाज में ऐसा व्यक्ति अग्रगण्य होता है। धन सम्पत्ति होने के साथ साथ वह अपनी सम्पदाओं का उपयोग उत्तम धार्मिक परोपकारादि कार्यो में करेगा।

सूर्य सात रेखाओं का होने पर आय उत्तम होती है। ऐसा जातक तीक्ष्ण स्वभाव व स्वरूप वाले देवताओं जैसे शंकर, भैरव, हनुमान आदि का भक्त होता है। वह शिल्प व विज्ञान का विशेषज्ञ एवं प्रभुता संपन्न और उदार हृदय का होता है। वृद्धयवन जातक ने भी ऐसा ही फल माना है। प्रभुता सम्पन्न होने के कारण उस व्यक्ति का स्थान समाज में आदरणीय व प्रभावी होना चाहिए। उग्र देवताओं का भक्त होकर भी वह संसार के कल्याणार्थ ही प्रयत्न करेगा, ऐसा अर्थ उसके उदार हृदय विशेषण से प्रतिभासित हो रहा है।

सूर्य आठ रेखाओं से युक्त हो तो व्यक्ति अपने विपक्षियों व शत्रुओं का समूल नाश करने की शक्ति रखता है। वह धन व पुत्रादिक से युक्त होता है। ऐसा व्यक्ति त्याग एवं परोपकार से होने वाले क्लेश को सहन करने वाला और महान व सदगुणों से युक्त होता है। वह बुद्ध भगवान् का भक्त और विख्यात होता है।

सूर्य बिन्दु फल

जब सूर्य एक बिन्दु से युक्त होता है तब ऐसा जातक पराई स्त्री में प्रीति रखने वाला, विवेक रहित अर्थात भले बुरे में भेद न समझने वाला, कृतघ्न अर्थात किए हुए उपकार को भूलने वाला, अहसान फरामोश, दुष्ट स्वभाव का, भंयकर रोग से युक्त, पापी, दुर्बल और दुःसाहसी अर्थात् लोगों को अपने बल व पदवी से आतंकित करने वाला होता है।

सूर्य दो बिन्दुओं से युक्त हो तब व्यक्ति धन–धान्य से रहित, कृतघ्न, मूर्ख, बुरी संगति में रहने वाला, सिर व मुंह के रोगों से पीड़ित, पित्त एवं लम्बी अवधि तक रहने वाले बुखार से पीड़ित होता है।

सूर्य तीन बिन्दुओं से युक्त हो तब धन धान्य व पुत्रादिकों से रहित, अन्यायी, बुरे काम करने वाला, बहुत से शत्रुओं से युक्त तथा सदा घबराया हुआ, दबा हुआ घमण्डी होता है।

सूर्य चार बिन्दुओं से युक्त हो तो मनुष्यों से पराजित या अपमानित, स्वार्थ साधन में लगा हुआ, प्रियजनों व मित्रों से रहित, नगर में निवास करने वाला तथा पराई स्त्रियों में अनुरक्त या वेश्यागामी होता है।

सूर्य पांच बिन्दुओं से युक्त हो तो जातक दरिद्रता से अथवा धन से अथवा सुख से सदा पीड़ित रहता है। ऐसा जातक अभागा, दीनतापूर्ण वचन बोलने वाला, निष्ठुर स्वभाव का एवं नपुसंक होने की संभावना रहती है।

सूर्य छह बिन्दुओं से युक्त हो तो जातक अपने विरोधियों से पराजित होता है। ऐसा व्यक्ति सच्चाई का त्याग करने वाला, वेद आदि धर्म से रहित, अपने कुल की मान मर्यादा को मिटाने वाला, मलिन, चोर कपटी और धोखेबाज होता है।

सूर्य सात बिन्दुओं से युक्त हो तो जातक छल प्रपंच से युक्त, रोगों से घिरा हुआ, और दूसरों के स्त्री व पुत्रादि का लालच रखने वाला, पराए धन का लोभी, निष्ठुर स्वभाव का चंचल, धन से हीन तथा निर्लज्ज होता है।

सूर्य आठ बिन्दुओं से युक्त हो तो जातक बहुत अधिक पाप करने वाला, दुष्ट स्वभाव का, प्रियजनों एवं मित्रों से रहित, सदा दुःखी रहने वाला, पराई स्त्री में आसक्त और निकृष्ट होता है।

चन्द्र रेखा फल

चन्द्र एक रेखा से युक्त हो अर्थात् जन्म समय चन्द्र एक रेखा से युक्त राशि में स्थित हो तो मनुष्य तीर्थो में निवास करने वाला सब व्रतों को मानने वाला, गुरुओं व ब्राह्मणों का भक्त, राजाओं का प्रिय और स्वभाव से सज्जन होता है।

चन्द्र दो रेखाअें से युक्त हो तो जातक हाथी, घोड़े जैसे मूल्यवान् वाहनों से युक्त आधुनिक युग में कार, स्कूटर से युक्त तथा दान करने वाला होता है। इसी प्रकार वह अत्यन्त सुखी, भय से रहित, मूल्यवान् रत्नों तथा मोतियों से युक्त, स्नेहपूर्ण स्वभाव वाला तथा शान्त चित्त का होता है।

चन्द्र तीन रेखाओं से युक्त हो तो जातक उत्तम लक्ष्मी से युक्त, समस्त गुणों से युक्त, विनीत, बन्धु–बांधवों द्वारा मान्य, बहुत पुण्य करने वाला साथ ही जादू टोना, मायाजाल आदि को जानने वाला होता है।

चन्द्र चार रेखाओं से युक्त हो तो जातक पुत्रों सुख युक्त, मान–सम्मान करने वाला, प्रधान पुरुष, प्रसिद्ध, अनेक प्रकार की सम्पदाओं से युक्त, तालाब, कूएं, भवन आदि बनवाने में रुचि लेने वाला होता है।

चन्द्र पांच रेखाओं से युक्त हो तो जातक विद्या से विहीन अर्थात स्कूल की शिक्षा कम होते हुए भी विवके बुद्धि से सम्पन्न, अति चतुर विवके बुद्धि से सम्पन्न, अति चतुर,खुब सहन शक्ति वाला, बहुत भोग विलास से युक्त होता है। अतिथियों का सत्कार करने वाली सन्तान से ऐसा व्यक्ति युक्त होगा। अर्थात् उसकी सन्तान सम्पन्न, चतुर एवं गुणी होगी।

चन्द्र छह रेखाओं से युक्त हो तो जातक मनोनुकूल स्त्री, पुत्र तथा धन से युक्त, विनय से सम्पन्न, मनोहर शरीर वाला, वेदों का एवं वेदों के छह अंगों का जानकार, राजाओं द्वारा सम्मानित, शान्ति से युक्त, काम व क्रोधादि विकारों को नियंत्रण में रखने वाला तथा सम्मानीय पुत्रों का पिता होता है।

चन्द्र सात रेखाओं से युक्त हो तो जातक की स्त्री बहुत सुन्दर होती है। वह स्वयं भी सुन्दर स्वभाव एवं सुन्दर मुख वाला विनम्र, तेजस्वी, व्रत उपवास की विधि जानने वाला होता है।

चन्द्र आठ रेखाओं से युक्त हो तो जातक विद्या से सम्पन्न, ब्राह्मणों का प्रिय, सत्य बोलने वाला, सुख भोगने वाला, तेजस्वी, अतिथियों का सत्कार कर्त्ता, स्वर्ण से युक्त व प्रतिभा सम्पन्न होता है।

चन्द्र बिन्दु फल

चन्द्र जब एक बिन्दु से युक्त राशि में स्थित होता है तब जातक झूठ बोलने वाला, पाप कर्म करने वाला, दरिद्र, परिवार द्वारा तिरस्कृत, दुर्बल एवं रोग युक्त होता है।

चन्द्र तीन बिन्दुओं से युक्त हो तो जातक कफ और वायु सम्बन्धित रोगों से पीड़ित होता है। ऐसा व्यक्ति भय से युक्त रहता है। राजा से दुःखी और उग्र रोगों से पीड़ित होता है।

चन्द्र चार बिन्दुओं से युक्त हो तो जातक सुखों से वंचित, दुर्जन स्वभाव वाला, सत्य का विरोधी, दुर्भाग्य शाली, दुष्ट पुरुषों के साथ संबंध रखने वाला, बहुत से रोगों से युक्त होता है। चार रेखाओं के साथ चार बिन्दु होते हैं, अतः शुभ व अशुभ फल समान हो जाने से उक्त अशुभ फल को प्रधान तथा चार रेखा फल को द्वितीय मानना चाहिए।

चन्द्र पांच बिन्दुओं से युक्त हो तो जातक मुसीबतों का मारा हुआ, बहुत से शत्रुओं से पराभूत, राज सम्मान से वर्जित, गरीब तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

चन्द्र छह बिन्दुओं से युक्त हो तो जातक शत्रुओं से पराजित, सम्मान से रहित, राजा से पीड़ित, विदेश में रोजगार करने वाला, कृतघ्न, स्त्री पुत्र वाहनादि के सुख से वंचित होता है।

चन्द्र सात बिन्दुओं से युक्त हो तो जातक अत्यन्त डरपोक स्वभाव वाला, बहुत क्रोधी, बहुत वैर भाव रखने वाला, निर्दयी, पेट के बहुत से रोगों से पीड़ित, चोर एवं निन्दित कार्य करने वाला होता है।

चन्द्र आठ बिन्दुओं से युक्त हो तो जातक प्रियजनों से वियुक्त, धन की पीड़ा वाला, दरिद्र, बहुत डरपोक, धन गंवाने वाला, अनिष्ट फल वाला, शोकादि से पीड़ित अत्यन्त अरिष्ट फल भुगतने वाला होता है।

मंगल रेखा फल

जन्म समय मंगल एक रेखा से युक्त हो अर्थात् एक रेखा युक्त राशि में स्थित हो तो मनुष्य के यहां पशुधन या वाहन की वृद्धि होती है। सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करते हुए उसे धन व भूमि आदि का सुख प्राप्त होता है। वह अनेक प्रकार के अन्न तथा पेय पदार्थों से युक्त भोगों का तथा अपने पूर्वजों से प्राप्त किए गए सुख साधनों का पूर्ण भोग प्राप्त करता है।

मंगल दो रेखाओं से युक्त राशि में हो तो जातक बहुत लोकप्रिय होता है। उसकी बुद्धि तीव्र होती है एवं उसके शत्रु पराजित होते हैं। उसके स्त्री पुत्रों की वृद्धि होती है। ऐसा मनुष्य निरोग शरीर वाला व महान् होता है।

मंगल तीन रेखाओं से युक्त हो तो ऐसे व्यक्ति को गधों व ऊंटों या आधुनिक युग में मालवाहक वाहनों से लाभ होता है। उसे सभी तरफ से उन्नति मिलती है। उसे सदां मनोवांछित फल मिलते रहते हैं। वह बहुत प्रतापी अर्थात् प्रभाव शाली होता है।

मंगल चार रेखाओं से युक्त हो तो व्यक्ति को अनेक प्रकार का लाभ होता है। वह राजाओं से सम्मानित तथा राजप्रिय एवं विधिवेत्ता (भाग्य अथवा कानून को जानने वाला) तथा ब्राह्मणों और देवताओं का भक्त, सुखी, धनी एवं सौभाग्यशाली होता है।

मंगल पांच रेखाओं से युक्त राशि में हो तो मनुष्य को सोने से लाभ होता है। उसके समस्त रोगों का नाश होता है। धन व पुत्रों का लाभ होता है। उसे बहुत से वस्त्र व अनेक प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं।

मंगल छह रेखाओं से युक्त राशि में स्थित हो तो जातक का अपने बन्धुओं से सदा मेल रहता है। उसे सर्वोत्तम भोजन प्राप्त होता है। उसके शत्रुओं का नाश और धन व धर्म की खूब वृद्धि होती है।

मंगल सात रेखाओं से युक्त राशि में स्थित हो तो जातक शिल्प शास्त्र का ज्ञाता, विद्यावान् और राजाओं के द्वारा सम्मानित व लाभान्वित होता है। उसे सुन्दर स्त्रियों का उत्तम सुख, मनवांछित वस्तुओं की प्राप्ति तथा उत्तम वस्त्र भोजनादि मिलते हैं।

मंगल आठ रेखाओं से युक्त राशि में स्थित हो तो मनुष्य को कृषि कर्म में खूब लाभ मिलता है। वह व्यापार में भी वृद्धि को प्राप्त करता है। उसे सम्पूर्ण सुखों की प्राप्ति, ऐश्वर्य, ऊंची पदवी और उन्नति मिलती है। साथ ही वह व्यक्ति सदा सफलता प्राप्त करता है।

मंगल के बिन्दुओं का फल

जन्म समय यदि मंगल की स्थिति एक बिन्दु वाली राशि में हो तो मनुष्य दूसरों की दया पर जीता है। अतः उसे सदा धन की हानि होती रहती है। उसकी आंखों में किसी बड़े रोग का खतरा रहता है। सदा सुख का अभाव और बुद्धि का नाश होता है।

मंगल दो बिन्दुओं वाली राशि में अवस्थित हो तो शरीर में संताप, बुद्धि का नाश व मित्रों से या मित्रों की हानि होती है। उसके धन को चोर चुरा लेते हैं अथवा भयानक घाटा होता है। उसे तीव्र ज्वर सताता है एवं वह पित्त विकार तथा स्त्री शोक से पीड़ित होता है।

मंगल तीन बिन्दुओं से युक्त राशि में स्थित हो तो जातक के स्वभाव में चंचलता आती है। उसे जीवन में अपमान एवं भयंकर पीड़ा सहनी पड़ती है। उसे शत्रुओं की अधिकता, उत्कृष्ट वैर, लोगों से पराजय आदि फल मिलते हैं और वह दुष्ट जनों की संगति में रहने वाला होता है।

मंगल चार बिन्दुओं से युक्त राशि में हो तो जातक के साथ अनेक प्रकार की शत्रुता व कलह व होती है। इसी कारण उसे सदा बहुत कष्ट और हानि सहनी पड़ती है। ऐसे जातक का जुए व वेश्याओं के प्रति आर्कषण होता है।

मंगल की स्थिति पांच बिन्दुओं वाली राशि में हो तो जातक को बहुत अपनों का वियोग सहना पड़ता है। उसके जीवन में सुख की कमी और टी. बी. या अन्य असाध्य रोगों की उत्पत्ति होती है। उसे प्रिय वस्तुओं की हानि उठानी पड़ती है तथा धन, पुत्र व प्रभाव में भी हानि होती है।

मंगल छह बिन्दुओं से युक्त राशि में स्थित हो तो जातक को उत्तम लोगों की सहायता व संगति नहीं मिलती। वह व्यक्ति धन आदि के नाश से सदा दुखी रहता है। उसे सुखों की कमी और कष्ट होते रहते हैं। अतः वह सदा दरिद्र ही रहता है।

मंगल सात बिन्दुओं से युक्त राशि में हो तो जातक को ऐसे जीव–जन्तुओं से भय होता है जो बिलों में निवास करते हैं। वह विषय वासना में आसक्त, नेत्र व जीभ के रोगों से पीड़ित होता है। वह चोरों से हानि प्राप्त करता है अथवा शत्रुओं के कारण अपनी सम्पत्ति गंवा देता है।

मंगल आठ बिन्दुओं वाली राशि में स्थित हो तो मनुष्य को स्त्री की हानि होती है, और मृत्यु तुल्य कष्ट देने वाले रोग से पीड़ा होती है। उसके शरीर पर अस्त्रादिकों का प्रहार होता है। वह सर्वत्र अपमान को प्राप्त करता है। शत्रु उसे धोखा देते हैं, किन्तु उसे अपनी वृद्धावस्था में कुछ सुख एवं शान्ति प्राप्त हो जाती है।

बुध की रेखाओं का फल

यदि जन्म के समय बुध एक रेखा से युक्त राशि में स्थित हो तो जातक शत्रुओं से रहित होता है। उसके पास विद्या व विवेक पर्याप्त मात्रा में होता है। वह बहुत से मित्रों से युक्त और शील सम्पन्न होता है।

बुध दो रेखाओं से युक्त राशि में स्थित हो तो जातक देवताओं के समान निर्मल, सज्जन व अति सुन्दर होता है। वह व्यक्ति स्वभाव से निपुण और मृदु तथा बहुत मान– सम्मान पाने वाला सुरूपवान होता है।

बुध की स्थिति तीन रेखाओं वाली राशि में हो तो जातक राजसी वैभव युक्त, राजा व जनता से परम सम्मानित, सज्जन व विधान अर्थात् कानून का ज्ञाता होता है। ऐसा व्यक्ति निष्कपट वचन बोलने वाला, बहुत पुण्य कार्य करने वाला और बड़े राज्य या सम्पत्ति वाला, मनोहर शरीर का और शत्रुहन्ता होता है।

बुध चार रेखाओं से युक्त किसी राशि में स्थित हो तो जातक विधिशास्त्र का जानकार, अतिथि सत्कार करने वाला, खूब शास्त्रों का अध्ययन करने वाला, बन्धुजनों द्वारा सम्मानित, सुन्दर रूप वाला, मेधावी व व्रत उपवास आदि करने वाला होता है।

बुध पांच रेखाओं से युक्त राशि में स्थित हो तो जातक छोटे प्रदेश जनपद, ग्राम पंचायत आदि का अधिपति या पार्षद, प्रतापी एवं यशस्वी होता है। वह सदा विजयी व अन्नादि की समृद्धि से युक्त होता है। ऐसा व्यक्ति कई ग्रामों, नगरों व भूमि का मालिक होता है। अर्थात् ऐसा व्यक्ति राजतुल्य सम्पत्ति व पदवी वाला होता है।

बुध छह रेखाओं से युक्त हो तो जातक सत्य, धर्म, विद्या और विनय से युक्त होता है। वह किए गए उपकार को मानने वाला, नीतिशास्त्र का जानकार और समस्त शत्रुओं को जीतने

वाला होता है।

बुध सात रेखाओं से युक्त हो तो जातक ज्ञानी, अत्यन्त सम्पत्तिशाली, सुख से युक्त तथा तीर्थ स्थानों का आश्रम लेने वाला होता है। उसे अच्छी स्त्री की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति का स्वभाव सुन्दर होता है तथा उसे स्त्री सुख एवं चन्दनादि सुगन्धित द्रव्यों की प्राप्ति होती है। उसका शरीर सुन्दर व स्वच्छ होता है।

बुध आठ रेखाओं से युक्त हो तो जातक वस्त्रों से सुसज्जित, धन धान्य से युक्त तथा चतुष्पदों से युक्त अर्थात दुपहिया–चार पहिया वाहन से युक्त होता है। वह सर्वत्र सम्मान पाने वाला, पुत्रों व स्त्रियों के सुख से युक्त और गौरव वाला होता है।

बुध के बिन्दुओं का फल

जब बुध एक बिन्दु से युक्त राशि में स्थित होता है तब ऐसा जातक कपटी, शिक्षा से रहित तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है। वह धन व दान से रहित, दुर्जन, तथा अति पाप कर्म से युक्त होता है। वृद्ध यवन के मतानुसार ऐसा व्यक्ति उक्त दुर्गुणों के अतिरिक्त दुश्चरित्र का एवं ढोंगी होता है।

बुध दो बिन्दुओं से युक्त राशि में स्थित हो तो जातक अपने ही व्यक्तियों से वैर भाव रखने वाला, अत्यन्त दुःखी तथा कई प्रकार के रोगों से पीड़ित होता है। वह कृतघ्न, क्रूर स्वभाव वाला तथा अपने शत्रुओं से सदा भयभीत रहने वाला होता है।

तीन बिन्दुओं से युक्त बुध हो तो जातक मैला कुचेला रहने वाला अथवा नित्य स्नान न करने वाला, तेज से रहित तथा राजा से या राज्य से पीड़ा पाने वाला होता है। उसकी स्त्री एवं पुत्रों से अनबन रहती है। तथा वह सदा गन्दे वस्त्र पहनने वाला होता है।

जब बुध चार बिन्दुओं से युक्त हो तो जातक बहुत दुःखी, दूसरों के अधीन रहकर सदा सेवा करने वाला तथा दुश्चरित्र होता है। ऐसा व्यक्ति सुख से रहित जीवन बिताता है तथा विनय से रहित होता है।

बुध पांच बिन्दुओं से युक्त हो तो जातक विभिन्न रोगों से पीड़ित तथा धन गंवाने वाला होता है। वह सदा शत्रुओं से पराजित होता है। उसका स्वभाव दुष्ट होता है। और वह सुख से रहित जीवन व्यतीत करता है। वह गुरुओं व देवताओं से विमुख रहने वाला पुत्रों रहित तथा सदा दूसरों से याचना करना वाला होता है।

यदि बुध छह बिन्दुओं से युक्त हो तो सुख से रहित, पर नारियों में आसक्त, दरिद्र होता

है। उसकी बुद्धि दुष्ट विचारों से युक्त होती है और वह संसार में बदनाम होता है।

बुध आठ बिन्दुओं से युक्त हो तो जातक अधिक रजोगुणी अर्थात् काम क्रोधादि से युक्त तथा कठोर स्वभाव का होता है। ऐसे व्यक्ति पर नारिओं में अनुरक्त, शान्ति से रहित तथा जुए में आसक्त होते हैं। इसी कारण ये लोग सत्य और धन से वर्जित होते हैं।

गुरु की रेखाओं का फल

जन्म के समय यदि गुरु एक रेखा से युक्त हो तो जातक धनवान और धर्म कर्म में आसक्त होता है। वह अपने समाज में प्रधान और विनीत होता है। जातक की धर्म और ब्राह्मणों में प्रीति होती है एवं बुद्धि उत्तम होती है।

गुरु दो रेखाओं से युक्त हो तो जातक सज्जन, राज्य द्वारा सम्मानित, बुद्धिमान, धनी एवं सुखी होता है। ऐसा व्यक्ति लोगों में प्रसिद्ध और सुन्दर शरीर वाला होता है।

तीन रेखाओं से युक्त गुरु हो तो जातक खूब धन कमाने वाला, अपने सम्प्रदाय में प्रधान तथा बहुत से पुत्र–पौत्रादिकों से युक्त होता है। वह अपने कुल में प्रधान, उच्च पद पर आसीन होने वाला तथा जीव मात्र के हित में तत्पर रहता है।

चार रेखाओं से युक्त गुरु हो तो जातक अत्यन्त धन एवं सम्पत्ति से युक्त, ज्ञानी लोगों के मध्य सम्मान पाने वाला, अत्यन्त विवेकी, धार्मिक, उत्तम धन एवं बुद्धि से युक्त होता है।

पांच रेखाओं से युक्त गुरु हो तो जातक स्नेहिल स्वभाव का, पुत्रों से युक्त तथा सुबुद्धि होता है। उसका स्वभाव उत्तम और धर्म में रति रखने वाला होता है।

छह रेखाओं से युक्त गुरु हो तो जातक लोकप्रिय, वैर भावना से रहित, सभी के साथ मित्रता पूर्ण व्यवहार करने वाला होता है। वह देवताओं और गुरुजनों का प्रीति पात्र तथा अपने शत्रुओं का नाशक होता है। ऐसा व्यक्ति सम्मानित जीवन व्यतीत करता है। स्वभाव शान्त तथा गुरुजनों का समादर करने वाला विनीत होता है।

सात रेखाओं से युक्त गुरु हो तो जातक सदा अच्छी नारियों से युक्त या स्त्रियों के सम्पर्क में रहने वाला, अत्यन्त प्रसन्न, प्रियजनों से युक्त गुरु व देवताओं का भक्त, अपने परिजनों से युक्त और सुन्दर वाक्शक्ति से परिपूर्ण होता है।

आठ रेखाओं से युक्त गुरु हो तो जातक अतिथि सेवक, पृथ्वी का शासक अर्थात् अधिकारी या मुखिया, बहुत से शास्त्रों का अध्ययन करके उनमें पारंगत होता है। वह अनेक कलाओं का ज्ञाता, पण्डित अर्थात् विद्वान और बल पराक्रम से युक्त होता है।

गुरु के बिन्दुओं का फल

एक बिन्दु से युक्त गुरु राशि में हो तो जातक कई प्रकार के रोगों से पीड़ित, निर्दयी तथा अकृतज्ञ होता है। वह झूठ बोलने वाला, गन्दा रहने वाला, स्वभाव से लोभी, तथा अत्यन्त नृशंस स्वभाव वाला होता है। दुःखों से युक्त और दया रहित कुकृत्य करने वाला होता है।

दो बिन्दुओं से युक्त गुरु हो तो जातक बहरा तथा बहरेपन से उत्पन्न होने वाले अनेक दोषों से युक्त होता है। उसका स्वभाव चोरी करने वाला एवं राजपक्ष से भयभीत रहने वाला होता है। पुरुषों द्वारा उसके शरीर को कष्ट पहुंचाया जाता है तथा दूसरे पुरुषों के कारण उसके शरीर में कई रोगों का संक्रमण होता है।

तीन बिन्दुओं से युक्त गुरु हो तो जातक अत्यन्त भाग्यहीन होता है। उसका मन पराई स्त्रियों में अनुरक्त होता है और वह कृतघ्न एवं निर्धन होता है। वृद्ध यवन के मतानुसार वह आलसी तथा मित्रता के अयोग्य अर्थात् कुमित्र भी होता है।

चार बिन्दुओं से युक्त गुरु हो तो जातक के बहुत शत्रु होते हैं। उसका मन सदा उद्विग्न रहता है तथा वह मानसिक रोगी होता है। उसका स्वभाव कुटिल और शरीर में खाज खुजली जैसे रोगों से पीड़ा होती है। ऐसे व्यक्ति के पास धनादि वैभवों का अभाव बना रहता है।

पांच बिन्दुओं से युक्त गुरु हो तो जातक चोरी करने वाला तथा अनेक प्रकार के शोकों से संतप्त रहने वाला होता है। वह पराई स्त्रियों में अनुरक्त और खुजली से पीड़ित होता है। वह कष्टपूर्ण जीवन बिताता है तथा बार–बार ज्वरादि से पीड़ित होता है।

छह बिन्दुओं से युक्त गुरु हो तो जातक आकृति से बहुत दीन हीन दिखने वाला, अत्यन्त शोक से युक्त, धर्म क्रियाओं से रहित, पुत्र व स्त्री सुख में कमी तथा विदेश में जीवन बिताने वाला होता है। वह निश्चिन्त जीवन नहीं बिताता। बार–बार घर से बाहर रहता है तथा नेत्र रोगी होता है।

सात बिन्दुओं से युक्त गुरु हो तो जातक शत्रु, द्रोह के विषय में विचार करता रहता है। उसे प्लीहा, बुखार तथा हिचकी आदि रोग होते हैं। वह अपने स्वामी से अपमानित, कफ वृद्धि और तज्जनित रोगों से पीड़ित रहता है।

आठ बिन्दुओं से युक्त गुरु हो तो जातक अत्यन्त अभिमान के कारण सदा कुटिलगामी होता है। उसे राज्यपक्ष से भय होता है तथा वह अपने कुल में अत्यन्त निःसत्त्व होता है। उसे सदा रोग सताते रहते हैं एवं शरीर व मन दोनों से विकृत होता है।

शुक्र की रेखाओं का फल

एक रेखा से युक्त शुक्र हो तो जातक ऐश्वर्यों से युक्त, अपनी इन्द्रियों को वश में रखने वाला, सुन्दर शरीर, शोभायुक्त तथा दानी होता है। वह स्वभाव से कृतज्ञ, धर्मात्मा, सुशील होता है। साथ ही उसके पास अन्नादिक खाद्य पदार्थो की कभी कमी नहीं होती।

दो रेखाओं से युक्त शुक्र हो तो जातक धन धान्य से अच्छा समृद्ध होता है। वह लोकप्रिय, पुण्यात्मा और सुन्दर कान्ति वाला होता है। स्वभाव से विनीत और विधि शास्त्र का जानकार अथवा तर्कपूर्ण दृष्टि वाला होता है।

तीन रेखाओं से युक्त शुक्र हो तो जातक बहुत मेधावी अर्थात् अच्छी ग्रहण शक्ति का, अनेक आभूषणों से युक्त, धर्म में रति रखने वाला, भय रहित जीवन बिताने वाला, ब्राह्मणों एवं देवताओं का भक्त होता है।

चार रेखाओं से युक्त शुक्र हो तो जातक अत्यन्त सुखी, वैदूर्यमणि अर्थात् लहसुनिया और मोती के व्यापार से सुखी होता है। उसे धन तथा पेय पदार्थों की कमी नहीं होती। वह अत्यन्त ज्ञानवान् और चन्दनादि पदार्थों के सुख को भोगने वाला होता है।

छह रेखाओं से युक्त शुक्र हो तो जातक को समस्त विद्याओं में सिद्धि प्राप्त होती है। उसके मित्रों की संख्या विशाल होती है। वह समस्त कलाओं में निपुण, अच्छी स्त्री का सुख व धन सम्पत्ति युक्त होता है। वह विद्वान और सुन्दर शरीर सम्पन्न होता है।

सात रेखाओं से युक्त शुक्र हो तो जातक केशरादि मूल्यवान् द्रव्यों से युक्त, उत्तम सुखों से परिपूर्ण, स्त्री के सम्पर्क में आने पर धृष्ट होता है। वह राज्य, समाज से सम्मान भी प्राप्त करता है।

आठ रेखाओं से युक्त शुक्र हो तो जातक बहुत कीर्ति वाला तथा धर्मात्मा होता है। उसके शरीर की कान्ति उत्तम होती है तथा वह अनेक प्रकार के लाभों से युक्त होता है। उसके क्रिया कलाप भी सदा उत्तम होते हैं।

शुक्र के बिन्दुओं का फल

एक बिन्दु से युक्त शुक्र हो तो जातक अनेक रोगों से पीड़ित, पापी स्वभाव वाला तथा सज्जनों से दूर रहने वाला कुसंगति युक्त होता है। वह पुत्रों व धन सम्पत्ति से वर्जित तथा राज्य से पीड़ा प्राप्त करने वाला होता है।

दो बिन्दुओं से युक्त शुक्र हो तो जातक अपने कुटुम्बियों से दूर रहने वाला, अधिक इच्छाओं

से युक्त, रोगों व शत्रुओं से पीड़ित व शोक सन्तप्त होता है। उसका धन भी खूब व्यय होता है।

तीन बिन्दुओं से युक्त शुक्र हो तो जातक शत्रुओं से सदा पीड़ित होने वाला, मान सम्मान और धन से रहित, किन्तु स्त्री से युक्त होता है। वह सदा तिरस्कृत रहने वाला, ज्वर से पीड़ित और गन्दे और निन्दित वस्त्र पहनने वाला होता है।

चार बिन्दुओं से युक्त शुक्र हो तो जातक बड़े कुटम्ब वाला तथा कुटुम्ब के खर्चों से से परेशान होता है। वह नौकर होकर दूसरों की सेवा करने वाला तथा दरिद्र होता है। धनादि से रहित होने के कारण वह शोक से संतप्त होता है।

पांच बिन्दुओं से युक्त शुक्र हो तो जातक पराजित तथा दुष्टों के सम्पर्क से धन खोने वाला होता है। वह सज्जनों व बन्धु–बान्धवों से कलह करता है, और सुख से हीन जीवन जीता है।

छह बिन्दुओं से युक्त शुक्र हो तो जातक सत्य एवं सुख से वर्जित, सब लोगों से पीड़ा पाने वाला, घर से बाहर रहने वाला होता है। वह जीवन में दूसरें से मांगता रहता है तथा प्रेमभाव से रहित स्वभाव वाला होता है।

सात बिन्दुओं से युक्त शुक्र हो तो जातक वात, कफ आदि दोषों से पीड़ित, हीन बुद्धि युक्त तथा बुरी आदतों में आसक्त होता है। वह सदा क्रूर कर्म व क्रूर चेष्टाएं करने वाला एवं कृ तघ्न होता है।

आठ बिन्दुओं से युक्त शुक्र हो तो जातक सदा चिन्तातुर रहने वाला, बहुत से पाप करने वाला तथा बड़े बड़े रोगों से पीड़ित होता है। वह शत्रुओं से युक्त, बन्धु बान्धवों द्वारा परित्यक्त दुष्ट स्वभाव वाला और कृतघ्न होता है।

शनि की रेखाओं का फल

एक रेखा से युक्त शनि हो तो जातक बहुत स्थिर स्वभाव का, समाज में सम्मानित स्थान प्राप्त, सज्जन, अथक प्रयत्न करने वाला, सुन्दर वस्त्र व आभूषण धारण करने वाला तथा अतिथियों का सत्कार करने वाला होता है।

दो रेखाओं से युक्त शनि हो तो जातक को सर्वत्र सुख मिलता है। वह बलवान् और असाध्य रोगों से रहित होता है तथा उसे शत्रु या सामान्य रोग भी नहीं सताते। अर्थात् वह शरीर व मन से पूर्ण स्वस्थ रहता है।

तीन रेखाओं से युक्त शनि हो तो जातक को पुत्र सन्तान कम होती है। वह गधे, ऊंट आदि पशुओं से युक्त या दुपहिया–चार पहिया वाहन से युक्त होता है एवं वाहन से लाभ कमाता है। उसे लोहे से भी लाभ होता है। साथ ही वह मनुष्य धन से युक्त, धर्म व विद्या से परिपूर्ण और वेद शास्त्रों को जानने वाला होता है।

चार रेखाओं से युक्त शनि हो तो जातक मनोहर, कपूरादि सुगन्धित द्रव्यों का सेवन करने वाला, पुत्रों से युक्त और खूब खाने पीने वाला होता है। वह व्यक्ति खूब धन, धर्म व हर्ष से युक्त होता है।

पांच रेखाओं से युक्त शनि हो तो जातक श्रीमान् तथा स्त्रियों का प्यारा और शत्रुओं से सर्वथा रहित होता है। वह राज्य के आश्रय से उन्नति करने वाला, सज्जन, कुलीन, निरन्तर परिश्रमी तथा सुखी होता है।

छह रेखाओं से युक्त शनि हो तो जातक अपने वचन का पालन करने वाला, अच्छी भूमि व धन को पाने वाला, राज्य द्वारा पूजित तथा अत्यन्त प्रभावशाली होता है। वह सोने व रुपये पैसे से पूर्ण समृद्ध और विधिशास्त्र का वेत्ता होता है।

सात रेखाओं से युक्त शनि हो तो जातक नायिका भेद के गुप्त रहस्यों को समझने वाला, अत्यन्त धैर्यशाली तथा बहुत नाम कमाने वाला होता है। वह कलाओं में निपुण, धन से युक्त और तीनों लोकों में प्रसिद्ध होता है। ऐसा व्यक्ति सुन्दर शरीर का स्वामी होता है।

आठ रेखाओं से युक्त शनि हो तो जातक अनेक प्रकार के चित्र विचित्र माल्याम्बर और अलंकारों से युक्त, नीति में निपुण तथा वेद विद्या विशारद होता है। साथ ही ऐसा व्यक्ति स्त्रीजनों व पुत्रों का सुख प्राप्त करता है।

शनि के बिन्दुओं का फल

एक बिन्दु से युक्त शनि हो तो जातक दीन हीन, राजा से पीड़ित और नृशंस होता है। ऐसे व्यक्ति को सामाजिक बुराई मिलती है तथा वह शरीर कष्ट प्राप्त करता है। इसके दुःखों की कोई सीमा नहीं होती।

दो बिन्दुओं से युक्त शनि हो तो जातक पक्का कजूंस, पाप पूर्ण वचन वाला, कटुभाषी तथा चंचल स्वभाव का होता है। ऐसे व्यक्ति को पेट व हड्डियों से संबंधित रोग से शारीरिक कष्ट होता है। वह अत्यन्त पाप पूर्ण स्वभाव वाला भी होता है।

तीन बिन्दुओं से युक्त शनि हो तो जातक सब लोगों से पीड़ित होने वाला, चोरी करने की

आदत वाला, दया से रहित, सत्य से रहित कर्म करने वाला तथा अधार्मिक होता है। वह भोजन अधिक करने वाला तथा क्रूर स्वभाव वाली सन्तान का पिता होता है।

चार बिन्दुओं से युक्त शनि हो तो जातक स्वभाव से अत्यन्त मलिन, वैरभाव रखने वाला, नगर से दूर भागने वाला तथा कुलधर्म और आचार से हीन होता है। वह सदा कुपात्र को दान देने वाला तथा अपने सभी कर्मों में असफल होता है।

पांच बिन्दुओं से युक्त शनि हो तो जातक ज्वर से पीड़ित, लोगों से तिरस्कार पाने वाला, कम मित्रों वाला या मित्र रहित और पर स्त्री लोलुप होता है। साथ ही इसके पुत्र भी पीड़ित रहते हैं।

छह बिन्दुओं से युक्त शनि हो तो जातक पाप कर्म में लिप्त, बहुत से शत्रुओं से युक्त तथा शोक से सन्तप्त होता है। ऐसे व्यक्ति का पर स्त्री में अनुराग होता है। यह सदा भयभीत रहता है और कान्तिरहित शरीर वाला होता है। इसके गुदा स्थान व नेत्रों में रोग उत्पन्न होते हैं।

सात बिन्दुओं से युक्त शनि हो तो जातक को मृत सन्तान उत्पन्न होती है। वह बन्धुओं से रहित तथा प्रबल शत्रुओं से युक्त होता है। वह अपने कुलधर्म से पतित, बन्धुओं द्वारा परित्यक्त एवं रोगों से पीड़ित होता है।

आठ बिन्दुओं से युक्त शनि हो तो जातक विदेश में निवास करने वाला, रोगों से पीड़ित तथा सबसे याचना करने वाला एवं दरिद्री होता है। वह पित्त विकार से उत्पन्न भयानक रोगों से पीड़ित और अत्यन्त नीच लोगों की संगति में रहने वाला होता है।

2. त्रिकोण शोधन

सर्वाष्टक वर्ग या सामुदायक अष्टक वर्ग बनाने के बाद उसका शोधन किया जाता है। यह शोधन दो प्रकार से होता है।

1. त्रिकोण शोधन 2. एकाधिपत्य शोधन

त्रिकोण शोधन

जन्म कुण्डली में चार त्रिकोण होते हैं।

1. मेष, सिंह, धनु
2. वृष, कन्या, मकर
3. मिथुन, तुला, कुंभ
4. कर्क, वृश्चिक, मीन

त्रिकोण शोधन के नियम

1. त्रिकोण की तीनों राशियों में जो रेखा संख्या हो, उसमें सबसे कम रेखा संख्या को बाकी की दो राशियों में से घटाकर शेष लिखना चाहिए।
2. यदि त्रिकोण की तीन राशियों में से किसी एक राशि की रेखा संख्या शून्य (0) हो तो तीनों राशियों में से शून्य (0) घटा देना चाहिए अर्थात रेखाए ज्यों की त्यों रहेंगी।
3. यदि तीनों ही राशियों में समान संख्याएं हों, तो त्रिकोण शोधनोपरान्त तीनों ही राशियों में शून्य शेष रहेगा।

उदाहरणार्थ– उदाहरण कुंडली का सूर्याष्टक वर्ग लें, जिसमें मेष में 4, सिंह में 5, एवं धनु में 3 रेखाएं हैं। अतः सबसे कम रेखा 3 धनु की मेष एवं सिंह की 4 एवं 5 में से घटेगी, नीचे स्पष्ट कर रहे हैं।

मे.	सिं.	ध
4	5	3
3	3	3
1	2	0

इसी प्रकार अन्य त्रिकोणों का शोधन किया जाएगा, जिसे नीचे दिया जा रहा है।

सूर्याष्टक वर्ग त्रिकोण शोधन

प्रथम त्रिकोण			द्वितीय त्रिकोण			तृतीय त्रिकोण			चतुर्थ त्रिकोण		
											मेष
सिंह	धनु		वृष	कन्या	मकर	मिथुन	तुला	कुंभ	कर्क	वृश्चिक	मीन
4	5	3	4	1	3	3	4	7	4	3	7
3	3	3	1	1	1	3	3	3	3	3	3
1	2	0	3	0	2	0	1	4	1	0	4

सूर्याष्टक वर्ग त्रिकोण शोधन के उपरान्त

राशि	मे.	वृष	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
रेखा संख्या	1	3	0	1	2	0	1	0	0	2	4	4

सूर्याष्टकवर्ग कुंडली त्रिकोण शोधनोपरान्त
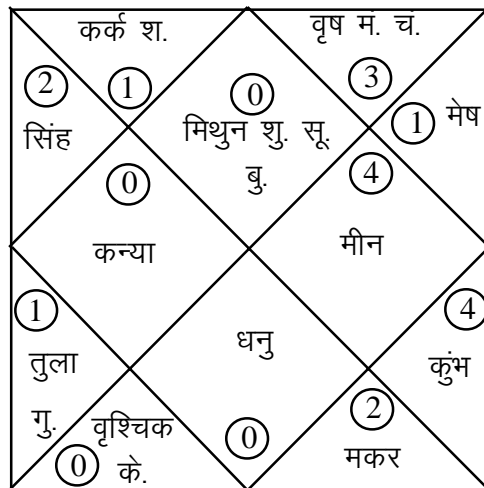
चन्द्राष्टक वर्ग त्रिकोण शोधन

प्रथम त्रिकोण			द्वितीय त्रिकोण			तृतीय त्रिकोण			चतुर्थ त्रिकोण		
मेष	सिंह	धनु	वृष	कन्या	मकर	मिथुन	तुला	कुंभ	कर्क	वृश्चिक	मीन
4	4	4	3	5	4	2	6	4	4	3	6
4	4	4	3	3	3	2	2	2	3	3	3
0	0	0	0	2	1	0	4	2	1	0	3

चन्द्राष्टक वर्ग त्रिकोण शोधन के उपरान्त

राशि	मे.	वृष	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
रेखा	0	0	0	1	0	2	4	0	0	1	2	3

चन्द्राष्टकवर्ग कुंडली त्रिकोण शोधनोपरान्त

मंगलाष्टक वर्ग त्रिकोण शोधन

प्रथम त्रिकोण			द्वितीय त्रिकोण			तृतीय त्रिकोण			चतुर्थ त्रिकोण		
मेष	सिंह	धनु	वृष	कन्या	मकर	मिथुन	तुला	कुंभ	कर्क	वृश्चिक	मीन
4	4	1	4	1	2	1	5	3	4	4	6
1	1	1	1	1	1	1	1	1	4	4	4
3	3	0	3	0	1	0	4	2	0	0	2

मंगलाष्टक वर्ग में त्रिकोण शोधन उपरान्त

राशि	मे.	वृष	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
रेखा	3	3	0	0	3	0	4	0	0	1	2	2

मंगलाष्टक वर्ग कुंडली त्रिकोण शोधनोपरान्त
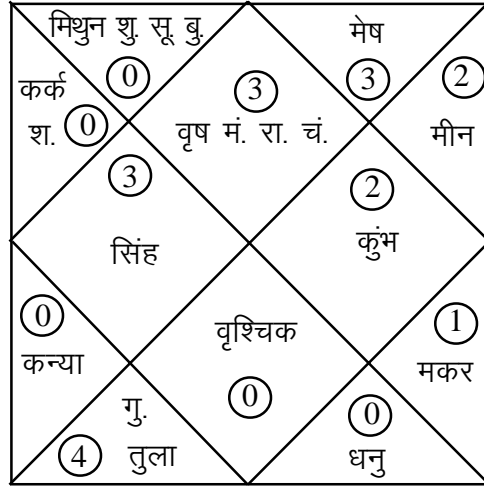
बुधाष्टक वर्ग त्रिकोण शोधन

प्रथम त्रिकोण			द्वितीय त्रिकोण			तृतीय त्रिकोण			चतुर्थ त्रिकोण		
मेष	सिंह	धनु	वृष	कन्या	मकर	मिथुन	तुला	कुंभ	कर्क	वृश्चिक	मीन
4	7	3	6	2	3	5	6	7	2	3	6
3	3	3	2	2	2	5	5	5	2	2	2
1	4	0	4	0	1	0	1	2	0	1	4

बुधाष्टक वर्ग त्रिकोण शोधन उपरान्त

राशि	मे.	वृष	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
रेखा	1	4	0	0	4	0	1	1	0	1	2	4

बुधाष्टकवर्ग कुंडली त्रिकोण शोधनोपरान्त
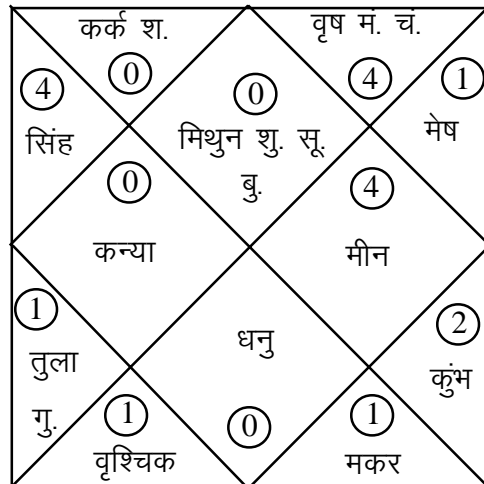
गुरुअष्टक वर्ग

प्रथम त्रिकोण			द्वितीय त्रिकोण			तृतीय त्रिकोण			चतुर्थ त्रिकोण		
मेष	सिंह	धनु	वृष	कन्या	मकर	मिथुन	तुला	कुंभ	कर्क	वृश्चिक	मीन
4	4	4	3	5	4	6	4	5	4	7	6
4	4	4	3	3	3	4	4	4	4	4	4
0	0	0	0	2	1	2	0	1	0	3	2

गुरुअष्टक वर्ग त्रिकोण शोधन उपरान्त

राशि	मे.	वृष	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
रेखा	0	0	2	0	0	2	0	3	0	1	1	2

गुरुअष्टकवर्ग कुंडली त्रिकोण शोधनोपरान्त
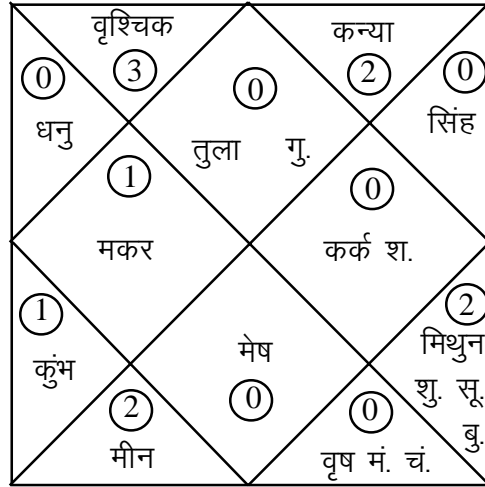
शुक्राष्टक वर्ग त्रिकोण शोधन

प्रथम त्रिकोण			द्वितीय त्रिकोण			तृतीय त्रिकोण			चतुर्थ त्रिकोण		
मेष	सिंह	धनु	वृष	कन्या	मकर	मिथुन	तुला	कुंभ	कर्क	वृश्चिक	मीन
6	5	2	5	5	5	4	4	4	5	2	5
2	2	2	5	5	5	4	4	4	2	2	2
4	3	0	0	0	0	0	0	0	3	0	3

शुक्राष्टक वर्ग त्रिकोण शोधन उपरान्त

राशि	मे.	वृष	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
रेखा	4	0	0	3	3	0	0	0	0	0	0	3

शुक्राष्टकवर्ग कुंडली त्रिकोण शोधनोपरान्त

शन्याष्टक वर्ग

शन्याष्टक वर्ग त्रिकोण शोधन

प्रथम त्रिकोण			द्वितीय त्रिकोण			तृतीय त्रिकोण			चतुर्थ त्रिकोण		
मेष	सिंह	धनु	वृष	कन्या	मकर	मिथुन	तुला	कुंभ	कर्क	वृश्चिक	मीन
4	2	2	4	4	2	1	3	4	4	3	6
2	2	2	2	2	2	1	1	1	3	3	3
2	0	0	2	2	0	0	2	3	1	0	3

शन्याष्टक वर्ग त्रिकोण शोधन उपरान्त

राशि	मे.	वृष	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
रेखा	2	2	0	1	0	2	2	0	0	0	3	3

शन्याष्टकवर्ग कुंडली त्रिकोण शोधनोपरान्त

लग्नाष्टक वर्ग

प्रथम त्रिकोण			द्वितीय त्रिकोण			तृतीय त्रिकोण			चतुर्थ त्रिकोण		
मेष	सिंह	धनु	वृष	कन्या	मकर	मिथुन	तुला	कुंभ	कर्क	वृश्चिक	मीन
5	3	1	3	4	3	3	6	5	7	3	6
1	1	1	3	3	3	3	3	3	3	3	3
4	2	0	0	1	0	0	3	2	4	0	3

लग्नाष्टक वर्ग त्रिकोण शोधन उपरान्त

राशि	मे.	वृष	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
रेखा	4	0	0	4	2	1	3	0	0	0	2	3

लग्नाष्टकवर्ग कुंडली त्रिकोण शोधनोपरान्त
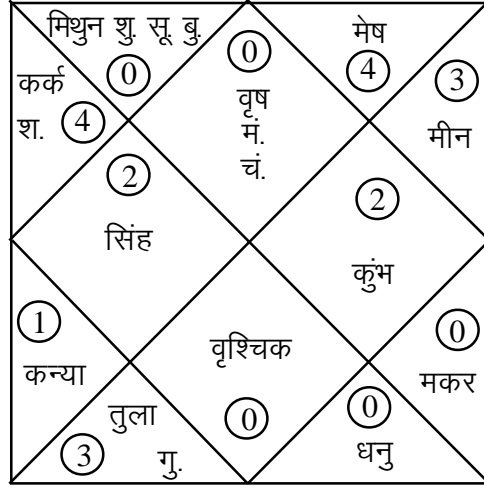
त्रिकोण शोधन के उपरान्त सर्वाष्टक वर्ग

ग्रह	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	योग
सूर्य	1	3	0	1	2	0	1	0	0	2	4	4	18
चन्द्र	0	0	0	1	0	2	4	0	0	1	2	3	13
मंगल	3	3	0	0	3	0	4	0	0	1	2	2	18
बुध	1	4	0	0	4	0	1	1	0	1	2	4	18
गुरु	0	0	2	0	0	2	0	3	0	1	1	2	11
शुक्र	4	0	0	3	3	0	0	0	0	0	0	3	13
शनि	2	2	0	1	0	2	2	0	0	0	3	3	15
लग्न	4	0	0	4	2	1	3	0	0	0	2	3	19
योग	15	12	2	10	14	7	15	4	0	6	16	24	125

त्रिकोण शोधनोपरान्त सर्वाष्टक वर्ग कुण्डली
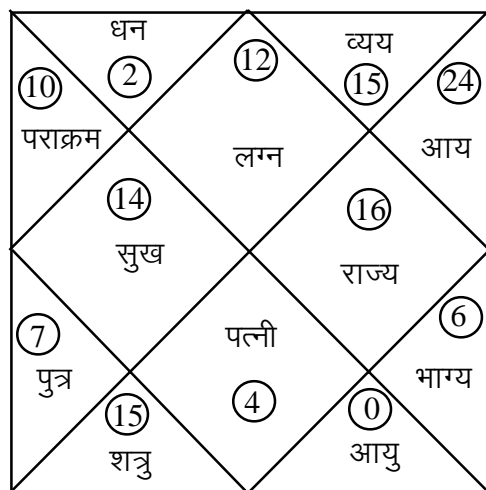
एकाधिपत्य शोधन

त्रिकोण शोधन के बाद में एकाधिपत्य शोधन किया जाता है। एकाधिपत्य शोधन का आधार ग्रह एवं उनकी राशियां होती हैं। चूकिं सूर्य एवं चन्द्रमा के अलावा अन्य सभी ग्रह दो दो राशियों के स्वामी होते हैं। अतः जो ग्रह दो राशि के स्वामी होते हैं, उन्ही का एकाधिपत्य शोधन किया जाता है। इस नियम के अनुसार कर्क एवं सिंह राशि का शोधन नहीं होता है। क्योंकि इनके स्वामी क्रमशः चन्द्र ओर सूर्य होते हैं।

आपकी जानकारी हेतु राशि एवं उनके स्वामी ग्रह की जानकारी दी जा रही है।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
स्वामी	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	शनि	गुरु

एकाधिपत्य शोधन नियम (श्रीपति सिद्धांत)

एकाधिपत्य शोधन सूर्य एवं चन्द्रमा को छोड़कर शेष पांच ग्रह मंगल, बुध गुरु, शुक्र एवं शनि का किया जाता है। चूंकि सूर्य चन्द्रमा को एक–एक राशि का स्वामित्व प्राप्त हुआ है, इसलिए इनका शोधन नहीं किया जाता, शेष पांच ग्रहों को दो दो राशियों का स्वामित्व मिला है इसलिए इनका शोधन आवश्यक हो जाता है। जैसे मंगल की राशि मेष व वृश्चिक, बुध की मिथुन व कन्या, गुरु की धनु व मीन, शुक्र की वृष व तुला और शनि की मकर व

कुंभ होती हैं। इस प्रकार इन दस राशियों का एकाधिपत्य शोधन होता है। एकाधिपत्य शोधन में निम्न प्रक्रिया अपनायी जाती है।

1. यदि दोनों राशियों में ग्रह हों तब उनका एकाधिपत्य शोधन नहीं होगा एवं त्रिकोण शोधन के उपरान्त प्राप्त रेखाएं यथावत् लिखी जाएंगी।
2. यदि दोनों राशियों में से एक में शून्य हो तथा दूसरी में रेखाएं हों तो उनका एकाधिपत्य शोधन न होकर रेखाएं व शून्य यथावत् रखा जाएगा।
3. सिंह एवं कर्क राशि का एकाधिपत्य शोधन नहीं होगा, उनमें त्रिकोण शोधन की रेखाएं व शून्य यथावत् रखा जाएगा।
4. यदि दोनों राशियों में ग्रह न हो और त्रिकोण शोधन के बाद बराबर रेखाएं हों, तो दोनों के नीचे शून्य स्थापित करें।
5. यदि दोनों राशियों में ग्रह नहीं हों और दोनों में रेखा संख्याएं कम ज्यादा हों तो अधिक रेखाओं में से कम रेखा वाली राशि को घटाना चाहिए शेष को अधिक रेखा वाली राशि में स्थपित करें, कम रेखा वाली राशि में शून्य लिखें।
6. यदि किसी ग्रह की दोनों राशियों में से किसी एक में ग्रह हो तथा दूसरी राशि में ग्रह न हो और त्रिकोण शोधन के उपरान्त जिस राशि में ग्रह हो उसकी रेखा संख्या कम हो, तो कम रेखा को अधिक में से घटाकर शेष रेखाएं ग्रह रहित राशि के नीचे लिखें तथा ग्रह युक्त राशि के नीचे उसकी त्रिकोण शोधन में आयीं सम्पूर्ण रेखाएं लिखें।
7. यदि ग्रह हीन राशि में रेखाएं कम हों, तो ग्रह रहित राशि को त्याग दिया जाता है तथा वहाँ शून्य लिखा जाता है। ग्रह युक्त राशि में रेखाएं यथावत् रहेंगी।
8. यदि दोनों राशियों में से एक में ग्रह हो तथा दोनों में त्रिकोण शोधन के बाद रेखाएं बराबर हों तो ग्रह युक्त राशि में त्रिकोण शोधन की रेखाएं यथावत् रहेंगी और ग्रह रहित राशि के नीचे शून्य (0) लिखा जाएगा।

एकाधिपत्य शोधन नियम (पाराशर सिद्धान्त)

(1) यदि एक ग्रह की दोनों राशियों में कोई ग्रह न हो तो अल्पसंख्या को अधिक संख्या में से घटाकर शेष को अधिक संख्या के नीचे रख दें और अल्पसंख्या को ज्यों का त्यों रख दें। (यह नियम श्रीपति पद्धति से भिन्न है)

(2) यदि दोनों ग्रह युक्त व ग्रह हीन हों अथवा दोनों में एक ग्रह युक्त और एक ग्रह हीन हो किन्तु त्रिकोणशोधन में किसी एक में शून्य हो तो दोनों में शून्य ही होगा। (यह नियम श्रीपति पद्धति से भिन्न है)

(3) यदि एक राशि में ग्रह हो और दूसरी राशि में ग्रह न हो और जिस राशि में ग्रह हो उसकी संख्या ग्रह हीन राशि की संख्या से अल्प हो तो ग्रह हीन राशि की संख्या को घटाकर शेष ग्रह हीन राशि के नीचे रख दें और अल्पसंख्या यथावत रख दें।

(4) यदि ग्रह युक्त राशि की संख्या अधिक हो और ग्रह हीन राशि में अल्प संख्या हो तो ग्रह हीन राशि में शून्य और ग्रह युक्त राशि की संख्या यथावत् रखनी चाहिये।

(5) यदि दोनों राशियाँ ग्रह युक्त हों तो संशोधन नहीं करना चाहिये। अर्थात दोनों जगह यथावत् अंक रहने दें।

(6) यदि एक ग्रह युक्त हो और दूसरी राशि ग्रह हीन हो तथा दोनों के अंक बराबर हो तो ग्रह हीन राशि के नीचे शून्य और ग्रह युक्त राशि के नीचे वही संख्या रहेगी।

(7) कर्क और सिंह राशि के फल ज्यों के त्यों रहते हैं, इनमें एकाधिपत्य शोधन नहीं किया जाता है।

अब नीचे फल दीपिका का मत दे रहे हैं। इसे ही इस उदाहरण कुंडली में लिया गया है।

मंत्रेश्वर (फलदीपिका) का मत

त्रिकोण शोधन के बाद मेष–वृश्चिक, वृष–तुला, मिथुन–कन्या, धनु–मीन, मकर–कुंभ, इन दो दो राशियों में निम्नलिखित 14 प्रकार की परिस्थित हो सकती है।

एक राशि	**दूसरी राशि**
ग्रह युक्त	**ग्रह युक्त**
1. समान रेखा	समान रेखा
2. अधिक रेखा	कम रेखा
3. अधिक रेखा	शून्य रेखा
4. शून्य रेखा	शून्य रेखा
ग्रह युक्त	**ग्रह हीन**
5. समान रेखा	समान रेखा
6. अधिक रेखा	कम रेखा
7. अधिक रेखा	शून्य रेखा
8. कम रेखा	अधिक रेखा
9. शून्य रेखा	अधिक रेखा
10. शून्य रेखा	शून्य रेखा

ग्रह हीन	ग्रह हीन
11. समान रेखा	समान रेखा
12. अधिक रेखा	कम रेखा
13. अधिक रेखा	शून्य रेखा
14. शून्य रेखा	शून्य रेखा

शून्य रेखा का अर्थ है कि कोई रेखा नहीं हो। एकाधिपत्य शोधन के नियम नीचे दिये जाते हैं।

(क) 1, 2, 3, 4, 7, 9, 10, 13, 14 की परिस्थिति (हालत) में कोई शोधन नहीं होता है। जैसी संख्या रेखा की है, वैसी ही रहने दी जाती है।

(ख) यदि उपर्युक्त नं. 5 या 6 की परिस्थिति हो तो दूसरी राशि (जिसमें ग्रह नहीं है) में से सब रेखा हटा दीजिये। ग्रह युक्त राशि की संख्या वेसी ही रहेगी।

(ग) यदि नं. 8 में वर्णित हालत हो तो इस दूसरी राशि में उतनी ही रेखा कर दीजिये जितनी पहली राशि (ग्रह युक्त राशि) में हो। पहली राशि (ग्रह युक्त) में जितनी संख्या थी, उतनी ही रहेगी।

(घ) यदि नं. 11 की परिस्थिति हो तो – दोनों राशियों में रेखाएं हटा कर 0 लिख दीजिये।

(ङ) यदि नं. 12 में वर्णित हालत हो तो जितनी कम रेखा वाली राशि में संख्या हो उतनी दोनों में कर दीजिये।

सूर्याष्टक वर्ग एकाधिपत्य शोधन

- मेष एवं वृश्चिक राशि दोनों में ग्रह नहीं है। मेष में एक रेखा एवं वृश्चिक में शून्य होने से परिस्थिति क्रमांक 13 के अनुसार कोई शोधन नहीं होगा और मेष में 1 रेखा तथा वृश्चिक में शून्य स्थापित होगा।

- वृष एवं तुला दोनों में ग्रह हैं। वृष में 3 रेखा तथा तुला में 1 रेखा होने से परिस्थिति क्रमांक 2 के अनुसार कोई शोधन नहीं होगा और वृष में 3 तथा तुला में 1 रेखा स्थापित करें।

- मिथुन में ग्रह है कन्या में नहीं है, मिथुन में शून्य और कन्या में भी शून्य होने से परिस्थिति क्रमांश 10 के अनुसार दोनों जगह शून्य रहेगा।

- कर्क एवं सिंह राशि का शोधन नहीं होता है, अतः कर्क की रेखा एक एवं सिंह की रेखा दो यथावत रहेगी।
- धनु में शून्य तथा मीन में 4 रेखाएं हैं, दोनों में ही ग्रह नहीं हैं। अतः परिस्थिति क्रमांक 13 के अनुसार कोई शोधन नहीं होगा और धनु में शून्य तथा मीन में 4 रेखाएं स्थापित होंगी।
- मकर एवं कुम्भ में ग्रह नहीं हैं। मकर की रेखा संख्या कुंभ से कम हैं अतः परिस्थिति क्रमांक 12 के अनुसार दोनों जगह 2–2 रेखाएं स्थापित होंगी

एकाधिपत्य शोधन के बाद सूर्याष्टक वर्ग निम्नानुसार बनेगा।

सूर्याष्टक वर्ग एकाधिपत्य शोधन उपरान्त

राशि	मे.	वृष	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
रेखा संख्या	1	3	0	1	2	0	1	0	0	2	2	4

सूर्याष्टक वर्ग एकाधिपत्य शोधन कुंडली
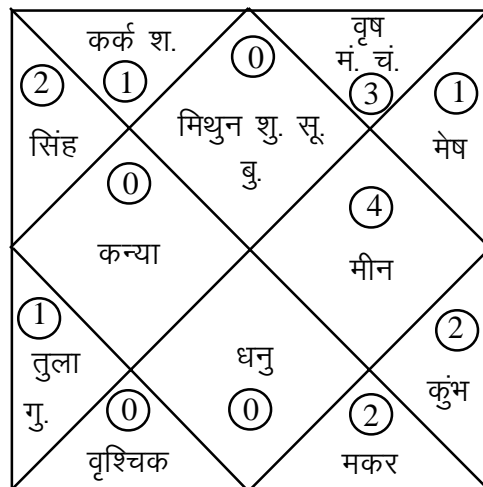
चन्द्राष्टक वर्ग

- मेष–वृश्चिक दोनों ही ग्रह रहित एवं दोनों में शून्य होने से क्रमांक 14 के अनुसार दोनों स्थानों में शून्य रहेगा।
- वृष तुला दोनों में ग्रह हैं, वृष में शून्य तुला में 4 रेखा होने से नियम क्रमांक 3 के अनुसार वृष में शून्य और तुला में 4 रेखाएं रहेंगी।
- मिथुन में ग्रह है, कन्या में नहीं है। मिथुन में शून्य एवं कन्या में रेखाएं होने से परिस्थिति क्रमांक 9 के अनुसार शोधन नहीं होगा और मिथुन में शून्य तथा कन्या में 2 रेखा स्थापित करें।
- कर्क में 1 रेखा एवं सिंह में शून्य यथावत स्थापित होगा।
- धनु मीन ग्रह हीन हैं। धनु में शून्य एवं मीन में 3 रेखा होने से परिस्थिति क्रमांक 13 के अनुसार धनु में शून्य तथा मीन में 3 रेखाएं रहेंगी।
- मकर कुंभ दोनों ही ग्रह हीन हैं, मकर में 1 रेखा एवं कुंभ में 2 रेखाएं हैं। परिस्थिति क्रमांक 12 के अनुसार दोनों में 1–1 रेखाएं स्थापित करें।

चन्द्राष्टक वर्ग एकाधिपत्य शोधन उपरान्त

राशि	मे.	वृष	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
रेखा संख्या	0	0	0	1	0	2	4	0	0	1	1	3

चन्द्राष्टक वर्ग कुंडली त्रिकोण शोधनोपरान्त

मंगलाष्टक वर्ग

- मेष में 3 रेखा एवं वृश्चिक में शून्य है तथा दोनों ही ग्रह हीन हैं। अतः परिस्थिति क्रमांक 13 के अनुसार कोई शोधन नहीं होगा।
- वृष तुला दोनों में ग्रह हैं, वृष में तीन रेखा एवं तुला में 4 रेखाएं हैं। अतः परिस्थिति क्रमांक 2 के अनुसार कोई शोधन नहीं होगा।
- मिथुन में ग्रह हैं, कन्या ग्रह रहित है। दोनों जगह शून्य होने से परिस्थिति क्रमांक 10 के अनुसार कोई शोधन नहीं होगा।
- कर्क में शून्य एवं सिंह में 3 रेखा हैं। कर्क–सिंह राशियों में कोई शोधन नहीं होता।
- धनु एवं मीन ग्रह रहित हैं। धनु में शून्य एवं मीन में 2 रेखाएं हैं। अतः परिस्थिति क्रमांक 13 के अनुसार कोई शोधन नहीं होगा।
- मकर कुंभ दोनों ग्रह रहित हैं। मकर में 1 रेखा कुंभ में 2 रेखाएं हैं। अतः परिस्थिति क्रमांक 12 के अनुसार दोनों स्थानों पर एक एक रेखा लिखें।

मंगलाष्टक वर्ग एकाधिपत्य शोधन उपरान्त

राशि	मे.	वृष	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
रेखा संख्या	3	3	0	0	3	0	4	0	0	1	1	2

मंगलाष्टक वर्ग कुंडली एकाधिपत्य शोधनोपरांत
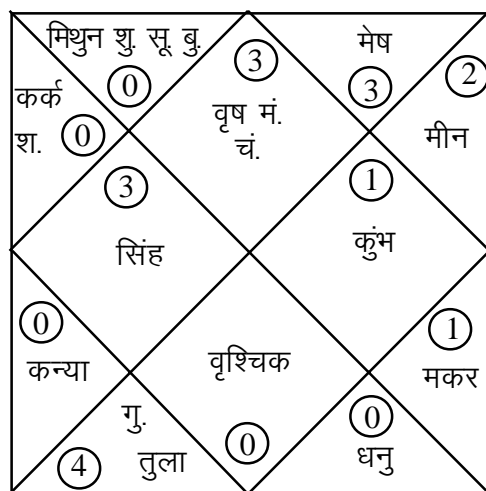
बुधाष्टक वर्ग

- मेष–वृश्चिक दोनों राशि ग्रह रहित हैं एवं रेखाएं समान हैं। अतः परिस्थिति क्रमांक 11 के अनुसार दोनों राशियों में शून्य स्थापित होगा।
- वृष–तुला दोनों में ग्रह हैं। वृष में 4 रेखा एवं तुला में 1 रेखा है। अतः नियम क्रमांक 2 के अनुसार कोई शोधन नहीं होगा तथा रेखाएं यथावत रहेंगी।
- मिथुन में ग्रह है कन्या में नहीं है पर दोनों में शून्य होने से नियम 4 के अनुसार शून्य स्थापित करें।
- कर्क में शून्य तथा सिंह में 4 रेखाएं यथावत् स्थापित होंगी।
- धनु–मीन में ग्रह नहीं हैं। धनु में शून्य और मीन में 4 रेखाएं हैं। अतः नियम क्रमांक 13 के अनुसार शोधन नहीं होगा।
- मकर कुंभ में ग्रह नहीं हैं। मकर में 1 रेखा एवं कुंभ में 2 रेखाएं हैं। अतः नियम क्रमांक 12 के अनुसार दोनों में एक–एक रेखा स्थापित होगी।

बुधाष्टक वर्ग एकाधिपत्य शोधन उपरान्त

राशि	मे.	वृष	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
रेखा संख्या	0	4	0	0	4	0	1	0	0	1	1	4

बुधाष्टक वर्ग कुंडली एकाधिपत्य शोधनोपरांत
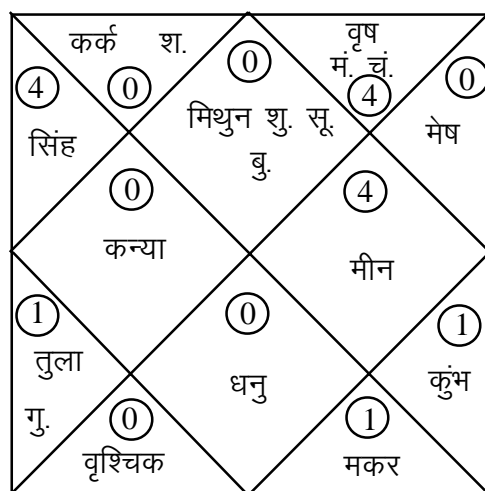
गुरुअष्टकवर्ग

- मेष–वृश्चिक राशियां ग्रह रहित हैं। मेष में शून्य एवं वृश्चिक में 3 रेखाएं हैं। नियम 13 के अन्तर्गत कोई शोधन नहीं होगा।
- वृष तुला में ग्रह हैं, लेकिन दोनों जगह शून्य रेखा है। अतः नियम 4 लागू होगा, और दोनों जगह शून्य स्थापित होगा।
- मिथुन में ग्रह है, कन्या में नहीं है। मिथुन कन्या दोनों में समान रेखाएं हैं। अतः परिस्थिति क्रमांक 5 के अनुसार ग्रह हीन राशि की रेखाएं हटा दी जाएंगी और मिथुन में रेखाएं यथावत् रहेंगी।
- कर्क में शून्य एवं सिंह में शून्य होने से दोनों जगह शून्य रहेगा।
- धनु–मीन में ग्रह नहीं हैं। धनु में शून्य एवं मीन में दो रेखाएं हैं। अतः नियम 13 के अनुसार शोधन नहीं होगा।
- मकर कुंभ ग्रह हीन हैं। रेखाएं समान होने से नियम 11 के तहत् शून्य स्थापित करें।

गुरुअष्टक वर्ग एकाधिपत्य शोधन उपरान्त

राशि	मे.	वृष	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
रेखा संख्या	0	0	2	0	0	0	0	3	0	0	0	2

गुरुअष्टक वर्ग कुंडली एकाधिपत्य शोधनोपरान्त
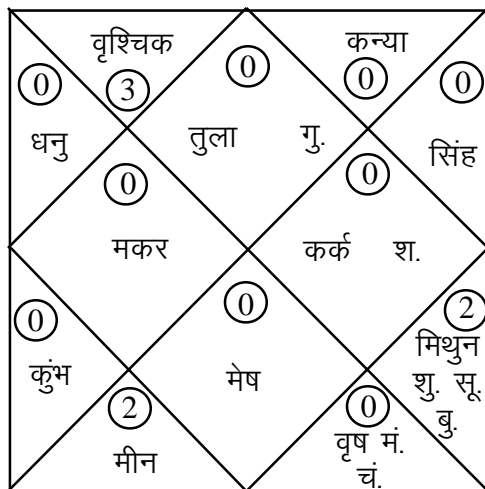
शुक्राष्टक वर्ग

- मेष–वृश्चिक ग्रह हीन हैं। मेष में 4 रेखाएं एवं वृश्चिक में शून्य है। परिस्थिति 13 के अनुसार कोई शोधन नहीं होगा।
- वृष–तुला ग्रह युक्त हैं। लेकिन दोनों में शून्य होने से शून्य स्थापित करें।
- मिथुन ग्रह युक्त एवं कन्या ग्रह हीन है। दोनों में शून्य होने से शून्य स्थापित करें।
- कर्क में 3 रेखाएं एवं सिंह में 3 रेखाएं यथावत रहेंगी।
- धनु–मीन ग्रह हीन हैं। धनु में शून्य व मीन में 3 रेखाएं हैं। नियम 13 के अनुसार यथावत रखें।
- मकर–कुंभ ग्रह हीन हैं, किन्तु दोनों जगह शून्य होने से शून्य स्थापित करें।

शुक्राष्टक वर्ग एकाधिपत्य शोधन उपरान्त

राशि	मे.	वृष	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
रेखा संख्या	4	0	0	3	3	0	0	0	0	0	0	3

शुक्राष्टक वर्ग कुंडली एकाधिपत्य शोधनोपरान्त

शन्याष्टक वर्ग

- मेष–वृश्चिक ग्रह हीन हैं। मेष में दो रेखाएं एवं वृश्चिक में शून्य है। नियम 13 के अनुसार यथावत् स्थापित करें।
- वृष–तुला ग्रह युक्त हैं। दोनों जगह समान रेखाएं हैं। नियम 1 के अनुसार यथावत रहेंगी।
- मिथुन ग्रह युक्त व कन्या ग्रह हीन है। मिथुन में शून्य एवं कन्या में 2 रेखाएं हैं। नियम 9 के अनुसार यथावत रहेंगी।
- कर्क 1 रेखा एवं सिंह में शून्य होने से यथावत रहेंगी।
- धनु–मीन ग्रह हीन हैं। धनु में शून्य व मीन में 3 रेखाएं हैं। नियम 13 के अनुसार यथावत् स्थापित करें।
- मकर–कुंभ ग्रह हीन हैं। मकर में शून्य व कुंभ में 3 रेखाएं हैं। नियम 13 के अनुसार यथावत् स्थापित करें।

शन्याष्टक वर्ग एकाधिपत्य शोधन उपरान्त

राशि	मे.	वृष	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
रेखा संख्या	2	2	0	1	0	2	2	0	0	0	3	3

शन्याष्टक वर्ग कुंडली एकाधिपत्य शोधनोपरान्त

लग्नाष्टक वर्ग

- मेष–वृश्चिक ग्रह हीन हैं। मेष में 4 रेखाएं व वृश्चिक में शून्य है। नियम 13 के अनुसार यथावत् रखें।
- वृष–तुला ग्रह युक्त हैं। वृष में शून्य और तुला में 3 रेखाएं हैं। नियम 3 के अनुसार यथावत् स्थापित करें।
- मिथुन ग्रह युक्त और कन्या ग्रह हीन है। मिथुन में शून्य और कन्या में 1 रेखा है। नियम 9 के तहत् यथावत् रखें।
- कर्क की 4 रेखाएं एवं सिंह की 2 रेखाएं यथावत रहेंगी।
- धनु–मीन ग्रह हीन हैं। धनु में शून्य एवं मीन में 3 रेखाएं हैं। नियम 13 के अनुसार यथावत रखें।
- मकर कुंभ ग्रह हीन हैं। मकर में शून्य एवं कुंभ में 2 रेखाएं है। नियम 13 के अनुसार यथावत रखें।

लग्नाष्टक वर्ग एकाधिपत्य शोधन उपरान्त

राशि	मे.	वृष	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
रेखा संख्या	4	0	0	4	2	1	3	0	0	0	2	3

लग्नाष्टक वर्ग कुंडली एकाधिपत्य शोधनोपरान्त
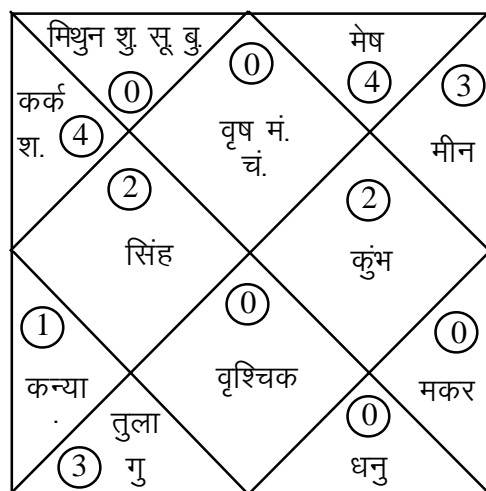
एकाधिपत्य शोधन के उपरान्त सर्वाष्टक वर्ग निम्नानुसार बनेगा।

एकाधिपत्य शोधन के उपरान्त सर्वाष्टक वर्ग

ग्रह	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	योग
सूर्य	1	3	0	1	2	0	1	0	0	2	2	4	16
चन्द्र	0	0	0	1	0	2	4	0	0	1	1	3	12
मंगल	3	0	0	0	3	0	4	0	0	1	1	2	14
बुध	0	4	0	0	4	0	1	0	0	1	1	4	15
गुरु	0	0	2	0	0	0	0	3	0	0	0	2	7
शुक्र	4	0	0	3	3	0	0	0	0	0	0	3	13
शनि	2	2	0	1	0	2	2	0	0	0	3	3	15
लग्न	4	0	0	4	2	1	3	0	0	0	2	3	19
योग	14	9	2	10	14	5	15	3	0	5	10	24	111

एकाधिपत्य शोधनोपरान्त सर्वाष्टक वर्ग कुंडली
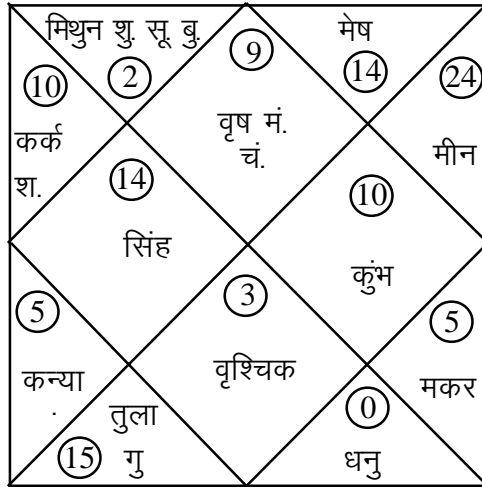
त्रिकोण शोधन एवं एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टक वर्ग के आगे के गणित में गुणक करने की विधि बताई जाएगी।

3. राशि गुणक

त्रिकोण शोधन एवं एकाधिपत्य शोधन के पश्चात राशि गुणक बनाया जाता है। प्रत्येक राशि के गुणक अंक निर्धारित हैं, जो निम्नानुसार हैं।

राशि	गुणक अंक
मेष	7
वृष	10
मिथुन	8
कर्क	4
सिंह	10
कन्या	5
तुला	7
वृश्चिक	8
धनु	9
मकर	5
कुंभ	11
मीन	12

राशि गुणक स्पष्ट हेतु एकाधिपत्य शोधन के उपरान्त जो रेखाएं स्पष्ट हुई हैं, उनका उपयोग किया जाता है। उदाहरणार्थ सूर्याष्टक वर्ग में मेष राशि की रेखा संख्या एक है, इसे मेष राशि के गुणक अंक 7 से गुणा करने पर योग फल 7 आया। अतः सूर्याष्टक वर्ग में मेष राशि का गुणक अंक 7 होगा। जहाँ शून्य है वहाँ शून्य से गुणा करने पर शून्य ही शेष रहेगा। पूर्व उदाहरण कुंडली के एकाधिपत्य शोधन के बाद आईं रेखाओं को उनके गुणक अंक से गुणा करके राशि पिण्ड निम्नानुसार बनेगा।

सूर्याष्टक वर्ग गुणक

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी	योग
ए.शो.रेखा	1	3	0	1	2	0	1	0	0	2	2		4
राशिगुणक अंक	7	10	8	4	10	5	7	8	9	5	11	12	
राशि पिण्ड	7	30	0	4	20	0	7	0	0	10	22	48	148

उपरोक्तानुसार सूर्याष्टक वर्ग का राशि पिण्ड 148 होता है।

चन्द्राष्टक वर्ग गुणक

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी	योग
ए.शो.रेखा	0	0	0	1	0	2	4	0	0	1	1	3	
राशिगुणक अंक	7	10	8	4	10	5	7	8	9	5	11	12	
राशि पिण्ड	0	0	0	4	0	10	28	0	0	5	11	36	94

उपरोक्तानुसार चन्द्राष्टक वर्ग का राशि पिण्ड 94 होता है।

मंगलाष्टक वर्ग गुणक

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी	योग
ए.शो.रेखा	3	0	0	0	3	0	4	0	0	1	1	2	
राशिगुणक अंक	7	10	8	4	10	5	7	8	9	5	11	12	
राशि पिण्ड	21	0	0	0	30	0	28	0	0	5	11	24	119

उपरोक्तानुसार मंगलाष्टक वर्ग का राशि पिण्ड 119 होता है।

बुधाष्टक वर्ग

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी	योग
ए.शो.रेखा	0	4	0	0	4	0	1	0	0	1	1	4	
राशिगुणक अंक	7	10	8	4	10	5	7	8	9	5	11	12	राशि
पिण्ड	0	40	0	0	40	0	7	0	0	5	11	48	151

बुधाष्टक वर्ग का राशि पिण्ड 151 रहेगा।

गुरू अष्टक वर्ग

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी	योग
ए.शो.रेखा	0	0	2	0	0	0	0	3	0	0	0	2	
राशिगुणक अंक	7	10	8	4	10	5	7	8	9	5	11	12	
राशि पिण्ड	0	0	16	0	0	0	0	24	0	0	0	24	64

गुरुअष्टक वर्ग का राशि पिण्ड 64 रहेगा।

शुक्राष्टक वर्ग

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी	योग
ए.शो.रेखा	4	0	0	3	3	0	0	0	0	0	0	3	
राशिगुणक अंक	7	10	8	4	10	5	7	8	9	5	11	12	
राशि पिण्ड	28	0	0	12	30	0	0	0	0	0	0	36	106

शुक्राष्टक वर्ग का राशि पिण्ड 106 रहेगा।

शन्याष्टक वर्ग

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी	योग
ए.शो.रेखा	2	2	0	1	0	2	2	0	0	0	3	3	
राशिगुणक अंक	7	10	8	4	10	5	7	8	9	5	11	12	
राशि पिण्ड	14	20	0	4	0	10	14	0	0	0	33	36	131

शन्याष्टक वर्ग का राशि पिण्ड 131 रहेगा।

लग्नाष्टक वर्ग

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी	योग
ए.शो.रेखा	4	0	0	4	2	1	3	0	0	0	2	3	
राशिगुणक अंक	7	10	8	4	10	5	7	8	9	5	11	12	
राशि पिण्ड	28	0	0	16	20	5	21	0	0	0	22	36	148

लग्नाष्टक वर्ग का राशि पिण्ड 148 रहेगा।

इसके उपरांत प्रत्येश राशि के गुणक अंक जानने हेतु सर्वाष्टक वर्ग बनाया जाएगा जो निम्नानुसार बनेगा।

राशि गुणक सर्वाष्टक वर्ग

ग्रह	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी	योग
सूर्य	7	30	0	4	20	0	7	0	0	10	22	48	148
चन्द्र	0	0	0	4	0	10	28	0	0	5	11	36	94
मंगल	21	0	0	0	30	0	28	0	0	5	11	24	119
बुध	0	40	0	0	40	0	7	0	0	5	11	48	151
गुरु	0	0	16	0	0	0	0	24	0	0	0	24	64
शुक्र	28	0	0	12	30	0	0	0	0	0	0	36	106
शनि	14	20	0	4	0	10	14	0	0	0	33	36	131
लग्न	28	0	0	16	20	5	21	0	0	0	22	36	148
योग	98	90	16	40	140	25	105	24	0	25	110	288	961

राशि गुणक कुंडली
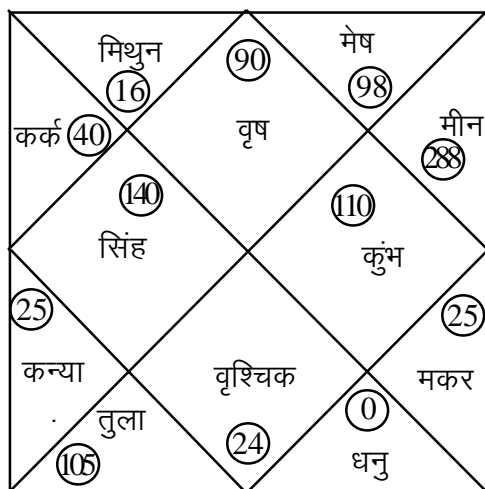
उपरोक्त राशि गुणक कुंडली से यह ज्ञात होता है कि कौन सी राशि कितनी बलवान है, तथा दो परस्पर राशियों में से कौनसी राशि अधिक बलवान या कमजोर है।

4. ग्रह गुणक

राशि गुणक स्पष्ट करने के बाद ग्रह गुणक स्पष्ट किया जाता है। ग्रह गुणक के लिए भी प्रत्येक ग्रह के गुणक अंक निर्धारित हैं, जो कि निम्न हैं।

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
ग्रह गुणक अंक	5	5	8	5	10	7	5

ग्रह गुणक स्पष्ट करने के लिए एकाधिपत्य शोधन के उपरान्त प्राप्त रेखाओं का उपयोग किया जाता है। परन्तु इसके साथ ही यह भी ज्ञात कर लेना चाहिए कि जन्म कुंडली में किस राशि में एक से अधिक ग्रह हैं।

ग्रह गुणक स्पष्ट करने हेतु निम्नलिखित नियमों को ध्यान में रखिए।

1. जिस राशि में ग्रह हो उस ग्रह के गुणक अंक का उस राशि में स्थित एकाधिपति शोधन उपरांत रेखा संख्या से गुणा करने पर जो अंक आते हैं वे उस ग्रह के गुणक अंक कहलाते हैं।

2. यदि एक राशि में एक से अधिक ग्रह हों तो उन दोनों (या ज्यादा भी) ग्रहों के गुणक अंक जोड़कर उस राशि में स्थित शोधन उपरांत रेखा से गुणा किया जाता है।

3. जिस राशि में कोई ग्रह नहीं होता तब उस राशि में शून्य लिखना चाहिए।

4. ग्रह गुणक योग का आधार एकाधिपत्य शोधनोपरान्त रेखाएं होती हैं। इन नियमों को उदाहरण कुंडली द्वारा प्रदर्शित कर रहे हैं।

उदाहरण कुंडली में जिन राशियों में ग्रह स्थित हैं वहाँ ग्रह लिखे हैं तथा जहाँ ग्रह नहीं हैं वहाँ (–) का चिन्ह दिया गया है।

मेष.	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
–	च.मं.	सू.बु.शु.	शनि	–	–	गुरु	–	–	–	–	–

एकाधिपत्य शोधनोपरान्त सूर्याष्टक वर्ग देखा, इसमें मेष में एक रेखा है लेकिन कोई ग्रह नहीं है। अतः इसमें ग्रह गुणक नहीं होगा। वृष में तीन रेखाएं हैं तथा चन्द्र और मंगल दो

ग्रह हैं चन्द्र के ग्रह गुणक अंक 5 तथा मंगल के ग्रह गुणक अंक 8 का योग किया जो 13 आया। इस 13 से वृष में स्थित तीन रेखाओं में गुणा किया तो 39 अंक आए। यह 39 अंक वृष राशि के ग्रह गुणक अंक हुए।

मिथुन राशि में तीन ग्रह सूर्य, बुध एवं शुक्र हैं। लेकिन एकाधिपत्य शोधनोपरान्त मिथुन में शून्य रेखा होने से ग्रह गुणक न होकर शून्य स्थापित किया जायेगा। कर्क में एक रेखा एवं शनि ग्रह है। शनि के गुणक अंक 5 का एक से गुणा किया तो 5 अंक कर्क में ग्रह गुणक अंक होंगे। सिंह एवं कन्या में कोई ग्रह नही हैं। तुला में एक रेखा एवं गुरु ग्रह है। गुरु के अंक 10 का एक अंक में गुणा किया तो तुला के 10 ग्रह गुणक अंक होंगे। आगे वृश्चिक से लेकर मीन तक कोई ग्रह न होने से सभी जगह शून्य स्थापित होगा। नीचे उदाहरण कुंडली के सूर्याष्टक वर्ग को दे रहे हैं।

सूर्याष्टक वर्ग ग्रह गुणक अंक

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी	योग
ए.शो.रेखा	1	3	0	1	2	0	1	0	0	2	2	4	
ग्रह गुणक अंक	—	13	17	5	—	—	10	—	—	—	—	—	
ग्रह पिण्ड	0	39	0	5	0	0	10	0	0	0	0	0	54

इसी प्रकार चन्द्राष्टक से लेकर शन्याष्टक तक के ग्रह गुणक अंक निम्नानुसार बनेंगे।

चन्द्राष्टक वर्ग ग्रह गुणक अंक

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी	योग
ए.शो.रेखा	0	0	0	1	0	2	4	0	0	1	1	3	
ग्रह गुणक अंक	—	13	17	5	—	—	10	—	—	—	—	—	
ग्रह पिण्ड	0	0	0	5	0	0	40	0	0	0	0	0	45

मंगलाष्टक वर्ग ग्रह गुणक अंक

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी	योग
ए.शो.रेखा	3	0	0	0	3	0	4	0	0	1	1	2	
ग्रह गुणक अंक	—	13	17	5	—	—	10	—	—	—	—	—	
ग्रह पिण्ड	0	0	0	0	0	0	40	0	0	0	0	0	40

बुधाष्टक वर्ग ग्रह गुणक अंक

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी	योग
ए.शो.रेखा	0	4	0	0	4	0	1	0	0	1	1	4	
ग्रह गुणक अंक	—	13	17	5	—	—	10	—	—	—	—	—	
ग्रह पिण्ड	0	52	0	0	0	0	10	0	0	0	0	0	62

गुरु अष्टक वर्ग ग्रह गुणक अंक

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी	योग
ए.शो.रेखा	0	0	2	0	0	0	0	3	0	0	0	2	
ग्रह गुणक अंक	—	13	17	5	—	—	10	—	—	—	—	—	
ग्रह पिण्ड	0	0	34	0	0	0	0	0	0	0	0	0	34

शुक्राष्टक वर्ग ग्रह गुणक अंक

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी	योग
ए.शो.रेखा	4	0	0	3	3	0	0	0	0	0	0	3	
ग्रह गुणक अंक	—	13	17	5	—	—	10	—	—	—	—	—	
ग्रह पिण्ड	0	0	0	15	0	0	0	0	0	0	0	0	15

शन्याष्टक वर्ग ग्रह गुणक अंक

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी	योग
ए.शो.रेखा	2	2	0	1	0	2	2	0	0	0	3	3	
ग्रह गुणक अंक	—	13	17	5	—	—	10	—	—	—	—	—	
ग्रह पिण्ड	0	26	0	5	0	0	20	0	0	0	0	0	51

लग्नाष्टक वर्ग ग्रह गुणक अंक

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी	योग
ए.शो.रेखा	4	0	0	4	2	1	3	0	0	0	2	3	
ग्रह गुणक अंक	—	13	17	5	—	—	10	—	—	—	—	—	
ग्रह पिण्ड	0	0	0	20	0	0	30	0	0	0	0	0	50

इसके उपरान्त प्रत्येक ग्रह के गुणक अंक जानने हेतु सर्वाष्टक वर्ग बनेगा जो निम्न है।

सर्वाष्टक ग्रह गुणक अंक

ग्रह	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी	योग
सूर्य	0	39	0	5	0	0	10	0	0	0	0	0	54
चन्द्र	0	0	0	5	0	0	40	0	0	0	0	0	45
मंगल	0	0	0	0	0	0	40	0	0	0	0	0	40
बुध	0	52	0	0	0	0	10	0	0	0	0	0	62
गुरु	0	0	34	0	0	0	0	0	0	0	0	0	34
शुक्र	0	0	0	15	0	0	0	0	0	0	0	0	15
शनि	0	26	0	5	0	0	20	0	0	0	0	0	51
लग्न	0	0	0	20	0	0	30	0	0	0	0	0	50
योग	0	117	34	50	0	0	150	0	0	0	0	0	351

ग्रह गुणक अंक कुंडली
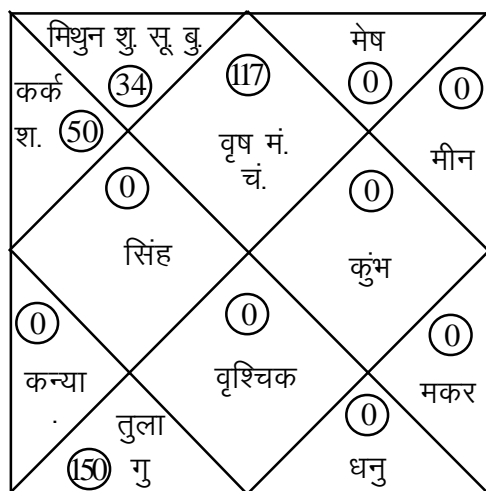
राशि गुणक एवं ग्रह गुणक के पश्चात् इनका योग पिण्ड निम्नानुसार बनेगा।

राशि एवं ग्रह योगपिण्ड

अष्टक वर्ग	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न
राशि पिण्ड	148	94	119	151	64	106	131	148
ग्रह पिण्ड	54	45	40	62	34	15	51	50
योग पिण्ड	202	139	159	213	98	121	182	198

इसके पश्चात् ग्रह बल निकालना चाहिए। यदि किसी राशि में ग्रह अकेला है तो उसका ग्रह बल वही होगा। परन्तु जब एक से अधिक ग्रह एक साथ बैठे हों तो प्रत्येक का ग्रह बल ग्रह गुणक अंक के अनुपात से निकालना चाहिए।

उदाहरण कुंडली में चंद्र मंगल साथ में हैं। चन्द्र के ग्रह गुणक अंक 5 तथा मंगल के ग्रह गुणक अंक 8 कुल 13 हुए। चूंकि ये दोनों वृष राशि में हैं, अतः वृष राशि में आए ग्रह गुणक अंक 117 में 13 का भाग दिया तो एक भाग में 9 आए। अब चंद्र के ग्रह गुणक अंक 5 हैं, अतः 9 X 5 = 45 गुणक अंक चंद्र के हुए, यह 45 चन्द्र का बल हुआ। मंगल के ग्रह गुणक अंक 8 हैं, अतः 9 X 8 = 72 गुणक अंक मंगल के हुए। यह 72 मंगल का बल हुआ।

मिथुन राशि में सूर्य, बुध एवं शुक्र हैं। सूर्य के गुणक अंक 5 तथा बुध के अंक 5 एवं शुक्र के अंक 7 का योग आया। मिथुन राशि में गुणक अंक 34 में 17 का भाग दिया तो लब्धि 2 भाग आए। लब्धि 2 में सूर्य के ग्रह गुणक अंक 5 का गुणा किया तो 10 हुए यह सूर्य का बल हुआ। लब्धि 2 में बुध के ग्रह गुणक अंक 5 का गुणा किया तो 10 हुए, यह बुध का बल हुआ। तथा शुक्र के ग्रह गुणक अंक 7 का 2 में गुणा किया तो 14 हुए यह शुक्र का बल हुआ।

कर्क में शनि अकेला है। अतः शनि का बल 50 ज्यों का त्यों रहेगा। तुला में गुरु अकेला है, अतः गुरु का ग्रह गुणक अंक बल 150 रहेगा। कुंडली के प्रत्येक ग्रह का गुणक बल निम्नानुसार आया।

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
ग्रह गुणक बल	10	45	72	10	150	14	50

उपरोक्त स्थिति को देखते हुए सर्वाधिक बली ग्रह गुरु है। उससे कम मंगल, मंगल से कम शनि, शनि से कम चन्द्र, चन्द्र से कम शुक्र, शुक्र से कम बुध एवं सूर्य है।

इसके बाद शोधन चक्र बनाना चाहिए। शोधन चक्र में पीछे जो भी उपलब्धि आई है वह एक स्थान पर लिखी जाती है। आगे के पृष्ठों में पूर्व उदाहरण कुंडली का शोधन चक्र स्पष्ट किया जा रहा है।

सूर्याष्टक वर्ग

राशि	ग्रह	रेखा	त्रिकोण शोधन	एकाधिपत्य शोधन	राशि गुणक	ग्रह गुणक	योग
मेष	—	4	1	1	7	0	
वृष	मं. चं. ल.	4	3	3	30	39	
मिथुन	सू. बु. शु.	3	0	0	0	0	राशि पिण्ड
कर्क	श.	4	1	1	4	5	148
सिंह		5	2	2	20	0	
कन्या		1	0	0	0	0	ग्रह पिण्ड
तुला	गुरु	4	1	1	7	10	54
वृश्चिक		3	0	0	0	0	
धनु		3	0	0	0	0	योग पिण्ड
मकर		3	2	2	10	0	148+48
कुंभ		7	4	2	22	0	=202
मीन		7	4	4	48	0	
योग		48	18	16	148	54	

चन्द्राष्टक वर्ग

राशि	ग्रह	रेखा	त्रिकोण शोधन	एकाधिपत्य शोधन	राशि गुणक	ग्रह गुणक	योग
मेष	—	4	0	0	0	0	
वृष	मं. चं. ल.	3	0	0	0	0	
मिथुन	सू. बु. शु.	2	0	0	0	0	राशि पिण्ड
कर्क	श.	4	1	1	4	5	94
सिंह		4	0	0	0	0	ग्रह पिण्ड
कन्या		5	2	2	10	0	45
तुला	गुरु	6	4	4	28	40	योग पिण्ड
वृश्चिक		3	0	0	0	0	139
धनु		4	0	0	0	0	
मकर		4	1	1	5	0	
कुंभ		4	2	1	11	0	
मीन		6	3	3	36	0	
योग		49	13	12	94	45	

मंगलाष्टक वर्ग

राशि	ग्रह	रेखा	त्रिकोण शोधन	एकाधिपत्य शोधन	राशि गुणक	ग्रह गुणक	योग
मेष	—	4	3	3	21	0	
वृष	मं. चं. ल.	4	3	0	0	0	
मिथुन	सू. बु. शु.	1	0	0	0	0	राशि पिण्ड
कर्क	श.	4	0	0	0	0	119
सिंह		4	3	3	30	0	ग्रह पिण्ड
कन्या		1	0	0	0	0	40
तुला	गुरु	5	4	4	28	40	योग पिण्ड
वृश्चिक		4	0	0	0	0	159
धनु		1	0	0	0	0	
मकर		2	1	1	5	0	
कुंभ		3	2	1	11	0	
मीन		6	2	2	24	0	
योग		39	18	14	119	40	

बुधाष्टक वर्ग

राशि	ग्रह	रेखा	त्रिकोण शोधन	एकाधिपत्य शोधन	राशि गुणक	ग्रह गुणक	योग
मेष	—	4	1	0	0	0	
वृष	मं. चं. ल.	6	4	4	40	52	
मिथुन	सू. बु. शु.	5	0	0	0	0	राशि पिण्ड
कर्क	श.	2	0	0	0	0	151
सिंह		7	4	4	40	0	ग्रह पिण्ड
कन्या		2	0	0	0	0	62
तुला	गुरु	6	1	1	7	10	योग पिण्ड
वृश्चिक		3	1	0	0	0	213
धनु		3	0	0	0	0	
मकर		3	1	1	5	0	
कुंभ		7	2	1	11	0	
मीन		6	4	4	48	0	
योग		54	18	15	151	62	

गुरुअष्टक वर्ग

राशि	ग्रह	रेखा	त्रिकोण शोधन	एकाधिपत्य शोधन	राशि गुणक	ग्रह गुणक	योग
मेष	—	4	0	0	0	0	
वृष	मं. चं. ल.	3	0	0	0	0	
मिथुन	सू. बु. शु.	6	2	2	16	34	राशि पिण्ड
कर्क	श.	4	0	0	0	0	64
सिंह		4	0	0	0	0	ग्रह पिण्ड
कन्या		5	2	0	0	0	34
तुला	गुरु	4	0	0	0	0	योग पिण्ड
वृश्चिक		7	3	3	24	0	98
धनु		4	0	0	0	0	
मकर		4	1	0	0	0	
कुंभ		5	1	0	0	0	
मीन		6	2	2	24	0	
योग		56	11	7	64	34	

शुक्राष्टक वर्ग

राशि	ग्रह	रेखा	त्रिकोण शोधन	एकाधिपत्य शोधन	राशि गुणक	ग्रह गुणक	योग
मेष	—	6	4	4	28	0	
वृष	मं. चं. ल.	5	0	0	0	0	
मिथुन	सू. बु. शु.	4	0	0	0	0	राशि पिण्ड
कर्क	श.	5	3	3	12	15	106
सिंह		5	3	3	30	0	ग्रह पिण्ड
कन्या		5	0	0	0	0	15
तुला	गुरु	4	0	0	0	0	योग पिण्ड
वृश्चिक		2	0	0	0	0	121
धनु		2	0	0	0	0	
मकर		5	0	0	0	0	
कुंभ		4	0	0	0	0	
मीन		5	3	3	36	0	
योग		52	13	13	106	15	

शन्याष्टक वर्ग

राशि	ग्रह	रेखा	त्रिकोण शोधन	एकाधिपत्य शोधन	राशि गुणक	ग्रह गुणक	योग
मेष	—	4	2	2	14	0	
वृष	मं. चं. ल.	4	2	2	20	26	
मिथुन	सू. बु. शु.	1	0	0	0	0	राशि पिण्ड
कर्क	श.	4	1	1	4	5	131
सिंह		2	0	0	0	0	ग्रह पिण्ड
कन्या		4	2	2	10	0	51
तुला	गुरु	3	2	2	14	20	योग पिण्ड
वृश्चिक		3	0	0	0	0	182
धनु		2	0	0	0	0	
मकर		2	0	0	0	0	
कुंभ		4	3	3	33	0	
मीन		6	3	3	36	0	
योग		39	15	15	131	51	

लग्नाष्टक वर्ग

राशि	ग्रह	रेखा	त्रिकोण शोधन	एकाधिपत्य शोधन	राशि गुणक	ग्रह गुणक	योग
मेष	—	5	4	4	28	0	
वृष	मं. चं. ल.	3	0	0	0	0	
मिथुन	सू. बु. शु.	3	0	0	0	0	राशि पिण्ड
कर्क	श.	7	4	4	16	20	148
सिंह		3	2	2	20	0	ग्रह पिण्ड
कन्या		4	1	1	5	0	50
तुला	गुरु	6	3	3	21	30	योग पिण्ड
वृश्चिक		3	0	0	0	0	198
धनु		1	0	0	0	0	
मकर		3	0	0	0	0	
कुंभ		5	2	2	22	0	
मीन		6	3	3	36	0	
योग		49	19	19	148	50	

इसके पश्चात अष्टक वर्ग से फल कथन करने की विधि का सम्पूर्ण अध्ययन का विवरण दिया जाएगा। जिसमें सूर्याष्टक से लग्नाष्टक तक का फल कथन एवं गोचर में अष्टक वर्ग के विशेष उपयोग एवं प्रभाव का विस्तृत फलादेश सम्मिलित रहेगा।

5. भाव एवं भाव फल विचार

जन्मकुण्डली में 12 भाव, घर या स्थान होते हैं। सबसे ऊपर के स्थान को लग्न या लग्नभाव कहते हैं। इन बारह भावों के नाम निम्न रूप में प्रचलित हैं।

पहला भाव–	लग्न, लग्नभाव, उदय, आद्य।
दूसरा भाव–	धन, वाणी, कुटुम्बभाव।
तीसरा भाव–	पराक्रम, वीर्य, धैर्य, सहोदर भाव।
चौथा भाव–	सुख भाव, मातृ भाव।
पांचवां भाव–	बुद्धि, प्रेम, पितृ नन्दन, पुत्रभाव।
छठा भाव–	रोग, अंग, शत्रु, रिपु, कष्ट, भय।
सातवां भाव–	कलत्रभाव, ग्रहस्थ, काम, गमन।
आठवां भाव–	आयु, रन्ध्र, मृत्यु।
नवम भाव–	धर्म, भाग्य, शुभ।
दशम भाव–	राज्य, कर्म।
ग्यारहवां भाव–	आय, लाभ।
बारहवां भाव–	व्यय।

अब आगे यह बताया जा रहा है, कि किस भाव से किन किन बातों का ज्ञान किया जाता है –

प्रथम भाव– लग्न भाव से शरीर एवं शारीरिक स्वास्थ्य, बचपन, आचरण, दुर्बलता पुष्टता, रंग, रूप, आकृति तथा व्यक्तिव, गुण, स्वभाव, आत्मबल का ज्ञान किया जाता है।

द्वितीय भाव– धन, कोष, पैत्रिक सम्पत्ति, कुटुम्ब, मित्र, जेल, गायन, वाणी आदि।

तृतीय भाव– छोटा भाई या छोटी बहिन, पराक्रम, हिम्मत, साहस, वीरता, योग, प्रभुत्व ख्याति विशेषता आदि।

चतुर्थ भाव– घरेलू जीवन, सुख, मानसिक शांति, वाहन, चौपाये पशु, मनोरंजन, माता।

पंचम भाव– संतान, संतान सुख, विद्या, भावना, ख्याति, प्रबन्ध, दक्षता, अनायास धन

प्राप्ति, जुआ, नम्रता आदि।

षष्ठ भाव– शत्रु, रोग, भय, मुकदमा, झगड़ा, परतंत्रता आदि।

सप्तम भाव– स्त्री, स्त्री का स्वास्थ्य, मदन पीड़ा, प्रेमी–प्रेमिका, भोग–विलास, विवाह, स्त्री का रूप, रंग, आकृति, स्वभाव आदि का अध्ययन।

अष्टम भाव– आयु, मानसिक व्यथा, विदेश, ऋण, संग्राम, यज्ञादि।

नवम भाव– भाग्य, भाग्योन्नति, भाग्यपतन, धर्म, शुभ–कार्य, प्रसिद्धि, नेतृत्व आदि।
दशम भाव– राज्य, मान, नौकरी, प्रतिष्ठा, सेवावृत्ति, पितृ–सुख, व्यापार, ऐश्वर्य, भोग,कीर्ति, आत्मविश्वास, पदोन्नति, स्थान परिवर्तन आदि।

एकादश भाव– लाभ, आमदनी, आमदनी के स्त्रोत, गुप्तधन, वाहन सुख, बड़े भाई का सुख, स्वतंत्र चिंतन आदि।

द्वादश भाव– व्यय, हानि, ऋण, व्यसन, शत्रु, विरोध, फिजूल खर्च, आदि।

अब आगे प्रत्येक ग्रह किस–किस का कारक है, इसे स्पष्ट किया जा रहा है।

सूर्य– आध्यात्मिक भावना, पराक्रम, तेजस्विता, हिंसक कार्य एवं हिम्मत का कारक ग्रह है।

चन्द्र– सज्जनता, शीलता, नम्रता, भावुकता, सुन्दरता, यात्रा आदि। मस्तिष्क संबंधी विचारों एवं कार्यो का विशेष प्रतिनिधि है।

मंगल–युद्ध, नेतृत्व, सेनापतित्व, पुलिस, अस्त्र–शस्त्र, कृषि भूमि संबंधी कार्य, डॉक्टरी परीक्षा, मकान, सुख आदि।

बुध– व्यापार, लेन–देन, खरीद–बिक्री, वाणिज्य वृत्ति, ऐश्वर्य भोग, बैंकिंग, स्टेनो, टाइपिस्ट आदि।

गुरु– शिक्षा, पांडित्य, वाद–विवाद, शास्त्रार्थ, धार्मिक कार्य, प्रोफेसर, राजपत्रित अधिकारी, नेतृत्व, प्रसिद्धि आदि।

शुक्र– सुन्दरता, सौम्यता, संगीत, कला, सिनेमा, विदेश यात्रा, हड्डी विशेषज्ञ, वेश्या, मौज, प्रेम, प्रेमी–प्रेमिका आदि।

शनि– छल, कपट, धोखा, व्यभिचार, रोग, ऋण, कूटनीतिज्ञता, नेता, राजदूत आदि का कारक ग्रह है।

विशेष– जितना सरल अष्टक वर्ग का अध्ययन है, उतना ही यह रोचक एवं प्रामाणिक भी है। अष्टक वर्ग से प्रत्येक ग्रह की शक्ति का अनुमान आसानी से हो जाता है। साथ ही यह भी पता चल जाता है कि वह ग्रह किस का कारक है।

कोई भी ग्रह जब अपने वर्ग में पांच रेखाओं को लेकर बैठता है, तो प्रबल माना जाता है, और प्रबल ग्रह अपने कारकत्व को बढ़ाता है।

संक्षिप्त में रेखाओं के संबंध में निम्न जानकारी उपयोगी रहेगी।

1. रेखा–अत्यन्त कमजोर, निर्बल
2. रेखा–सामान्य
3. रेखा–दोष युक्त शुभता की ओर अग्रसर होने वाला
4. रेखा–सम (न शुभ न अशुभ)
5. रेखा–अनुकूल
6. रेखा–श्रेष्ठ
7. रेखा–विशिष्ट, प्रबल
8. रेखा–पूर्णतः अनुकूल

उदाहरणार्थ यदि जन्म कुण्डली में सूर्य पंचम भाव का स्वामी हो तथा वह सूर्याष्टक वर्ग में दो रेखाओं से युक्त हो तो उस जातक के जीवन में संतान का अभाव तथा संतान–दुःख बना रहता है। और यदि यही सूर्य दशम भाव में पांच या छह रेखाओं से युक्त हो तो वह व्यक्ति राज्य पक्ष में शीघ्र एवं श्रेष्ठ उन्नति करता है तथा उच्चपद प्राप्त करने में समर्थ होता है।

इस प्रकार ग्रह बल देखकर जो फलादेश किया जाता है, वह पूर्ण प्रामाणिक एवं सत्यता के निकट होता है।

सूर्य अष्टक वर्ग

एक या एक से अधिक रेखाओं से सम्पन्न (सूर्याष्टक वर्ग में) सूर्य निम्न फल देता है–

1 रेखा– यदि सूर्याष्टक वर्ग में सूर्य को केवल एक ही रेखा मिली हो तो वह कई प्रकार की बीमारियां देता है, प्रत्येक कार्य में बाधा, अड़चन एवं विलंब प्रदान करता है तथा सूर्य की वजह से वह जातक व्यर्थ ही इधर–उधर भटकता रहता है।

2 रेखा– दो रेखा युक्त सूर्य हो तो अपने परिवार में मदभेद बने रहते हैं, वह अनुकूल कार्य करे, फिर भी लोग उस पर शक करते हैं, राज्य सेवा में बाधाएं एवं कठिनाइयां आती हैं, तथा आर्थिक दृष्टि से कमजोर रहता है।

3 रेखा– मानसिक परेशनियाँ रहती हैं तथा शारीरिक अस्वस्थता बनी रहती है, प्रत्येक कार्य के प्रारम्भ में कठिनाइयां एवं बाधाएं आती हैं।

4 रेखा– चार रेखा से युक्त सूर्य का फल मिश्र होता है, उसके जीवन में उतार–चढ़ाव बने रहते हैं। कभी खुशी कभी गम के अवसर आते रहते हैं। यदि एक बार लाभ होता है तो दूसरी बार हानि का अवसर उपस्थित हो जाता है।

5 रेखा– इस स्थिति में सहयोग अनायास मिलने लगता है। शिक्षा पूर्ण होती है, संतान सुख पूर्ण होता है पर संतान संख्या कम होती है, अधिकतर एक या दो संतान ही होती हैं।

6 रेखा– जिस जातक के सूर्याष्टक वर्ग में सूर्य के पास छः रेखाएं हों, उसका स्वास्थ्य उत्तम होता है। उसका व्यक्तित्व प्रभावशाली होने के कारण वह सहज ही लोगों के आकर्षण का पात्र बन जाता है। उसे वाहन सुख पूर्ण मिलता है तथा प्रसिद्धि एवं ख्याति के मामले में सौभाग्यशाली होता है।

7 रेखा– अत्यन्त उच्च प्रभावशाली तथा भाग्यवान होता है, तथा आशातीत प्रतिष्ठा एवं आदर प्राप्त करता है।

8 रेखा– श्रेष्ठ राजनीतिक सम्मान तथा राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त होता है एवं जीवन में समस्त सुखों का उपभोग करता है।

किसी भी अष्टक वर्ग में एक ग्रह कम से कम शून्य या एक रेखा तथा ज्यादा से ज्यादा आठ रेखा ही प्राप्त कर सकता है। इसीलिए ऊपर एक से आठ रेखा प्राप्ति तक का विवेचन किया गया है।

नीचे सूर्य से सम्बन्धित कुछ विशेष तथ्य स्पष्ट कर रहे हैं –

(1) सूर्याष्टक वर्ग में मेषादि राशियों में जिस प्रकार रेखाएं हों, गोचर में सूर्य उन राशियों पर आने पर उसके अनुसार फल देगा।

उदाहरण कुंडली का सूर्याष्टक वर्ग में देखें, उसमें रेखा स्थिति निम्न प्रकार से है।

रेखा	फल
एक रेखा	कष्टप्रद
दो रेखा	धन हानि
तीन रेखा	तनाव एवं क्लेश
चार रेखा	सम (न शुभ न अशुभ)
पाँच रेखा	सर्वदा सुख
छह रेखा	धन लाभ
सात रेखा	सम्पत्ति वृद्धि या लाभ
आठ रेखा	समस्त प्रकार का सुख

उदाहरण पत्रिका के सूर्याष्टक वर्ग में कुम्भ एवं मीन में सात रेखाएं हैं, जिसका फल सम्पत्ति वृद्धि या लाभ है। अतः जब–जब सूर्य कुम्भ एवं मीन राशि में गोचर में भ्रमण करे तब–तब नये कार्य करना इस जातक के लिए लाभ दायक रहेगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के गोचर भ्रमण करते समय रेखाओं की संख्या के अनुसार फलादेश करना चाहिए। नीचे उदाहरण पत्रिका के सभी अष्टक वर्गों की रेखाओं के फल दे रहे हैं।

सूर्याष्टक वर्ग रेखा फल

राशि	रेखा योग	फल
मेष	4	सम
वृष	4	सम
मिथुन	3	तनाव एवं क्लेश
कर्क	4	सम
सिंह	5	सर्वदा सुख
कन्या	1	कष्टप्रद
तुला	4	सम
वृश्चिक	3	तनाव एवं क्लेश
धनु	3	तनाव एवं क्लेश
मकर	3	तनाव एवं क्लेश
कुम्भ	7	सम्पत्ति वृद्धि या लाभ
मीन	7	सम्पत्ति वृद्धि या लाभ

उदाहरण पत्रिका के सूर्याष्टक वर्ग में कुम्भ एवं मीन में सात रेखाएं हैं, जिसका फल सम्पत्ति वृद्धि या लाभ है। अतः जब–जब सूर्य कुम्भ एवं मीन राशि में गोचर में भ्रमण करे तब–तब नये कार्य करना इस जातक के लिए लाभ दायक रहेगा। बिगड़ता हुआ कार्य बन जाएगा, शिक्षा की स्थिति अनुकूल होगी, संतान से सुख मिलेगा तथा लाभ होगा।

पर जब सूर्य कन्या राशि पर गोचर वश आएगा, तब मानसिक अशांति, क्लेश एवं पारिवारिक मनमुटाव होगा, शारीरिक अस्वस्थता होगी एवं प्रत्येक कार्य के प्रारम्भ में कुछ कठिनाइयां आएंगी।

इसी प्रकार अन्य ग्रहों के गोचर भ्रमण करते समय रेखाओं की संख्या के अनुसार फलादेश करना चाहिए।

(2) जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न में जब तीन रेखाओं से युक्त हो तो, जातक निश्चय ही दुर्बल, कमजोर एवं चिड़चिड़े स्वभाव का होता है। पर यदि सूर्य पांच या अधिक रेखाओं से युक्त होकर अपने स्व राशि या मित्र राशि में स्थित हो तो जातक का स्वास्थ्य उत्तम व ख्याति प्राप्ति होती है।

(3) सूर्य अपने राशि या मित्र राशि में न हो तथा मात्र दो या तीन रेखाओं से ही युक्त हो तो जातक सदैव बीमार रहता है।

(4) जन्मकुण्डली में जिस राशि में सूर्य हो, उससे 9 वां स्थान पिता का स्थान कहलाता है। 9वें पिता के स्थान में जितनी रेखाएं हों, उसका गुणा सूर्याष्टक वर्ग के योग पिण्ड से कर के 27 का भाग देने से जो शेष बचे उसे अश्विनी से गणना करने पर जो नक्षत्र आवे उस नक्षत्र पर शनि गोचर वश आने पर पिता की मृत्यु या मृत्यु तुल्य कष्ट समझना चाहिए।

    उदाहरण कुण्डली में सूर्य मिथुन राशि में है, मिथुन से नवम राशि कुंभ है, सूर्याष्टक वर्ग में कुंभ राशि में रेखा संख्या 7 है तथा सूर्य का योग पिण्ड 202 है।

    अतः 202X7=1414/27 भागफल 52 शेष 10, अब अश्विनी से 10 वां नक्षत्र मघा है, अतः जब शनि मघा नक्षत्र पर आएगा, तब पिता की मृत्यु या पिता को मृत्यु तुल्य कष्ट होगा।

(5) ऊपर नियम चार के अनुसार ही जब शनि दसवें या उन्नीसवें नक्षत्र पर होगा, तब पिता के भाई की मृत्यु या मृत्यु सम कष्ट होगा।

(6) राशि के अनुसार पिता के स्थान की रेखा संख्या को योग पिण्ड से गुणा कर 12 का भाग देने से जो शेष बचे उस राशि पर शनि आने से पिता को कष्ट समझना चाहिए।

पूर्व उदाहरण कुण्डली में पिता का स्थान कुंभ राशि हुई, जिसकी रेखा संख्या 7 है, अतः 7 को योग पिण्ड 202 से गुणा करने पर योगफल 1414 में 12 का भाग देने से शेष 10 बचा। अतः कुंभ राशि से 10 वीं राशि वृश्चिक में जब शनि गोचर में होगा, तभी पिता को मृत्युसम कष्ट समझना चाहिए।

यदि ऐसे समय में मारक दशा चल रही हो तो मृत्यु एवं अन्य दशा चल रही हो तो मृत्यु सम कष्ट समझना चाहिए।

(7) यदि एकाधिपत्य शोधन के उपरान्त सूर्य दो रेखाओं से युक्त जन्मकुण्डली में केन्द्र में बुध या मंगल के साथ बैठा हो तो जातक के जन्म के बाद पिता का भाग्योदय होता है।

(8) यदि सूर्य पाँच या छः रेखाओं से युक्त होकर चन्द्रमा के साथ बैठे जाय, तो उसके पिता की दुर्घटना से आकस्मिक मृत्यु होती है।

(9) पिता के जन्म लग्न से आठवीं राशि का लग्न उस का जन्म लग्न हो, या उसके जन्म लग्न में पिता की अष्टभेष बैठा हो तो उसके पिता की मृत्यु शीघ्र ही समझनी चाहिए।

(10) सूर्य छठे या 11 वें भाव में ही विशेष शुभदायी माना गया है। यदि सूर्य चार से अधिक रेखाओं से सम्पन्न होकर छठे या 11 वें स्थान में स्थित हो, तो वह जिस भाव में स्थित हो, उस भाव की तो वृद्धि करता ही है साथ ही वह जिस भाव का स्वामी होता है, उस भाव की भी वृद्धि करता है।

(11) यदि सूर्य 3 या 4 रेखाओं से युक्त होकर केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो उसके पिता की मृत्यु 18 वें वर्ष में समझनी चाहिए।

(12) यदि सूर्य दो या तीन रेखाओं से युक्त होकर राहु के साथ त्रिकोण में बैठा हो तो उसके जन्म के सात वर्षो बाद ही पिता की मृत्यु समझनी चाहिए।

(13) यदि सूर्य तीन या इससे कम रेखाओं से युक्त होकर शत्रु ग्रह में या शत्रु के साथ बैठा हो तो उस जातक की मृत्यु 42 वें वर्ष में होती है।

(14) सूर्य के योग पिण्ड को सूर्य स्थित राशि से आगे सातवीं राशि में पड़ी रेखा से गुणा कर गुणनफल में 27 का भाग देने से जो शेष बचे, अश्विनी से आगे उतनी ही संख्या वाले नक्षत्र पर बृहस्पति के आने पर पिता की दुर्घटना समझना चाहिए।

अतः 202x3=606/27 भागफल 22 शेष 12, अब अश्विनी से 12 वां नक्षत्र उत्तरा फाल्गुनी है, अतः जब गुरु उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र पर आएगा, तब पिता को किसी दुर्घटना का सामना करना पड़ सकता है।

(15) ऊपर संख्या 14 में की गई गणित के अनुसार ही जब इस नक्षत्र पर सूर्य आएगा, तब भी वह समय उसके पिता के लिए घातक एवं कष्ट दायक रहेगा।

(16) यदि सूर्य अष्टम स्थान में जितनी रेखाएं हो, उसे सूर्य के योग पिण्ड से गुणा कर गुणनफल में 12 का भाग देने पर जो शेष बचे उसे मेष से गिनने पर जो राशि आवे, उसी राशि पर शनि आने पर उस जातक की मृत्यु समझनी चाहिए। यदि दशा अनुकूल हो तो मृत्यु तुल्य कष्ट समझना चाहिए।

उदाहरणार्थ कुण्डली में सूर्य मिथुन राशि में है, उससे आठवीं राशि मकर में 3 रेखाएं हैं, तथा सूर्य के योग पिण्ड 202 है, अतः 202x3 =606/12= शेष 6 अर्थात् कन्या राशि पर शनि आने पर वह समय जातक के लिए मृत्यु या मृत्युसम कष्ट दायक रहेगा।

(17) सूर्याष्टक वर्ग में जिस राशि में सर्वाधिक रेखाएं हों, उस राशि में सूर्य आने पर शुभ कार्य करना चाहिए।

(18) यदि सूर्य अष्टक वर्ग में किसी राशि में एक भी रेखा न हो तो उस राशि पर सूर्य आने पर कोई भी शुभ कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए।

विवाहादि में इस प्रकार का विशेष विचार करना शुभ रहता है।

चन्द्र अष्टक वर्ग

अपने स्वयं के अष्टक वर्ग में जितनी रेखाएं हों उसका फल निम्न प्रकार से समझना चाहिए।

1. रेखा–बदनामी एवं घोर चिन्ता
2. रेखा–बीमारी, माता के स्वास्थ्य में क्षीणता
3. रेखा–सामान्य अनुकूलता
4. रेखा–गृह सुख, अनुकूलता
5. रेखा–मानसिक शान्ति, आत्म बल, चारित्रिक दृढ़ता।
6. रेखा–मानसिक उर्वरता, उच्च आदर्श एवं मौलिकता।
7. रेखा–श्रेष्ठ सद्गुणों से युक्त, दिव्यता।
8. रेखा–उच्चादर्श, पूर्णसुखी एवं समृद्ध जीवन एवं पूर्णता, प्रसन्नता।

(1) जब चन्द्रमा दो या तीन रेखाओं से युक्त हो तो व्यक्ति कमजोर एवं बीमार सा रहेगा। उसे निरन्तर उदर रोगों का सामना करना पड़ेगा, तथा उदर वायु रोग एवं मानसिक चिन्ता बनी रहेगी।

(2) जब चन्द्रमा दो रेखाओं से युक्त होकर किन्ही दो पाप ग्रहों या क्रूर ग्रहों के साथ स्थित हो तो जातक की उम्र ज्यादा से ज्यादा 36 वर्ष की होती है।

(3) जब चन्द्रमा दो रेखाओं से युक्त होकर राहु के साथ बैठा हो तो जातक विक्षिप्त सा रहता है, तथा उसका मस्तिष्क उसके नियंत्रण में नहीं रहता।

(4) चन्द्रमा जिस भाव में भी एक या दो रेखाओं से युक्त होकर बैठेगा, उस भाव की हानि करेगा। यदि चन्द्रमा दो रेखाओं से युक्त होकर भाग्य भाव में बैठेगा तो उसे भाग्य हीन बनाने में ही चन्द्रमा मदद करेगा।

(5) यही चन्द्रमा जब पाँच या इससे अधिक रेखाएं लेकर जन्मकुण्डली में छठे या ग्यारहवें भाव में बैठा हो, तो जातक निश्चय ही लखपति या धनवान होता है। यदि ऐसे चन्द्रमा के साथ गुरु पाँच या उससे अधिक रेखाएं लेकर बैठा हो या दृष्टि रखता हो तो उसका द्रव्य लोकोपकारी कार्यो में व्यय होता है।

(6) यदि चन्द्रमा तीन से कम रेखाओं से युक्त होता है, तो वह शत्रुओं द्वारा परेशान एवं पीड़ित रहता है।

(7) जब चन्द्रमा त्रिकोण भाव पंचम एवं नवम का स्वामी होकर जन्मकुण्डली में कहीं भी (8वाँ या 12वाँ भाव छोड़ कर) बैठा हो तो व्यक्ति तुरंत निर्णय लेने वाला, बुद्धिमान, आदर्श, कल्पना लोक में विचरण करने वाला होता है, पर इसके लिए यह आवश्यक है, कि ऐसा चन्द्रमा पाँच से अधिक रेखाओं से युक्त हो।

(8) चन्द्रमा से चौथी राशि में जितनी रेखाएं हों, उनसे चन्द्रमा के योग पिण्ड से गुणा कर 27 का भाग देने पर जो शेष बचे उसे अश्विनी से गणना कर आने वाले नक्षत्र पर जब शनि गोचर वश भ्रमण करता है, तब उसके माता की मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट समझना चाहिए।

उदाहरण कुण्डली में चन्द्रमा वृष राशि में है उससे चौथी राशि सिंह हुई। चन्द्रमा के अष्टक वर्ग में सिंह राशि में 4 रेखाएं है तथा चन्द्राष्टक वर्ग में चन्द्रमा का योग पिण्ड 139 है। अतः 139 x4=556/27 भागफल 20 शेष 16 बचे, अश्विनी से गणना करने पर 16वां नक्षत्र विशाखा है, अतः जब शनि विशाखा नक्षत्र पर आएगा, तब जातक की माता की मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट समझना चाहिए।

(9) चन्द्रमा जिस राशि में हो उससे चौथी राशि में जितनी रेखाएं हैं उसे चन्द्रमा के योग पिण्ड से गुणा कर गुणनफल में 12 का भाग दो, जो शेष बचे उसे मेष से गिनने पर उस राशि में शनि आने पर माता की मृत्यु समझनी चाहिए।

उदाहरण कुण्डली में चन्द्रमा वृष राशि में है, उससे चौथी राशि सिंह हुई, जिसकी रेखाएं चार हैं, इसे चन्द्रमा के योग पिण्ड 139 से गुणा करने पर गुणनफल 556 आया, इसमें 12 का भग देने पर भाग फल 46 तथा शेष 4 बचे। मेष से गिनने पर चौथी राशि कर्क है, अतः जब शनि कर्क राशि में गोचर भ्रमण करेगा तब जातक की माता की मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट समझना चाहिए।

(10) जब चन्द्रमा सात या आठ रेखाओं से युक्त होकर केन्द्र में बैठा हो तो जातक उच्च शिक्षा सम्पन्न, बुद्धिमान, शक्तिशाली, मस्तिष्क पर असाधारण नियंत्रण रखने वाला एवं चतुर होता है।

(11) जब चन्द्रमा शून्य या एक रेखा से युक्त होकर सातवें आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो जातक की माता की मृत्यु उसकी बाल्यावस्था में ही हो जाती है।

(12) चन्द्राष्टक वर्ग में जिस राशि में सबसे अधिक रेखाएं हों, उस राशि में चन्द्रमा जाने पर शुभ कार्य करने चाहिए। उदाहरण कुंडली में तुला में 6 एवं मीन में 6 रेखाएं हैं,

अतः इस जातक को अपने सभी शुभ कार्य तुला व मीन राशि के चन्द्र में करना लाभ प्रद रहेगा।

(13) जिस राशि में दो या तीन रेखाएं हों, उस राशि में जब गोचरवश चन्द्रमा जाए, तब शुभ कार्य नहीं करने चाहिए।

(14) यदि त्रिकोण या केन्द्र में चन्द्रमा दो या तीन रेखाओं से युक्त होकर नीच स्थान या शत्रु क्षेत्र में पड़ा हो तो वह चन्द्रमा जिस भाव में होता है, उस भाव का नाश करता है।

(15) चन्द्रमा दो या तीन रेखाओं से युक्त होकर सप्तम या अष्टम स्थान में स्थित हो तथा उस पर राहू की दृष्टि हो, तो जातक की माता चिररोगिणी बनी रहती है।

(16) यदि चन्द्रमा पाँच या इससे अधिक रेखाओं से युक्त होकर केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो ऐसा चंद्रमा जिस भाव में स्थित होता है, उस भाव की वृद्धि करता है।

(17) जब चन्द्रमा से मंगल सातवें या आठवें भाव में हो तथा चन्द्रमा दो या तीन रेखाओं से युक्त हो तो जातक तथा उसकी माता के बीच मतभेद बने रहते हैं।

(18) चतुर्थ भाव में पापग्रह हों तथा बारहवें भाव में चन्द्रमा दो या तीन रेखाओं से युक्त होकर स्थित हो तो जातक को चौतीसवें या सैंतीसवें वर्ष में माता से विछोह सहन करना पड़ सकता है।

(19) सात या आठ रेखाओं से युक्त चन्द्रमा यदि केन्द्र में स्थित हो तो जातक प्रसिद्धि, ख्याति, कीर्तिवान, यशस्वी एंव विद्या व्यसनी होता है।

(20) यदि क्षीण चन्द्रमा (चन्द्रमा जितना सूर्य के पास होगा, उतना ही क्षीण कहा जाएगा) लग्न में शून्य एक या दो बिन्दुओं से युक्त होकर स्थित हो तो जातक की मृत्यु दुर्घटना या विष से होती है।

(21) एकाधिपत्य शोधन के उपरान्त चन्द्राष्टक वर्ग में जितनी रेखाएं हों, उसे चन्द्रमा के योगपिण्ड से गुणा कर गुणनफल में 27 का भाग दें तथा जो शेष बचे उसे अश्विनी से गणना करने पर जो नक्षत्र आवे, उस नखत्र पर जब शनि आएगा, तब जातक को बड़ी भारी मुसीबत, मानहानि या पारिवारिक स्वजन की मृत्यु आदि का सामना करना पड़ेगा।

उदाहरण कुंडली में चन्द्राष्टक वर्ग में एकाधिपत्य शोधन के बाद कुल रेखाओं का योग 12 है, तथा योग पिण्ड 139 है, अतः 139X12 =1668 / 27 योग फल 61 शेष 21 अश्विनी नक्षत्र से गणना करने पर 21 वों नक्षत्र उत्तराषाढ़ होता है, अतः जब शनि उत्तराषाढ़ नक्षत्र पर आएगा, तब जातक को विशेष कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। उत्तराषाढ़ नक्षत्र से आगे दसवां नक्षत्र भी जातक को कष्टप्रद रहेगा। उत्तराषाढ़ नक्षत्र से 10 वें नक्षत्र कृत्तिका में जब शनि का गोचर भ्रमण होगा तब वह समय भी जातक के लिए अशुभ एवं कष्टप्रद रहेगा। इसी प्रकार उन्नीसवां नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी पर भी जब शनि गोचर वश भ्रमण करेगा, तब भी जातक को वैसी ही परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।

पाठकों की जानकारी हेतु नीचे क्रम से सत्ताईस नक्षत्रों को लिख रहे हैं, जिससे पाठकों को गणना करते समय परेशानी का सामना न करना पड़े।

1. अश्विनी 2. भरणी 3. कृतिका 4. रोहिणी 5. मृगशिरा 6. आर्द्रा 7. पुनर्वसु 8. पुष्य 9. आश्लेषा 10. मघा 11. पुर्वाफाल्गुनी 12 उत्तराफाल्गुनी 13. हस्त 14. चित्रा 15. स्वाती 16. विशाखा 17. अनुराधा 18. ज्येष्ठा 19. मूल 20. पूर्वाषाढ़ा 21. उत्तराषाढ़ा 22 श्रवण 23. धनिष्ठा 24. शतभिषा 25. पूर्वाभाद्रपद 26. उत्तराभाद्रपद 27. रेवती।

22. एकाधिपत्य शोधन के उपरान्त चन्द्राष्टक वर्ग की रेखाओं का फल –

1. 5 या इससे कम रेखाएं हों, तो जातक विक्षिप्त कमजोर बुद्धि वाला एवं सामान्य जीवन व्यतीत करने वाला होता है।
2. यदि 6 से 10 तक रेखाएं हों तो सामान्यतः सुखी जीवन, थोड़ा परिश्रम करने के बाद सफलता प्राप्त करने वाला, बाधाओं के साथ अपना भाग्योदय करने वाला लेकिन परोपकारी होता है।
3. यदि 11 से 15 रेखाएं हों तो ऐसा जातक मेधावी, मस्तिष्क पर अद्भुत नियंत्रण रखने वाला, तुरन्तु निर्णय लेने वाला, बुद्धिजीवी, साहसी, परोपकारी, आध्यात्मिक विचारों से ओतप्रोत सफल जातक होता है।
4. यदि 16 या इससे अधिक रेखाएं हों तो वह जातक श्रेष्ठ एवं अद्भुत व्यक्तित्व का धनी, धनकुबेर, समाज में सम्मानित एवं श्रेष्ठ मनुष्य होता है।

भौमाष्टक वर्ग

भोमाष्टक वर्ग में एक से आठ रेखाओं का फल निम्न प्रकार से समझना चाहिए –

1. रेखा– निर्बलता, शारीरिक कमजोरी या अंग–भंग।
2. रेखा– असत्य भाषी, एकान्तप्रिय, बाधाओं एवं परेशानियों से घिरे रहना।
3. रेखा– कठोर जीवन ज्ञापन को बाध्य, झूठा लांछन लगना तथा कहने एवं करने में अन्तर होना।
4. रेखा– सम या मध्यम, न अच्छा न बुरा दोनों।
5. रेखा– अप्रत्याशित लाभ, विजय, शत्रु, परास्त होना, सहायता प्राप्त होना।
6. रेखा– राज्य कृपा एवं मित्रों से सहयोग, कार्यों में पूर्ण विजय।
7. रेखा– आर्थिक लाभ, पारिवारिक सहयोग एवं भाईयों से विशेष लाभ मिलता है।
8. रेखा– धनी, भूमि लाभ, कृषि लाभ, पूर्ण सफलता, शत्रुओं पर विजय मिलना।

मंगल का अष्टक वर्ग में विशेष स्थान है, इससे सहयोग, भाई की मृत्यु का समय, कृषि, मकान बनाना, भूमि लाभ, धन सम्पत्ति एवं पारिवारिक सुख का ज्ञान किया जाता है। इसका विशेष फल नीचे दिया जा रहा है।

1. जन्म कुण्डली में जिस राशि में मंगल स्थित हो, उससे आगे की तीसरी राशि में जितनी रेखाएं होंगी, उस जातक के उतने ही भाई बहिन होंगे, फलदीपिका के अनुसार– भौमात्तृतीय राशिस्थ फलै भ्रातृगणं वदेत्'' अर्थात् मंगल से आगे की तीसरी राशि में स्थित रेखाओं की संख्या ही उसके भाई बहिनों की संख्या होगी।

   उदाहरण जन्मकुण्डली में मंगल वृष राशि में है, वृष राशि से तीसरी राशि कर्क हुई, भौमाष्टक वर्ग में कर्क राशि में चार रेखाएं हैं, अतः संबंधित जातक के चार भाई बहिन होंगे।

2. जब मंगल जन्मकुण्डली में केन्द्र या त्रिकोण में हो तथा सात या आठ रेखाओं से युक्त हो तो वह व्यक्ति निश्चित ही लखपति बनता है, इसमें सन्देह नहीं है।
3. मंगल वृश्चिक राशि या मकर राशि में आठ रेखाओं से युक्त होकर नवम भाव या लग्न, चतुर्थ तथा दशम भाव में स्थित हो तो वह व्यक्ति करोड़पति होता है।

4. सात या आठ रेखाओं से युक्त होकर मंगल मेष, सिंह धनु या मकर राशि में हो तो बड़ा पूंजीपति होता है, और यदि चार रेखाओं से युक्त ऐसा मंगल स्थित हो तो भूमि पति बनता है।

5. आठ रेखाओं से युक्त मंगल लग्न या दशम भाव में हो तो व्यक्ति के जीवन में द्रव्य का अभाव नहीं रहता, यदि ऐसा मंगल उच्च का हो तो वह उत्तम कीर्ति के साथ करोड़पति होता है।

6. मंगल कारक ग्रह होकर जन्मकुण्डली में कहीं भी आठ रेखाओं से युक्त हो तो निश्चित ही वह जातक प्रतापी सामर्थ्यवान एवं धनी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

7. मंगल आठ रेखा युक्त होकर मकर, मेष या वृश्चिक का होकर चतुर्थ या दशम भाव में स्थित हो तो वह व्यक्ति मंत्री या विभाग प्रमुख बनता है।

8. सात या आठ रेखाओं से युक्त मंगल दूसरे या दसवें भाव में हो तो जातक केन्द्रीय सरकार में उच्च पदाधिकारी होता है।

9. चार रेखाओं से युक्त मंगल मेष, मकर, या वृश्चिक राशि का होकर सूर्य लग्न, चन्द्र लग्न या जन्म लग्न में हो तो जातक को जीवन में द्रव्य का अभाव सहन नहीं करना पड़ता।

   उदाहरण कुंडली में मंगल लग्न में चन्द्र के साथ चार रेखाओं से युक्त है, अतः इस जातक को अपने जीवन में कभी–भी धन की कमी नहीं रही। क्योंकि यहाँ मंगल जन्म लग्न एवं चन्द्र लग्न दौनों में ही एक ही स्थिति में है।

10. भौम निर्बल हो अर्थात् शून्य या एक दो रेखाओं से युक्त हो तो भाई दिर्घायु होते हैं।

11. एकाधिपत्य शोधन के उपरान्त मंगल की जितनी रेखाएँ हों, उससे मंगलाष्टक वर्ग के योग पिण्ड से गुणा कर 27 का भाग देने से जो शेष बचे वहाँ तक अश्विनी नक्षत्र से गणना करने पर जो नक्षत्र बने उस नक्षत्र पर शनि आने से भाई को कष्ट या भाई की मृत्यु समझनी चाहिए।

उदाहरण कुण्डली में मंगलाष्टक वर्ग में एकाधिपत्य शोधन के उपरान्त मंगल की रेखा संख्या 4 तथा योग पिण्ड 159 का गुणा करने पर गुणफल 636 हुए, इसमें 27 का भाग दिया तो भागफल 82 एवं शेष 12 बचे अश्विनी से 12वां नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी है। अतः जब उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र पर शनि गोचर में आएगा, तब भाई को कष्ट समझना चाहिए।

12. एकाधिपत्य शोधनोपरान्त मंगल की जितनी रेखाएँ हों उसे मंगलाष्टक वर्ग में योगपिण्ड से गुणा कर 12 का भाग दें, तथा जो शेष बचे उसे मेष राशि से गणना करने पर जो राशि आए, उस राशि पर शनि आने से भाई को विशेष कष्ट समझना चाहिए।

    उदाहरण कुण्डली में मंगल रेखा 4 तथा योग पिण्ड 159 का गुणा करने पर गुणनफल 636 स्पष्ट हुआ, जिसमें 12 का भाग देने पर शेष 2 बचे। अतः जब वृष राशि पर शनि होगा, तब जातक के भाई को विशेष कष्ट रहेगा।

13. यदि क्षीण चन्द्रमा के साथ मंगल छः रेखाओं से युक्त होकर छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो जातक के कोई भाई नहीं होता, और यदि होता भी है, तो बचपन में ही उसकी मृत्यु हो जाती है।

14. जब मंगल कम रेखाओं से युक्त होकर लग्न में या चन्द्रमा के साथ हो तो वह पुत्र गोद लेता है। यदि ऐसा मंगल षष्ठेश होकर दूसरे भाव में स्थित हो तो वह स्वयं किसी दूसरे पुरुष की गोद में जाता है।

15. जब तीसरे भाव में मंगल दो या तीन रेखाओं से युक्त होकर शनि के साथ स्थित हो तो उस जातक को भाईयों का सुख नहीं मिलता।

16. जब तीसरे भाव में छह रेखाओं से युक्त होकर मंगल स्थित हो तो जातक को अपने भाई से सम्पत्ति लाभ होता है।

17. जब लग्न स्थिर राशि का हो तथा तीसरे भाव का स्वामी पाँच या इससे ज्यादा रेखाओं से युक्त होकर द्विस्वभाव राशि में हो तो व्यक्ति आनन्दपूर्वक जीवन यापन करता है तथा उसे भाइयों का पूर्ण सुख मिलता है।

18. जब मंगल तीसरे भाव में पांच या इससे अधिक रेखाओं से युक्त हो तथा उसे शुभग्रह देखता हो तब उस व्यक्ति के कई भाई होते हैं तथा भाईयों से उसे पूर्ण सुख मिलता है।

19. जब मंगल दो या तीन रेखाओं से युक्त होकर शनि के साथ लग्न में हो तो उसे जवानी में ही भाई का बिछोह सहन करना पड़ता है।

20. जब मंगल तीन या इससे कम रेखाओं से युक्त होकर सप्तमेश के साथ कहीं भी बैठा हो तो उसे तीस से चौंतीस वर्ष की उम्र के बीच भाई गंवाना पड़ता है।

21. जब मंगल दो या इससे कम रेखाओं से युक्त होकर अष्टम स्थान में या अष्टमेश से युक्त हो तो जातक को भाई का सुख नहीं मिलता ।

22. जब शनि मंगल की परस्पर दृष्टि हो तथा मंगल पांच रेखाओं से अधिक बली हो तो जातक जीवन में राजनीतिक क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त करता है।

23. जब मंगल एक या दो रेखाओं से युक्त होकर बुध या गुरु के साथ दृष्टि संबंध करे तो उसका राजनीतिक जीवन चौपट हो जाता है।

24. जब शनि से दृष्ट मंगल पाँच या इससे अधिक रेखाओं से युक्त होकर दसम भाव में विद्यमान हो तो वह जातक पुलिस या सेना के क्षेत्र में उच्चाधिकारी बनाता है।

25. जब मंगल उच्चाभिलाषी हो अर्थात् मिथुन राशि का हो तथा जन्म कुण्डली में षष्ठ, नवम या एकादश भाव में छह या इससे अधिक रेखाओं से युक्त हो तो जातक सेना में उच्च पद प्राप्त करता है।

26. छह या इससे अधिक रेखाओं से युक्त मंगल तीसरे भाव में हो तो जातक के जीवन में कोई भाई नहीं रहता।

एकाधिपत्य शोधन के उपरान्त भौमाष्टक वर्ग की कुल रेखाओं का फल –

1. जब 1 से 5 तक रेखाएं हों तो उसको भाईयों का सुख न के बराबर होता है अथवा उसके भाई होते ही नहीं हैं।
2. जब 6 से 10 तक रेखाएं हों तो भाई कम होते हैं, पर जीवन भर उनके साथ मतभेद बने रहते हैं।
3. जब 11 से 15 तक रेखाएं हों तो जातक को सामान्यतः भाइयों का सुख मिलता है, एवं कृषि अथवा भूमि सम्बन्धी कार्यो से भी लाभ होता है।
4. जब 16 से 20 रेखाओं के बीच हो तो वह व्यक्ति भूमिपति एवं सुखी सद्गृहस्थ होता है।
5. जब 21 से अधिक रेखाएं हों तो वह व्यक्ति विख्यात, धवल कीर्तियुक्त, करोड़पति होता है।

बुधाष्टक वर्ग

बुधाष्टक वर्ग में रेखाओं के आधार पर बुध का फल निम्न समझना चाहिए –

0. रेखा– अनिश्चित मनःस्थिति, कायर प्रकृति।

1. रेखा– जीवन में हानि एवं कष्टप्रद।

2. रेखा– प्रत्येक कार्य में असफलता, बाधा, पारवारिक मतभेद एवं जीवन यापन में कठिनाइयां।

3. रेखा– आकस्मिक रूप से अर्थ हानि, मान–हानि, धन–हानि इत्यादि ।

4. रेखा– व्यापार में भारी उतार चढ़ाव, नौकरी में कठिनाइयों का सामना।

5. रेखा– अधिकांश व्यक्तियों का सहयोग तथा दुसरों को अपने पक्ष में करने की सामर्थ्य।

6. रेखा– अनुभवी, लक्ष्य पर शीघ्रता से अग्रसर तथा कार्य में सफलता।

7. रेखा– पूर्ण सम्मान, उत्तम सामाजिक आदर, श्रेष्ठ धन सम्पत्ति एवं सुख।

8. रेखा– राज्यकृपा, पूर्ण भौतिक सुख एवं दिनोंदिन सम्मान वृद्धि।

1. बुध जिस राशि में स्थित हो, उससे चौथी राशि से कुटुम्ब, मामा एवं मित्र के बारे में विचार करना चाहिए। यदि इस राशि में चार या इससे अधिक रेखाएं हों तो उस जातक को मित्रों का पूरा सहयोग मिलता है। ननिहाल से लाभ होता है तथा कुटुम्ब में उसका सम्मान रहता है। पर यदि यह राशि शून्य एक दो या तीन रेखाओं से ही युक्त हो तो उसे पग–पग पर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। पारिवारिक मतभेद अथवा गलतफहमी बनी रहती है तथा मामा पक्ष की ओर से किसी भी प्रकार की सहायता प्राप्त नहीं होती।

2. बुध जिस राशि में स्थित हो, उससे पांचवी राशि से आध्यात्मिक साधना, लेखन, शिक्षा, प्रसिद्धि तथा यश की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। यदि उस पांचवी राशि में चार से अधिक रेखाएं हों तो जातक लेखन कला में निपुण, विद्याव्यसनी एवं सम्मान के साथ जीवित रहने वाला होता है।

3. बुधाष्टक वर्ग में जिस राशि में सर्वाधिक रेखाएं हों, उस राशि पर बुध आने पर कुटुम्ब

के सुख में वृद्धि तथा धनागम समझना चाहिए तथा जिस राशि में चार से कम रेखाएं हों उस राशि में बुध जाने पर धन हानि, सम्मानक्षति, व्यापारिक कार्यो में असफलता एवं कठिनाइयां समझनी चाहिए।

4. बुध सात या आठ रेखाओं से युक्त होकर केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो जातक व्यापारिक कार्यो में सफलता प्राप्त करता है या बैंकिग क्षेत्र में उच्च सफलता हस्तगत करता है।

5. जब दो या तीन रेखाओं से युक्त बुध छठे या आठवें भाव में स्थित हो तो उस जातक को पग–पग पर अपमानित होना पड़ता है तथा सहज ही कोई भी उसके कथन पर विश्वास नहीं करता।

6. जब बुध अपनी स्वराशि में या उच्च राशि में दो या तीन रेखाओं से युक्त होकर भी स्थित हो तो उस भाव की वृद्धि ही होती है।

7. जब बुध केन्द्र या त्रिकोण में चार से अधिक रेखाओं से युक्त हो तथा गुरु पर उसकी दृष्टि हो तो वह जातक वेदों में अथवा वेदाध्ययन में पारंगत होता है। अनुभव में आया है कि बुध कहीं भी (छटा आठवाँ स्थान छोड़कर) स्थित हो एवं पाँच या इससे अधिक रेखाओं से युक्त हो और उसे गुरु देख रहा हो तो ऐसा जातक वेदाध्ययन अवश्य करता है, तथा गूढ़ विद्याओं का जानकार होता है।

8. बुध पाँच रेखाओं से युक्त हो तथा शनि से केन्द्र में हो अथवा गुरु से केन्द्र या त्रिकोण में हो या लग्न से चौथे छठे या ग्यारहवें में हो तो जातक निश्चित ही ज्योतिष विद्या में प्रवीण एवं योग्य होता है।

9. बुध चार या इससे अधिक रेखाओं से युक्त होकर चन्द्र जिस राशि में है, उस राशि के स्वामी की राशि में या सूर्य जिस राशि में बैठा है उस राशि के स्वामी की राशि में बैठा हो तो वह व्यक्ति शिक्षा के क्षेत्र में सफल होता है एवं उच्चस्तरीय डिग्री प्राप्त करता है।

10. बुध पाँच या इससे अधिक रेखाओं से युक्त होकर शुभ ग्रह के साथ या शुभ ग्रह की राशि में बैठा हो तो जातक नृत्य संगीत आदि ललित कलाओं में योग्य एवं प्रवीण होता है।

11. जब चन्द्र राशि का स्वामी बुध के साथ छठे आठवें बारहवें भाव में बैठा हो, तथा बुध चार

या इससे कम रेखाओं से युक्त हो तो जातक की शिक्षा अधूरी रहती है अथवा शिक्षा में रुकावटें आती हैं।

12. जब बुध पंचम नवम या एकादश भाव में सूर्य के साथ स्थित हो तथा बुध अपने अष्टक वर्ग में चार रेखाओं से युक्त हो तो जातक उच्च कीर्ति प्रतिष्ठा एवं सम्मान का अधिकारी बनता है।

13. बुध चार या इससे अधिक रेखाओं से युक्त होकर जिस किसी भी भाव में बैठेगा, उस भाव की वृद्धि करेगा, लेकिन बुध छठे आठवें बारहवें भाव में स्थित हो तो बुध के पास जितनी कम रेखाएं होंगी उतना ही श्रेष्ठ फल रहेगा।

14. बुध जिस भाव में स्थित हो, उससे दूसरे भाव में यदि दो, एक या शून्य रेखाएं हों तो जातक अपने विचारों को स्पष्ट एवं दृढ़ता के साथ व्यक्त करने में असमर्थ होता है।

15. बुध कुण्डली में कहीं भी स्थित हो, पर यदि वह तीन रेखाओं से कम रेखाओं का स्वामी होगा, तब ऐसा जातक वाक्यचतुर नहीं होगा एवं जीवन में उसके कथन पर कम ही व्यक्ति विश्वास करेंगे।

16. बुध जिस भाव में स्थित हो उससे अगला भाव यदि सात या आठ रेखाओं से युक्त हो तो जातक निःसन्देह वाक्यचतुर, अपनी भाषण कला से दूसरों को प्रभावित करने वाला, कवि अथवा लेखक होता है।

17. बुध जिस राशि में स्थित हो उससे अगली राशि में यदि शून्य रेखा हो तो जातक हकला कम बोलने वाला होता है।

    1. रेखा हो तो जातक अपने विचारों को सही रूप से न तो व्यक्त कर पाता है और न सामने वाले को प्रभावित ही कर सकता है।

    2. रेखाएं हों तो व्यक्ति साधारण रूप से विचार व्यक्त करने वाला होगा, न तो उसकी वाणी में ओज होगा और न ही धारा प्रवाह होता है।

    3. रेखाएं हों तो जातक बातचीत करने वाला एवं असफलता पूर्वक दूसरों को प्रभावित करने वाला होता है।

    4. रेखाएं हों तो जातक वाचाल, प्रबुद्ध एवं भली प्रकार विचारों को अभिव्यक्त करने में समर्थ होगा।

5. रेखाएं हों तो जातक की वाणी में ओज, प्रवाह एवं माधुर्य होगा तथा कूटनीतिक वार्ता में होशियार होगा।
6. रेखाएं हों तो जातक विद्वान, कवि एवं श्रेष्ठ भाषण कर्ता होता है।
7. रेखाएं हों तो जातक भाषा को जिस रूप में चाहे व्यक्त कर सकता है एवं ऐसा प्रतीत होगा मानो शब्द उससे वशीभूत हों एवं शब्दों को भली प्रकार से प्रयोग में लाने में होशियार होता है।
8. रेखाएं हों तो जातक अति उत्तम भाषण करने वाला, धारा प्रवाह बोलने वाला, तथा दूसरों को प्रभावित करने में सभी तरफ से समर्थ होता है।

18. बुध जहाँ स्थित हो उससे अगली राशि में सूर्य हो तो जातक की वाणी में ओज, प्रवाह एवं प्रवाह में तेजस्विता होती है।
यदि चन्द्र हो तो स्वतंत्र एवं चातुर्य पूर्ण वार्ता में प्रवीण होता है।
यदि मंगल हो तो उसकी वाणी में कर्कशता एवं नाद होता है।
यदि गुरु हो तो उसकी वाणी में धीरता, गंभीरता एवं सरल होती है।
यदि शुक्र हो तो उसकी वाणी मधुर, सरल एवं दिव्य होती है।
यदि शनि हो तो उसकी वाणी में क्रूरता, कूटनीति एवं चतुराई होती है।
यदि राहु हो तो उसकी वाणी में व्यंग छिपा रहता है।
यदि केतु हो तो उसकी वाणी में मधुरता, स्पष्टता एवं नीति युक्त होती है।

19. जिस राशि में बुध हो उससे अगली राशि में जितनी रेखाएं हों, उससे बुधाष्टक के योगपिण्ड से गुणा करें एवं गुणनफल में 12 का भाग देने से जो शेष बचे, उसे मेष राशि से गिने, जो राशि हो, उस राशि के स्वामी की दशा या अन्तर्दशा में जातक की शिक्षा पूर्ण होती है, या उच्च डिग्री प्राप्त करता है, तथा विशेष धन लाभ भी होता है।

उदाहरण कुण्डली में बुध मिथुन राशि में है, बुध से दूसरी राशि कर्क की रेखा संख्या 2 में बुधाष्टक वर्ग के योग पिण्ड 213 उपरोक्तानुसार गणित इस प्रकार होगा। 213x2= 426/12 भागफल 35 एवं शेष 6 रहे। मिथुन से गणना करने पर छठी राशि वृश्चिक है, जिसका स्वामी मंगल है। अतः मंगल की दशा अन्तर्दशा में (मंगल की महादशा हो या किसी भी ग्रह की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा हो) में जातक को उपरोक्त फल प्राप्त होंगे। अथवा जब भी गुरु मंगल की वृश्चिक राशि पर गोचर में भ्रमण करेगा, तब भी उपरोक्त फल प्राप्त होगा।

20. बुध जिस राशि में स्थित हो उससे चौथी राशि में जितनी रेखाएं हों, उन्हें बुधाष्टक वर्ग के योगपिण्ड से गुणा कर गुणनफल में 27 का भाग दें, जो शेष बचे, उसे अश्विनी से गणना करने पर जो नक्षत्र आए, उस नक्षत्र पर जब शनि भ्रमण करेगा, तब जातक को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। ऐसे समय में पारिवारिक मतभेद बढ़ेंगे, मानसिक परेशानियों में वृद्धि होगी तथा व्यापारिक कार्यों में बाधा या हानि होगी।

उदाहरण कुण्डली में बुध मिथुन राशि में स्थित है। मिथुन से चौथी राशि कन्या राशि में 2 रेखाएं हैं, तथा योग पिण्ड 213 है, अतः 213x2=426/27 भागफल 15 तथा शेष 21 रहे। अश्विनी से इक्कीसवां नक्षत्र उत्तराषाढ़ा है। अतः जब उत्तराषाढ़ा नक्षत्र पर शनि गोचर में भ्रमण करेगा, तब जातक को उपरोक्त दुःखद घटनाओं का सामना करना पड़ेगा।

21. कुण्डली में बुध से दशम भाव में जितनी रेखाएं हों उन्हे बुद्ध के योग पिण्ड से गुणा कर 12 का भाग दें, जो शेष बचे उसे मेष राशि से गणना करें, जो राशि आएगी, उस राशि पर जब शनि गोचर में भ्रमण करेगा, तब जातक को व्यापारिक क्षति, पदावनति, राज्य च्युति, मुकदमा या आकस्मिक हानि की संभावनाएं रहेंगी।

उदाहरण जन्मकुण्डली में बुध मिथुन राशि में है। उससे दशम राशि मीन की रेखा संख्या 6 को योग पिण्ड 213 से गुणा किया 213x6=1278/12=106 शेष 6 मेष से छठी राशि कन्या है। अतः जब शनि कन्या राशि में गोचर भ्रमण करेगा, तब उपरोक्त फल जातक को भोगने पड़ेंगे।

गुरु अष्टक वर्ग

गुरु का फल रेखाओं के अनुसार निम्नानुसार विचार करें –

0 रेखा– पारिवारिक विरोध एवं कुटुम्ब में मतभेद।
1 रेखा– मानसिक परेशानियां एवं कमजोर स्वास्थ्य।
2 रेखा– रोजगार में बार–बार बाधा, राज्य की तरफ से चिन्ता एवं कठिनाइयां।
3 रेखा– स्मरण शक्ति में कमजोरी एवं ज्ञान की हानि।
4 रेखा– सामान्य, न लाभ न हानि।
5 रेखा– शत्रुओं पर विजय, मुकदमे में सफलता।
6 रेखा– पूर्ण वाहन सुख एवं धनी व्यक्तियों से लाभ।
7 रेखा– पूर्ण भाग्योदय, एवं प्रसन्नता।
8 रेखा– विख्यात, कीर्तियुक्त, धनी, श्रेष्ठ एवं दयालु।

1. गुरु जब पांच रेखाओं से युक्त होकर त्रिकोण में स्थित होता है तब जातक श्रेष्ठ विद्वान एवं अपने लक्ष्य में सफल होता है।
2. जब गुरु पांच या इससे अधिक रेखाओं से युक्त होकर छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो जातक दीर्घायु तथा विख्यात होता है।
3. गुरु के अष्टक वर्ग में जिस राशि में सबसे कम रेखाएं हों एवं ऐसी राशि में यदि सूर्य हो तो जातक बार–बार प्रयत्न करने के बाद भी भाग्यहीन रहता है एवं अपने लक्ष्य में सफल नहीं हो पाता।
4. जब गुरु अपनी ही राशि या अपनी उच्च राशि में सात या आठ रेखाओं से युक्त होकर स्थित हो तो जातक निश्चित ही राज्य सेवा में राजपत्रित अधिकारी होता है।
5. गुरु जिस भाव में बैठा हो उससे आगे की पांचवी राशि पुत्र का प्रतिनिधित्व करती है। यदि वह राशि पांच या इससे अधिक रेखाओं से युक्त हो तो जातक को पुत्र सुख मिलता है।
6. गुरु जिस राशि में हो उससे पांचवी राशि में रेखा संख्या यदि–

   0 रेखा हो तो उसके संतान नहीं होती।
   1 रेखा हो तो सन्तान होने की संभावनाएं धूमिल रहती हैं।
   2 रेखा हो तो सन्तान बिलम्ब से होती है तथा सन्तान की बुद्धि दुर्बल होती है।
   3 रेखा हो तो संतान अधिक होती है तथा सभी सामान्य स्तरीय होती हैं।
   4 रेखा हो तो संतान सुख सम रहता है एवं कुल संतान में से एक पुत्र प्रतिभाशाली होता है।
   5 रेखा हो तो संतान सुख रहता है तथा वृद्धावस्था में जातक की सेवा करते हैं।
   6 रेखा हो तो संतान प्रतिभाशाली एवं कुल के नाम को रोशन करने वाली होती है।
   7 रेखा हो तो पूर्ण संतान सुख मिलता है।
   8 रेखा हो तो संतान विख्यात कीर्तिवान एवं उच्च पदाधिकारी एवं धनी होती है।
7. सूर्य के वेध से युक्त गुरु यदि केन्द्र या त्रिकोण में स्व राशि या उच्च राशि में स्थित हो तथा वह 8 रेखाओं से युक्त हो तो ऐसा जातक पूरे देश में विख्यात होता है।
   7 रेखाएं हों तो धनी, विद्वान एवं गुणों की कद्र करने वाला होता है।
   6 रेखाएं हों तो जीवन भर उत्तम वाहन सुख भोग करने वाला, सुखी, अच्छा ग्रहस्थ एवं अपने कार्य में चतुर होता है।
   5 रेखाएं हों और गुरु उपर्युक्त योग बनाता हो, तो जातक निसन्देह अपने जीवन में सभी भौतिक सुखों को भोगता है।

8. जब गुरु छठे, आठवें, ग्यारहवें या बारहवें भाव में भी हो, पर यह पांच या इससे अधिक रेखाओं से युक्त हो तो जातक निश्चित ही धनी, मुकदमे या विवाद में विजय प्राप्त करने वाला तथा सुन्दर स्त्री का स्वामी होता है।

9. जब गुरु नीच राशि या शत्रु राशि में चार रेखाओं से कम हो तो वह व्यक्ति संतान की ओर से परेशान रहता है।

10 जब गुरु से छठे या आठवें चन्द्रमा शून्य या एक–दो रेखाओं से युक्त हो तो जातक का जीवन ऋण उतारने में ही व्यतीत होता है।

11. गुरु पांच या इससे अधिक रेखाओं से युक्त होकर चन्द्रेश की राशि में स्थित हो तो जातक विरोधी पार्टी का नेता होता है।

12. जब गुरु शून्य या एक दो रेखाओं से युक्त होकर कहीं भी बैठा हो तो उस जातक को जीवन में शिक्षा प्राप्त करने हेतु घोर कष्ट उठाना पड़ता है।

13. जब चन्द्रमा पांच रेखाओं से युक्त होकर तथा गुरु भी पांच या इससे अधिक रेखाओं से युक्त होकर परस्पर दृष्ट हों, तो जातक का गृहस्थ जीवन सुखमय व्यतीत होता है तथा वह धनी व्यक्तियों में गिना जाता है।

14. जब गुरु लग्न से केन्द्र में हो तथा शुक्र से भी केन्द्र में हो या शुक्र की राशि में हो तथा शुक्र गुरु की राशि में हो एवं गुरु पांच से अधिक रेखाओं का स्वामी हो तो जातक निस्सन्देह लखपति एवं विख्यात होता है।

15. लग्नेश दो रेखाओं से युक्त हो, लग्न पर क्रूर ग्रहों का आधिपत्य हो तथा गुरु तीन या इससे कम रेखाओं से युक्त हो तो जातक गरीब, सामान्य स्थिति में जीवन व्यतीत करने वाला एवं प्रसिद्धि से दूर रहता है।

16. गुरु लग्नेश के साथ हो या दोनों एक दूसरे से दृष्ट हों तथा दोनों ही सात या आठ रेखाओं से युक्त हों तो जातक विख्यात होता है तथा अपने कार्यो से कुल के नाम को रोशन करता है।

17. जब गुरु भाग्येश होकर केन्द्र में बैठे तथा छह या इससे अधिक रेखाओं से युक्त हो तो जातक प्रबल भाग्यवादी होता है तथा राज्य मंत्री पद को सुशोभित करता है।

18. जब गुरु अकारक ग्रह के साथ या शुक्र ग्रह के साथ दो या तीन रेखाओं से युक्त,

त्रिकोण में या स्व राशि में बैठे तो जातक की संतान निर्धन, अपव्ययी एवं दुश्चरित्र होती है।

19. जब पंचमेश अष्टम स्थान में हो और अष्टमेश पंचम स्थान में हो तथा गुरु चार रेखाओं से न्यून हो, तो जातक को पुत्र पौत्रों का अभाव महसूस होता है।

20. जब गुरु छठे या आठवें भाव में हो तथा एक या दो रेखाओं से युक्त हो तो तीसरे भाव में जितनी रेखाएँ होती हैं, उतनी ही संतान की मृत्यु उसे भोगनी पड़ती है।

21. यदि पंचमेश दो पापग्रहों के मध्य स्थित हो, तथा वह केवल दो या तीन रेखाओं से ही युक्त हो तो उसका पुत्र कुल कलंक होता है, तथा अपने कार्यो से वंश के गौरव को धूमिल करता है।

22. जब गुरु से आगे पंचम राशि में पाप ग्रह हो तथा पाँच से अधिक रेखाओं से युक्त हो तथा गुरु तीन रेखााओं से युक्त हो तो जातक किसी लड़के को गोद लेता है।

23. जब गुरु वक्री होकर चार रेखाओं से युक्त हो तो जातक के कुल तीन पुत्र होते हैं।

24. लग्न से पंचम स्थान एवं गुरु से पंचम स्थान पर जितनी भी रेखाएं हों, उनका योग कर दो से भाग दें, जो भागफल आएगा, उतनी ही संतान उसके होंगी, ऐसा विचार करना चाहिए।

उदाहरण पत्रिका में गुरु अष्टक वर्ग में लग्न से पंचम भाव में 5 रेखाएं एवं गुरु स्थित राशि से पंचम भाव में भी 5 रेखाएं हैं। इनके योग 10 में 2 का भाग देने पर भागफल 5 आया। निश्चित ही इस जातक को 5 संताने पैदा हुईं।

25. संतान कब होगी ? इसके लिए गुरु जिस राशि में हो, उससे पांचवी राशि में जितनी रेखाएं हों, उनसे गुरु के योगपिण्ड से गुणा कर 27 का भाग दो, जो शेष बचे उसे अश्विनी नक्षत्र से गिनो, जो नक्षत्र आये उस नक्षत्र पर जब गुरु गोचर वश आएगा, तब संतान का जन्म समझना चाहिए।

उदाहरण कुण्डली में गुरु तुला राशि में है, उससे पांचवी राशि कुंभ हुई, जिसकी रेखा संख्या 5 को गुरु के योग पिण्ड 98 से गुणा करने पर गुणनफल 490 आया, इसमें 27 का भाग देने पर भागफल 18 तथा शेष 6 रहे, अश्विनी से गणना करने पर छठा नक्षत्र आर्द्रा आया। अतः जब आर्द्रा नक्षत्र पर गुरु भ्रमण करेगा, तब संतानोत्पत्ति समझनी चाहिए।

संतानोत्पत्ति किस महीने होगी ? इसके लिए गुरु जिस राशि में हो, उससे पांचवी राशि में जितनी रेखाएं हों, उनका गुरु के योगपिण्ड से गुणा कर 12 का भाग दें, जो शेष बचे, उसे मेष राशि से गणना करें, जो राशि आवे उस राशि पर जब सूर्य भ्रमण करेगा, तब संतान जन्म समझना चाहिए।

पूर्व उदाहरण में गुरु से पांचवी राशि कुंभ में 5 रेखाएं हैं, जिसका गुरु के योग पिण्ड 98 से गुणा करने पर गुणनफल 490 आया, इसमें 12 का भाग दिया तो भागफल 40 तथा शेष 10 रहे, मेष राशि से गणना करने पर दसवी राशि मकर हुई। अतः जब मकर राशि पर सूर्य भ्रमण करेगा, तब संतान का जन्म समझना चाहिए।

कुछ विद्वानों के अनुसार गुरु के योग पिण्ड को 4 से ही गुणा कर गुणनफल में 12 का भाग देकर जो शेष बचे, उस राशि पर सूर्य के भ्रमण करते समय संतान जन्म समझना चाहिए।

26. गुरु से पंचम राशि में जितनी रेखाएं हों (एकाधिपत्य शोधन के उपरान्त) उसका गुरु अष्टकवर्ग की कुल रेखाओं (एकाधिपत्य शोधनोपरान्त) से गुणा कर 12 का भाग दो जो शेष बचे उसे मेष से गिनें, उस राशि पर जब सूर्य आएगा, तब पुत्र जन्म समझना चाहिए।

पूर्व उदाहरण में एकाधिपत्य शोधनोपरान्त कुल रेखाएं 7 हैं, तथा गुरु स्थित राशि से पंचम राशि में रेखा 0 है। अतः 7 ञ0त्र7ग्12 भागफल 0 तथा शेष 7 अर्थात् तुला राशि। अतः जब सूर्य तुला राशि पर गोचर भ्रमण करेगा, तब पुत्र जन्म समझना चाहिए।

27. गुरु किस ग्रह की कक्षा में है, यह देखना चाहिए। यदि वह स्व कक्षा में या मित्र कक्षा में हो तो अच्छा संतान सुख एवं शत्रु कक्ष में हो तो संतान का दुख रहता है।

ग्रह–कक्षा क्रम इस प्रकार है–

1. शनि 2. गुरु 3. मंगल 4. सूर्य 5. शुक्र 6. बुध 7. चंद्र 8. लग्न

उदाहरण कुण्डली में गुरु तुला राशि में बैठा है, सर्वाष्टक वर्ग में तुला राशि की रेखा संख्या 38 है, तथा गुरु के ग्रह पिण्ड 34 हैं। अतः 38÷34= भागफल 1 तथा शेष 4 बचे। अतः गुरु स्व–कक्षा में है। क्योंकि भागफल 1 की कक्षा शनि को गुरु पार कर चुका है और अपनी कक्षा में प्रवेश कर चुका है। अतः इस जातक को संतान सुख उत्तम है।

शुक्राष्टक वर्ग

निम्न रेखाओं के आधार पर शुकाष्टक वर्ग का विचार करना चाहिए।

0 रेखा– आकस्मिक दुर्घटना।
1 रेखा– श्वास संबंधी बीमारी।
2 रेखा– अकारण भाग दौड़ एवं कठिनाइयाँ तथा मानसिक परेशानियाँ।
3 रेखा– पारिवाकि मतभेद एवं अधिकारियों से मन मुटाव।
4 रेखा– सुख एवं दुख का मिश्रित प्रभाव।
5 रेखा– पारिवारिक सुख, मित्रों का सहयोग एवं उन्नति की इच्छाएँ।
6 रेखा– प्रेम संबंध बने रहना तथा विभिन्न सुख एवं उपभोग।
7 रेखा– जवाहरात के व्यवसाय या उद्योग से लाभ।
8 रेखा– समस्त प्रकार के भौतिक सुख एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति।

1. जब शुक्र छह, सात या आठ रेखाओं से युक्त होकर लग्न चतुर्थ पंचम सप्तम नवम या दशम में हो तो वह जातक जीवन भर ऐश्वर्यभोग करता है।
2. जब शुक्र छठे या बाहरवें भाव में चार रेखाओं से युक्त हो तो जातक धन, यश, मान–सम्मन एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।
3. जब शुक्र सात रेखाओं से युक्त होकर चतुर्थ भाव में हो तो जातक संगीत में रुचि लेने वाला होता है।
4. शुक्र का सर्वोत्तम स्थान द्वादश भाव माना गया है। इस भाव में वह निर्दोष (वक्री अस्त या नीचराशि गत न हो) तो उसे जितनी भी अधिक रेखाएं मिलेंगी, वह उतना ही अधिक सौभाग्यशाली माना जाएगा।
5. त्रिकोण में शुक्र चार रेखाओं से युक्त हो तो उसका सम्पर्क एक से अधिक स्त्रियों से रहता है।
6. जब शुक्र चार या इससे अधिक रेखाओं से युक्त होकर सप्तम स्थान में हो तो जातक का विवाह बाल्यावस्था में ही हो जाता है।
7. जब त्रिकोण में शुक्र छह या सात रेखाओं से युक्त हो तथा उस पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक के विवाह एक से अधिक होते हैं तथा कई स्त्रियों से प्रेम संबंध बने रहते हैं।

8. जब शुक्र पांच या इससे अधिक रेखाओं से युक्त होकर लग्न अथवा दसम भाव में स्थित हो, पर वह वक्री, नीच राशिस्थ अथवा अस्त न हो तो उसको उत्तम वाहनों का सुख प्राप्त होता है।

9. शुक्र जिस राशि में स्थित हो, उस राशि से बारहवीं राशि में (शुक्राष्टक वर्ग में) यदि पाँच या इससे अधिक रेखाएं हों, तो जातक निश्चित ही धनवान एवं यशस्वी होता है। देखिए – उदाहरण कुंडली में हैं।

10. जब शुक्र मंगल की राशि मेष या वृश्चिक में हो तथा पांच रेखाओं से ज्यादा रेखाएं शुक्र के पास हों तो जातक उत्तम कोटि के वाहन का अधिपति तथा ऐश्वर्य भोगी होता है।

11. जब शुक्र आठ रेखाओं से युक्त होकर त्रिकोण में हो तो जातक का विवाह मनोवांछित लड़की से होता है।

12. कन्या का विवाह उस महीने में किया जाना चाहिये, जिस राशि में शुक्राष्टक वर्ग में सबसे अधिक रेखाएं हों।

13. यदि शुक्र चन्द्रमा के साथ बैठा हो तथा पाँच से अधिक रेखाओं से युक्त हो तो जातक पूर्ण धनी, सुखी एवं समद्ध होता है।

14. चन्द्रमा से शुक्र छठे या आठवें भाव में हो तथा चार से अधिक रेखाओं से युक्त हो तो जातक का विवाह निर्धन कन्या से होता है।

15. जब शुक्र लग्न तथा चन्द्रमा दोनों से ही छठे, आठवें या ग्यारहवें हो तथा शुक्र तीन या इससे कम रेखाओं से युक्त हो तो जातक अपनी पत्नी से घृणा करता है।

16. यदि सप्तम भाव में मंगल हो तथा सप्तमेश मंगल या शनि की राशि में स्थित हो, एवं शुक्र दो या तीन रेखाओं से युक्त हो तो जातक की पत्नी का चरित्र संदिग्ध होता है।

17. जब शुक्र चार रेखाओं से युक्त हो तथा वक्री होकर सप्तम भाव में हो तो जातक का अपनी पत्नी की वजह से अपमान होता है।

18. शुक्राष्टक वर्ग में जिस राशि में सबसे कम रेखाएं हों, उस राशि की दिशा में पत्नि का पलंग न बिछा हो, अर्थात् यदि पूर्व दिशा हो तो पलंग उत्तर दक्षिण बिछाया जाना चाहिए।

19. मंगल स्वराशिस्थ हो एवं शुक्र पांच या इससे अधिक रेखाएं लेकर मेष या वृश्चिक राशि में स्थित हो तो जातक का गृहस्थ जीवन सुखमय नहीं रहता।

20. जिसका शुक्र सप्तम भाव में दो रेखाओं से युक्त हो एवं सप्तमेश अस्त हो तो ऐसे जातक का संबंध हल्के स्तर की परस्त्रियों के साथ रहता है।

21. जब शुक्र शून्य, एक या दो रेखाओं से युक्त हो तथा उस पर मंगल या शनि की दृष्टि हो तो जातक को अन्धी पत्नि मिलती है या विवाह के बाद थोड़े ही वर्षो में पत्नि अंधी हो जाती है।

22. जिस राशि में सबसे कम रेखाएं हों उस राशि पर जब सूर्य भ्रमण कर रहा हो, तब यदि जातक का विवाह होता है, तो जातक का गृहस्थ जीवन दुःखमय हो जाएगा।

23. जिस राशि में सबसे अधिक रेखाएं होती हैं (शुक्राष्टक वर्ग में) उस राशि की दिशा में यदि जातक का विवाह होता है, तो वह जीवन में सुखी सफल एवं समृद्ध गृहस्थ भोगी होता है।

24. शुक्राष्टक वर्ग में जिस राशि में सबसे कम रेखाएं हों, उस राशि की दिशा में यदि जातक का विवाह होता है, तो जातक का गृहस्थ जीवन असफल रहता है।

25. शुक्र जिस राशि में स्थित हो उस राशि से सप्तम राशि में जितनी रेखाएं हों उनको शुक्राष्टक वर्ग के योगपिण्ड से गुणा कर उसमें 27 का भाग दें, जो शेष बचे उसे अश्विनी से गिनें, जो नक्षत्र आए, उस नक्षत्र पर जब गुरु गोचर वश भ्रमण करेगा, तब जातक का विवाह समझना चाहिए।

उदाहरण कुण्डली में शुक्र मिथुन राशि में है। इससे सातवीं राशि धनु हुई, इसमें 2 रेखाएं हैं एवं शुक्राष्टक वर्ग का योगपिण्ड 121 है। अतः गणित इस प्रकार होगा। 121x2=242/27= भागफल 8 शेष 26 अश्विनी से 26 वाँ नक्षत्र उत्तराभाद्रपद है, अतः जब उत्तराभाद्रपद नक्षत्र पर गुरु होगा तभी जातक का विवाह होगा।

26. अथवा शुक्र से सातवीं राशि में जितनी रेखाएँ हों उन्हें शुक्र के योग पिण्ड से गुणा कर 12 का भाग दें, जो शेष बचे, उसे मेष से गिनें, जो राशि हो उस राशि पर जब गुरु भ्रमण करेगा, तब जातक का विवाह समझना चाहिए।

उदाहरण कुण्डली में शुक्र मिथुन राशि में है। इससे सातवीं राशि धनु हुई, इसमें 2 रेखाएं हैं एवं शुक्राष्टक वर्ग का योगपिण्ड 121 है। अतः 121x2=242/12= भागफल 20 शेष 2 मेष से दूसरी राशि वृष है। अतः जब वृष राशि पर गुरु होगा तब जातक का विवाह समझना चाहिए।

पूर्व उदाहरण कुण्डली में सूर्य मिथुन राशि तथा शुक्र भी मिथुन राशि में है, अतः मिथुन से सप्तम राशि वृश्चिक में 2 रेखाएँ हैं। चूंकि दोनों ग्रह एक साथ हैं अतः रेखा संख्या को द्विगुणित करने पर योग 4 रेखाएँ हुईं। इसमें शुक्र के योगपिण्ड 121 का गुणाकर 12 का भाग दिया 121x4=484/12= भागफल 40 शेष 4 यानि कर्क राशि पर जब सूर्य भ्रमण करेगा, जब जातक के विवाह का समय समझना चाहिए।

28. शुक्राष्टक वर्ग में गुरु से सप्तम राशि में जितनी रेखाएँ हों उससे शुक्र के योग पिण्ड से गुणा कर 27 का भाग दो, जो शेष बचे, उसे अश्विनी नक्षत्र से गिनें, उस नक्षत्र पर जब शनि गोचर करेगा, तब पत्नि (या पति) की मृत्यु समझनी चाहिए।

उदाहरण कुण्डली में गुरु तुला राशि में है। इससे सातवीं राशि मेष हुई, इसमें 6 रेखाएं हैं एवं शुक्राष्टक वर्ग का योगपिण्ड 121 है। अतः 121x6=726/27= भागफल 26 शेष 24 अश्विनी से 24 वाँ नक्षत्र शतभिषा है, अतः जब शतभिषा नक्षत्र पर शनि का गोचर भ्रमण होगा तब जातक की पत्नि की मृत्यु समझनी चाहिए।

29. जब शुक्र आठ रेखाओं से युक्त होकर लग्न में बैठा हो तो जातक को जवाहरात उद्योग से विशेष लाभ होता है।

शनि अष्टक वर्ग

शनि का अध्ययन निम्न रेखाओं के अनुसार किया जाना चाहिए।

0 रेखा – हो तो दरिद्र जीवन।
1. रेखा – धन हानि एवं सम्मान में कमी।
2. रेखा – स्वास्थ्य नरम, आलसी एवं अकर्मण्य।
3. रेखा – पुत्र की ओर से चिन्ता एवं पत्नि से परेशानी।
4. रेखा – दूसरों के सहयोग से उन्नति।

5. रेखा – धनवान, कुटुम्ब का अच्छा सुख।
6. रेखा – शिकारी, विरोधी पार्टी का नेता या दस्यु सरदार।
7. रेखा – कूटनीतीज्ञ, राजदूत या पदाधिकारी, पशुओं को रखने वाला।
8. रेखा – लखपति या बड़ा पूंजीपति, मुखिया, विधायक–सांसद या मंत्री।

1. शनि केन्द्र में हो तथा दो या तीन रेखाओं से युक्त हो तो जातक अल्पायु होता है।
2. जब शनि लग्न में तीन रेखाओं से कम रेखा युक्त हो तो जातक लगभग कंगाल जैसा जीवन व्यतीत करता है।
3. शनि के अष्टक वर्ग मे जिस राशि में शून्य रेखा हो, उस राशि पर जब शनि गोचर करे तो पूंजीपति भी कंगाल हो जाता है और उसे मृत्युतुल्य कष्ट होता है। देखिए –

   स्टालिन की कुण्डली, इनके शनि अष्टकवर्ग में वृश्चिक राशि में कोई रेखा नहीं है एवं जब शनि गोचर भ्रमण में वृश्चिक राशि पर आया, तब इन्हें जेल जाना पड़ा।
4. जब लग्न में शनि चार, पाँच, छह या सात रेखाओं से युक्त हो तो जातक जन्म से ही गरीब एवं दुखी जीवन व्यतीत करता है, जातक पारिजात ने भी इस मत को माना है।
5. जब शनि लग्न में पांच रेखाओं से युक्त हो तो जातक को विविध कष्टों का सामना करना पड़ता है।
6. छठे, आठवें या बारहवें को छोड़कर कहीं पर भी शनि यदि आठ रेखाओं से युक्त होकर स्थित हो तो जातक व्यापार में अतुल धन कमाता है, या मंत्री बनता है।
7. जब शनि पंचम भाव में पांच रेखाओं से युक्त होकर स्थित हो तो जातक गरीब एवं परेशानियों से घिरा रहता है।
8. जब शनि तुला मकर या कुंभ राशि का न हो तथा पांच या इससे अधिक रेखाएं लेकर चतुर्थ भाव में बैठा हो तो जातक की वृद्धावस्था अत्यन्त दुःखमय व्यतीत होती है।
9. जब शनि स्वराशि का होकर चार या पांच रेखाओं से युक्त त्रिकोण में बैठे तो उसे एक से अधिक स्त्रोतों से धन प्राप्त होता है।
10. शनि की श्रेष्ठ स्थितियों में तीसरा, छठा, नवां या ग्यारहवाँ भाव हैं। मेष लग्न हो तथा शनि चार रेखाओं से युक्त होकर उपर्युक्त भाव में किसी भी भाव में स्थित हो तो जातक लखपति, विख्यात एवं कीर्तिवान होता है।

11. जब शनि अस्त वक्री या नीच राशिगत हो तथा तीन चार रेखाओं से युक्त होकर लग्न, द्वितीयभाव या द्वादशभाव में हो। तो जातक अत्यन्त विपन्नावस्था में जीवन व्यतीत करता है।
12. जब अष्टमेश शनि से तथा लग्न से संबंधित हो या परस्पर दृष्ट हो या एक दूसरे की राशि में हो तथा शनि चार से अधिक रेखाओं से युक्त हो तो जातक भिक्षुक बन कर जीवन यापन करता है।
13. शनि से अष्टम भाव का जो स्वामी हो, वह सौम्य ग्रह हो और अपने अष्टक वर्ग में पांच से अधिक रेखाओं से युक्त हो तो जातक का जीवन सुखमय होता है।
14. शनि एवं चन्द्र की युति हो, शनि लग्न में स्वराशि का या उच्च राशि का न हो एवं पांच रेखाओं से कम हो तो जीवन में जातक को द्रव्य का अभाव नहीं रहता।
15. राहु एवं शनि की युति हो एवं शनि चार रेखाओं से ज्यादा का हो तो जातक को मिर्गी या फिट्स या दौरे आते रहते हैं।
16. शनि अपने अष्टकवर्ग में एक या दो रेखाओं से ही युक्त हो तो जातक की मृत्यु जन्म स्थान से दूर होती है।
17. जब त्रिकोण में शनि सात रेखाओं से युक्त होता है तब जातक धनाढ्य होता है।
18. शनि चार रेखाओं से ज्यादा का स्वामी होकर जिस भाव में भी बैठेगा, उस भाव की कार्य सिद्धि में बिलम्ब देगा। जैसे सप्तम भाव में होगा तो विवाह देरी से होगा, पंचम भाव में रहेगा तो संतान देरी से होगी।
19. जब शनि का संबंध दशम भाव के स्वामी से हो या शनि दशम भाव में हो तथा तीन रेखाओं से युक्त हो तो जातक जीवन में कई बार विदेश यात्राएं करता है।
20. जब दशम भाव का स्वामी त्रिकोण में बलवान होकर बैठे तथा उस पर शनि की दृष्टि न हो तो जातक विश्वविख्यात कीर्तिवाला होता है।
21. लग्न से शनि जहाँ स्थित है, उस मध्य में जितनी रेखाएं हैं, उनका योग करने पर जो योगफल आये, उस वर्ष में घोर कष्ट उठाना पड़ता है।

उदाहरण कुण्डली की वृष लग्न है तथा शनि कर्क राशि में है। वृष से कर्क के बीच (शनि अष्टक वर्ग में) 9 रेखाएं हैं। जातक ने नवें वर्ष में घोर कष्ट उठाया था।

22. शनि जिस राशि में है, उस राशि से लग्न तक के मध्य की जितनी रेखाएं हों, उतने वर्ष की आयु में भी कष्ट सहना होगा।

उदाहरण कुण्डली में शनि कर्क राशि में है तथा लग्न वृष है। कर्क से वृष तक 38 रेखाएं हैं। अतः जातक ने आयु के अड़तीसवें वर्ष में भी भयंकर कष्ट उठाया था।

23. उपरोक्त दोनों के योग वर्षो 9+38=47 में भी अर्थात जीवन के सैंतालीसवें वर्ष में भी जातक को घोर कष्ट सहन करना पड़ा था।

यदि इन तीन वर्षो में (9, 38 और 47) मारक दशा चल रही हो तो जातक की मृत्यु भी संभव है।

24. शनि से अष्टम स्थान में जितनी रेखाएं हों, उससे शनि के योग पिण्ड से गुणा करो व 27 का भाग दो, जो शेष बचे, उसे अश्विनी से गिनो। जब इस नक्षत्र पर शनि गोचर करेगा, तब उस जातक की मृत्यु समझनी चाहिए, उस नक्षत्र से दसवां तथा उन्नीसवां नक्षत्र भी घातक होता है।

उदाहरण जन्मकुण्डली में शनि कर्क राशि में है, इससे आठवीं राशि कुंभ है। कुंभ की रेखा संख्या 4 को शनि के योग पिण्ड 182 से गुणा कर 27 का भाग दिया 182x4 =728/27 भागफल 26 एवं शेष 26 रहे। अश्विनी से छब्बीसवां नक्षत्र उत्तराभाद्रपद है। अतः जब उत्तराभाद्रपद पर शनि गोचर वश भ्रमण करेगा, तब जातक की मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट समझना चाहिए।

उत्तराभाद्रपद से दसवां नक्षत्र पुनर्वसु तथा उन्नीवसवां नक्षत्र विशाखा पर भी शनि गोचर में भ्रमण करेगा, तब भी मृत्युतुल्य कष्ट रहेगा।

इसी प्रकार शनि का अध्ययन सही परिणामों पर पहुंचाने में सक्षम होता है।

सर्वाष्टक वर्ग

जितना ग्रहों का अध्ययन आवश्यक है उतना ही सर्वाष्टक वर्ग का अध्ययन भी आवश्यक है, जैसा कि पीछे बताया जा चुका है कि फलादेश के लिए अष्टक वर्ग पद्धति प्रामाणिक ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वसनीय भी है।

अब सर्वाष्टक वर्ग से फलादेश करने की विधि दी जा रही है।

1. जब किसी भाव में बीस या बीस से कम रेखाएं हों तो वह भाव अत्यन्त कमजोर एवं दुर्बल होता है, तथा उस भाव से संबंधित जो फल हैं, उसमें कमी समझनी चाहिए।

उदाहरणार्थ यदि पंचम भाव में या सप्तम भाव में यदि बीस या इससे कम रेखाएं हों तो पुत्र संबंधी बाधा या विवाह में विलंब या पत्नि कष्ट समझना चाहिए।

2. जिस भाव में 25 रेखाएं हों तो वह भाव न तो शुभ कहलाता है और न ही अशुभ उसे मध्यम की श्रेणी में रख सकते हैं।
3. जिस भाव में तीस या तीस से अधिक रेखाएं हों तो उसे श्रेष्ठ भाव कहा जा सकता है तथा उस भाव से संबंधित फल भी श्रेष्ठ समझना चाहिए।
4. कोई भी ग्रह चाहे स्व राशि या उच्च राशि का होकर केन्द्र में भी स्थित हो तथा कारक ग्रह भी हो लेकिन यदि वह भाव कम रेखाओं से युक्त हो तो वह ग्रह पूर्ण फल देने में असमर्थ रहता है।
5. मानसागरी ने प्रत्येक भाव में रेखाओं की संख्यानुसार निम्न फल माना है।

रेखा	फल
14	मरणप्रद
15	कष्टप्रद
16	शरीर पीड़ा एवं रोग वृद्धि
17	दुःख दायक
18	धनक्षय
19	बन्धुओं से कलह
20	व्यय
21	रोग
22	मतिभ्रम
23	अर्थ हानि, दुःख
24	आकस्मिक व्यय
25	सामान्य,
26	क्लेश
27	शुभ न अशुभ
28	धनागम से सुखी
29	पूज्यनीय,
30	सम्मान वृद्धि
31	दिनोंदिन सुख की वृद्धि
32–35	ऐश्वर्य
36–40	पूर्ण भौतिक सुख
41–45	परमोच्च सुख।

6. अनुभव में आया है कि प्रत्येक भाव में कम से कम निम्न प्रकार से रेखाएं हों तो वह भाव समृद्ध रहता है।

लग्न	28 रेखाएँ
दूसरा भाव	27 "
तीसरा भाव	33 "
चौथा भाव	32 "
पांचवा भाव	27 "
छठा भाव	38 "
सातवां भाव	25 "
आठवाँ भाव	24 "
नवाँ भाव	33 "
दसवाँ भाव	38 "
ग्यारहवाँ भाव	57 "
बारहवाँ भाव	24 "
योग	386 रेखाएं

अनुभव में ऐसी बहुत ही कम जन्पत्रिकाएं आई हैं, जिनके ग्याहवें भाव में 57 रेखाएं हों तथा व्यय भाव में 24 हों, परन्तु यह अधिक शुभ रहता है जब बारहवें भाव में जितनी रेखाएँ हों, उससे ड्योढ़ी रेखाएं ग्यारहवें भाव में हों। इसी प्रकार दसम भाव से ग्यारहवें भाव में भी ड्योढ़ी रेखाएं होना अच्छा माना जाता है।

उदाहरणार्थ यदि चतुर्थ भाव में 32 रेखाएं हों तो समझना चाहिए कि जातक के पास भूमि, वाहन सम्पत्ति का अच्छा सुख है। एवं उसे माता का सुख भी उत्तम श्रेणी का प्राप्त होगा। इस प्रकार से ऐश्वर्यशाली वह व्यक्ति होगा।

6. कुण्डली के चार भाव विशेष महत्वपूर्ण हैं। लग्न, नवम, दशम तथा एकादश भाव। यदि इनमें से प्रत्येक भाव में चौबीस रेखाओं से कम रेखाएं हों तो वह जातक जीवन भर दरिद्री बना रहता है।
7. छठा आठवां, बारहवां तथा दूसरा भाव इन चारों की संयुक्त रेखा संख्या से लग्न, तीसरा भाव नवम भाव तथा एकादश भाव की संयुक्त रेखा संख्या अधिक हो तो वह व्यक्ति भाग्यवान होता है, तथा यदि रेखा संख्या कम हो तो वह दरिद्र जीवन व्यतीत करता है।

8. दशम भाव से ग्यारहवें भाव में रेखाएं अधिक हों, ग्यारहवें से बारहवें में रेखाएं कम हों, तथा बारहवें से लग्न में रेखाएं ज्यादा हों तो जातक सुख समृद्ध एवं सफल जीवन व्यतीत करता है।
9. लग्न में जितनी रेखाएं हों, उतने वर्ष जीवन के व्यतीत होने पर वह व्यक्ति धन, मान, यश, प्रतिष्ठा एवं सम्मान का भागी होता है।
10. जिस राशि में चन्द्र हो वह राशि, सूर्य स्थित राशि तथा लग्न स्थित राशि, इन तीनों ही राशियों में यदि प्रत्येक में तीस से अधिक रेखाएँ हों तो जातक पराक्रमी एवं यशस्वी होता है।
11. दूसरा, नवाँ, दसवाँ, तथा ग्यारहवाँ इन चारों ही भावों में तीस से अधिक रेखाएं हों तो जातक विख्यात धनवान होता है।
12. चतुर्थ भाव में तीस से अधिक रेखाएं हों, तथा चतुर्थेश जिस भाव में बैठा है, वह भाव भी तीस रेखाओं से अधिक सम्पन्न हो तो जातक को गृह एवं वाहन का पूर्ण सुख प्राप्त होता है।
13. द्वादश भाव का स्वामी शनि की राशि में हो और लग्नेश निर्बल हो, तो लग्न में जितनी रेखाएं हों, उतने ही वर्ष जातक की आयु समझनी चाहिए।
14. यदि तृतीय भाव में पच्चीस से कम रेखाएं हों, तथा तीसरे भाव पर शनि की दृष्टि हो तो जातक को पग पग पर अपमान का सामना करना पड़ता है।
15. किस आयु में पूर्ण सुख मिलेगा, इसके लिए बारह राशियों के तीन भाग करें।

1. मीन से मिथुन
2. कर्क से तुला
3. वृश्चिक से कुंभ

इन राशियों की रेखाओं का योग करके रख लें। प्रथम भाग बाल्यावस्था, दूसरा भाग यौवनावस्था तथा तीसरा भाग वृद्धावस्था का सूचक है। जिस भाग में सर्वाधिक रेखाएं हों वह भाग ज्यादा सुखी व्यतीत होता है।

उदाहरण जन्मकुण्डली में–

1. मीन से मिथुन तक रेखाएं–	वाल्यावस्था–	48+35+32+25=140
2. कर्क से तुला तक रेखाएं–	यौवनावस्था–	34+34+27+38=133
3. वृश्चिक से कुंभ तक रेखाएं–	वृद्धावस्था–	28+20+26+39=113

अतः स्पष्ट हुआ कि बाल्यावस्था सर्वाधिक सुखी एवं यौवनावस्था मध्यम व्यतीत होगी, पर वृद्धावस्था में कुछ कष्ट रहेगा।

वैसे जिस अवस्था में 128 तक रेखाएं हों, वह सामान्यतः सुखी अवस्था कही जानी चाहिए। यदि सीमा से कम रेखाएं हों तो उसी अनुपात में सुख में कमी रहेगी।

16. इसके साथ ही एक दूसरा मत भी है। कि लग्न से द्वादश भाव तक चार–चार राशियों के तीन विभाग करें, जिस अवस्था में रेखाएं ज्यादा हों वह अवस्था श्रेष्ठ समझी जानी चाहिए।

पूर्व उदाहरण कुण्डली के अनुसार–

बाल्यावस्था–	लग्न से चतुर्थ भाव तक	32+25+34+34=125
यौवनावस्था–	पंचम से अष्टम भाव तक	27+38+28+20=113
वृद्धावस्था–	नवम से द्वादश भाव तक	26+39+48+35=148

यह मत अधिक सही पाया गया है।

17. इसके साथ ही एक दूसरा मत भी है। कि लग्न से द्वादश भाव तक चार–चार राशियों के तीन विभाग करें, पर अष्टम भाव तथा द्वादश भाव की रेखा संख्या नहीं गिने। जिस अवस्था में रेखाएं ज्यादा हों वह अवस्था श्रेष्ठ समझी जानी चाहिए।

बाल्यावस्था–	लग्न से चतुर्थ भाव तक	32+25+34+34=125
यौवनावस्था–	पंचम से अष्टम भाव तक	27+38+28+00=93
वृद्धावस्था–	नवम से द्वादश भाव तक	26+39+48+00=113

अष्टम द्वादश भाव में रेखाएं होने पर भी शून्य लिखा जाता है। इस हिसाब से बाल्यावस्था श्रेष्ठतम रहेगी। परन्तु अनुभव में यह मत सही नहीं पाया गया है।

18. किस दिशा में भाग्योदय होगा। इसके लिए राशियों की दिशा निम्न है –

पूर्व दिशा–	मेष, सिंह, धनु
दक्षिण दिशा–	वृष, कन्या, मकर
पश्चिम दिशा–	मिथुन, तुला, कुंभ
उत्तर दिशा–	कर्क, वृश्चिक, मीन

प्रत्येक राशि में जो रेखाएं हों उन्हें जोड़ लें। जिस दिशा में सर्वाधिक रेखाएं हों, उसी दिशा में व्यापार करने पर या जाने पर भाग्योदय होता है।

उदाहरण जन्मकुण्डली के अनुसार–

पूर्व–	35+34+20= 89
दक्षिण–	32+27+26= 85
पश्चिम–	25+38+39= 102
उत्तर–	34+28+35= 97

अतः यह स्पष्ट है कि जातक का भाग्योदय पश्चिम दिशा में होगा। यह सिद्धान्त सत्यता की कसोठी पर सही नहीं उतरता। इस संबंध में एक और विधि है, जो सही है।

लग्न पंचम एवं नवम पूर्व दिशा, दसम षष्ठ द्वितीय दक्षिण दिशा, सप्तम तृतीय एकादश पश्चिम दिशा तथा चतुर्थ अष्टम एवं व्यय उत्तर दिशा होगी।

पूर्व–	32+27+26= 85
दक्षिण–	39+38+25= 102
पश्चिम–	28+34+48= 110
उत्तर–	34+20+35= 89

19. यदि लग्नेश चतुर्थ भाव में हो एवं चतुर्थ लग्न भाव में हो तथा दोनों ही भाव तीस रेखाओं से सम्पन्न हों तो जातक उच्च अधिकारी या मन्त्री बनता है।
20. लग्न में, चतुर्थ भाव में एवं एकादश भाव में से प्रत्येक में यदि तीस से अधिक रेखाएं हो तो जातक विख्यात धनी एवं कीर्तिवान होता है।
21. चौथे भाव एवं नवम भाव में यदि 25 से 30 तक रेखाएं हों तो जातक का भाग्योदय 28 वर्ष के बाद होता है।
22. यदि लग्नेश चतुर्थ भाव में हो, और चतुर्थेश लग्न में हो, तथा लग्न भाव एवं चतुर्थ भाव दोनों ही तीस रेखाओं से अधिक सम्पन्न हों तो जातक आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न एवं सुखी रहता है।
23. मंगल स्वराशिस्थ हो, सूर्य लग्न में हो, तथा गुरु चतुर्थ भाव में चालीस रेखाओं से अधिक से युक्त हो तो जातक को लखपति समझना चाहिए।
24. लग्न भाव जितना ही बली होगा व्यक्ति उतना ही ऊँचा उठ सकेगा।
25. लग्न से शनि राशि तक जितनी रेखाएं हों, उन्हें जोड़ें, तथा शनि स्थित राशि से लग्न तक की रेखाएं जोड़ें। इसी प्रकार लग्न से मंगल तक, एवं मंगल से लग्न तक जोड़ें, तथा इसी प्रकार लग्न से राहु तक जोड़ें योग को 7 से गुणा करें तथा 27 का भाग दें।

भागफल यह स्पष्ट करेगा कि किस वर्ष में परेशानी बाधा, झंझट आएगा, तथा जो शेष बचे उसे अश्विनी से गिनो, शेष संख्या तक के नक्षत्र पर जब वह ग्रह भ्रमण करेगा, तब विशेष कष्ट समझना चाहिए।

उदाहरण कुण्डली

- शनि कर्क राशि में है, तथा लग्न वृष है। वृष से कर्क तक की रेखाएं जोड़ी– 32+25+34=91x7 637/27 भागफल 23 शेष 16।
- 23 वें वर्ष में विशेष कष्ट होगा।
- 16 वां नक्षत्र विशाखा है। अतः जब विशाखा नक्षत्र पर शनि भ्रमण करेगा, तब विशेष कष्ट रहेगा।
- शनि राशि कर्क से लग्न राशि वृष तक की रेखाओं का योग–

  34+34+27+38+28+20+26+39+48+35+32=361x7=2527/27 भागफल 93 शेष 16 अर्थात।

  अतः जीवन में 93 वें वर्ष में विशेष कष्ट भोगना पड़ेगा, एवं जब विशाखा नक्षत्र पर शनि भ्रमण करेगा, तब भी विशेष परेशानी भोगनी होगी। इसी प्रकार मंगल एवं राहु का समझना चाहिए।

26. लग्न से गुरु तक एवं गुरु से लग्न तक की रेखाओं का योग कर सात से गुणा कर 27 का भाग दें जो भागफल आए वह भाग्योदय वर्ष एवं शेष तुल्य नक्षत्र भाग्योदय का समय होगा।

32+25+34+34+27+38=190

गुरु स्थित राशि से लग्न तक की रेखाओं का योग–

38+28+20+26+39+48+35+32=266

190x7=1330/27=49 शेष 7=पुर्नवसु नक्षत्र

जीवन में 49 वें वर्ष में श्रेष्ठ भाग्योन्नति होगी, तथा जब भी पुनर्वसु नक्षत्र पर गुरु होगा, तब श्रेष्ठ उन्नति का समय होगा।

266x7=1862/27=68 शेष 26 वाँ नक्षत्र उत्तराभाद्रपद नक्षत्र

जीवन के 68 वें वर्ष में भी भाग्योन्नति होगी, तथा उत्तराभाद्रपद नक्षत्र पर गुरु का भ्रमण समय उन्नति कारक रहेगा।

27 लग्न, चतुर्थ एवं एकादश भाव तभी पुष्ट कहे जाते हैं, जब कि वे तीस रेखाओं से अधिक समृद्ध हों।

28 चतुर्थ भाव एवं नवम भाव में यदि तीस से बत्तीस रेखाएं हों तो जीवन में 28 वें वर्ष में भाग्योदय होता है।

29 सूर्य मेष राशि में हो, एवं गुरु कर्क राशि में चालीस से अधिक रेखाओं से युक्त हो तो जातक उच्च वाहन का अधिपति एवं लखपति या करोड़पति होता है।

30 लग्न चालीस रेखा तक का हो, तथा मंगल गुरु शुक्र उच्च राशि में हों तो जातक करोड़पति होता है।

6. अष्टकवर्ग से गोचर फल

मूलतः गोचर फलादेश में चन्द्र को सर्वाधिक महत्व दिया गया है। गोचर का अर्थ है कि वर्तमान समय में कौनसा ग्रह किस राशि पर भ्रमण कर रहा है या चल रहा है।

एक प्रकार से समझा जाए तो अष्टकवर्ग का आधार गोचर है। चन्द्रमा मन का स्वामी है, सर्वाधिक तेज गति का ग्रह होने से चन्द्रमा को तो महत्व दिया ही जाना चाहिए, लेकिन अन्य ग्रहों के गोचर का भी अपना महत्व है। चन्द्र जिस राशि में है, उस राशि को लग्न मान के भी उसी प्रकार फलादेश किया जाता है, जिस प्रकार जन्मकुण्डली या लग्न को देखकर फलादेश कहने का प्रचलन है।

हमारी उदाहरण कुण्डली में वृष लग्न है, और चन्द्रमा भी वृष राशि में है। अतः गोचर विचार करते समय वृष राशि को लग्न, मिथुन राशि को धनभाव, कर्क राशि को पराक्रम भाव आदि समझकर जो फलादेश किया जाएगा वह सही प्रमाणिक एवं गोचर सिद्धान्तों के अनुकूल होगा।

चन्द्र लग्न या कुंडली की लग्न से निम्नलिखित स्थानों पर ग्रह शुभ फल प्रदान करते हैं।

सूर्य–	3, 6, 10, 11
चन्द्रमा–	1, 3, 6, 7, 10, 11
मंगल–	3, 6, 11
बुध–	2, 4, 6, 8, 10, 11
गरु–	2, 5, 7, 9, 11
शुक्र–	1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11, 12
शनि–	3, 6, 11
राहु–	3, 6, 10, 11
केतु–	3, 6, 10, 11

उदाहरण कुण्डली में चन्द्रमा वृष राशि में है, अतः चन्द्र लग्न वृष हुआ, जब सूर्य वृष राशि से तीसरे कर्क राशि में होगा, तब वह शुभ फलदायी रहेगा।

यहाँ यह ध्यान रखने की आवश्यकता है कि जब सूर्य से आगे सातवें भाव में गोचर में कोई ग्रह होगा, तो सूर्य का सीधा प्रभाव उस ग्रह पर पड़ेगा, और उस ग्रह का सीधा प्रभाव सूर्य पर होगा। अतः सूर्य अपना शुभत्व खो बैठेगा, और वह तीसरे भाव में होने पर भी शुभफल नहीं दे सकेगा। नीचे प्रत्येक ग्रह के शुभ स्थान और वेध स्थान दे रहे हैं।

सूर्य

शुभ गोचर स्थान– 3, 6, 10, 11
वेध स्थान 9, 12, 4, 5

अर्थात सूर्य हेतु तृतीय भाव शुभ माना गया है, परन्तु नवम् भाव में कोई भी ग्रह होने से (शनि के अतिरिक्त, क्योंकि शनि, सूर्य का पुत्र है, अतः पिता–पुत्र का वेध नहीं माना जाता) सूर्य का वेध होगा, फलस्वरूप सूर्य अपना शुभत्व खो बैठेगा।

इसी प्रकार सूर्य छठे भाव में शुभ है, पर बारहवें भाव में कोई ग्रह होगा तो शुभता खो बैठेगा। इसी प्रकार सूर्य दशम भाव में हो पर अन्य कोई एक या एकाधिक ग्रह चौथे भाव में हो, या सूर्य एकादश भाव में हो, और अन्य कोई ग्रह पाँचवे भाव में हो तो सूर्य का शुभत्व क्षीण हो जायगा।

इसी प्रकार अन्य ग्रहों के भी शुभ स्थान एवं वेध स्थान नीचे स्पष्ट कर रहे हैं।

चन्द्र

शुभ गोचर स्थान– 1, 3, 6, 7, 10, 11
वेध स्थान– 5, 9, 12, 2, 4, 8

चन्द्रमा को बुध का वेध को नहीं होता, क्योंकि बुध चन्द्रमा का पुत्र है।

मंगल

शुभ गोचर स्थान– 3, 6, 11
वेध स्थान– 12, 9, 5

बुध

शुभ गोचर स्थान– 2, 4, 6, 8, 10, 11
वेध स्थान– 5, 3, 9, 1, 8, 12

गुरु

शुभ गोचर स्थान– 2, 5, 7, 9, 11
वेध स्थान– 12, 4, 3, 10, 8

शुक्र

शुभ गोचर स्थान– 1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11, 12
वेध स्थान– 8, 7, 1, 10, 9, 5, 11, 3, 6

शनि

शुभ गोचर स्थान– 3, 6, 11
वेध स्थान– 12, 9, 5

गोचर फल का मूल आधार चन्द्र कुण्डली अर्थात जन्म राशि से ही होता है। सूर्य के पहले भाव का फल बताया जायगा, तो इसका अर्थ होगा, चन्द्र स्थित राशि प्रथम भाव है, अतः उस राशि में जब सूर्य होगा, तो संबंधित फल होगा, इसी प्रकार अन्य ग्रहों से बारे में भी समझना चाहिए।

सूर्य का प्रत्येक भाव में गोचर फल

1. प्रथम भाव में सूर्य जब गोचर में भ्रमण करता है, तब आर्थिक व्यय, व्यर्थ की परेशानी एवं प्रत्येक कार्य की सम्पन्नता में कुछ न कुछ बाधाएं आती हैं। छाती में दर्द, शीघ्र क्रोध का आना एवं व्यर्थ की यात्राएँ होती रहती हैं।

2. द्वितीय भाव में धन का नाश या अपव्यय, सुख में कमी, स्वभाव में जिद्दीपन, नेत्रों में तकलीफ तथा समयानुसार धोखे का शिकार होना पड़ता है।

3. तृतीय भाव में धन लाभ, आकस्मिक रूप से धन प्राप्ति, दूरस्थ स्थानों से शुभ एवं अनुकूल समाचार, रोगों से मुक्ति, शत्रुओं पर विजय, मुकद्दमें में लाभ, तथा मन में प्रसन्नता रहती है।

4. चतुर्थ भाव में पत्नी से विवाद, गृहस्थ जीवन में न्यूनता, शरीर में आलस्य, रोगवृद्धि तथा सुख के कार्यो में बाधाएं आती हैं।

5. पंचम भाव में शत्रुओं की वृद्धि तथा शरीर में अस्वस्थता एवं कार्यो में बाधाएं, मानसिक चिन्ता तथा मन में असंतोष रहता है।

6. छठे भाव में शत्रुओं पर विजय, मुकदमें में जीत, आत्मिक प्रसन्नता एवं स्वास्थ्य उत्तम रहता है।

7. सप्तम भाव में पेट, गुदा, लिंग या बवासीर संबंधित रोगों की वृद्धि, सम्मान में हानि, मानसिक खिन्नता एवं चित्त में व्याकुलता, व्यर्थ की यात्राएं, तथा जातक दीनता का शिकार होता है।

8. अष्टम भाव में समाज तथा रोजगार के क्षेत्र में परस्पर मतभेद आना एवं गलत फहमी उत्पन्न होना, पत्नि से झगड़ा तथा रोग वृद्धि होती है।

9. नवम भाव में मित्रों, संबंधियों एवं परिचितों से विग्रह, व्यर्थ की मुसीबत गले लगना, दीन–हीनता प्रदर्शित होती है। रोजगार–व्यवसाय में असफलता, दुर्घटना के योग, उदर संबंधी रोग तथा मानसिक तनावों में वृद्धि होती है।

10. दसम भाव में मनोवांछित कार्य में सफलता, उत्तम कोटि की पद–प्रतिष्ठा, भावनाओं की सन्तुष्टि एवं कार्य सम्पन्न होते हैं।

11. एकादश भाव में सम्मान, यश प्रतिष्ठा कीर्ति लाभ, आर्थिक लाभ, रोग से मुक्ति, कोई उच्च स्तर की सफलता एवं मनोनुकूल कार्य सिद्ध होते हैं।

12. द्वादश भाव में सही कार्यो में सही उपाय से सफलता, चरित्र में वृद्धि, शत्रु से पीड़ा, मानसिक क्लेश उत्पन्न होता है।

चन्द्र का प्रत्येक भाव में गोचर फल

चन्द्र गोचर में अपनी जन्मराशि से जिस भाव में विचरण करता है, उसका फल निम्न रहता है।

1. प्रथम भाव में भाग्य से मनोवांछित कार्य में सफलता, सुख सुविधाओं में वृद्धि एवं दूरस्थ मित्र का शुभ समाचार मिलना आदि।

2. द्वितीय भाव में सम्मान में हानि, निरादर, व्यर्थ का विवाद एवं मन में संताप वृद्धि, अपव्यय, आर्थिक दृष्टि से हानि तथा परेशानियों में वृद्धि होती है।

3. तृतीय भाव में विवाद में विजय, गृहस्थ जीवन में सम्पन्नता एवं सुख सुविधाओं में वृद्धि, आर्थिक दृष्टि से लाभ, भविष्य की उज्जवल संभावनाएं बनती हैं।

4. चतुर्थ भाव में दूसरों की विपत्ति अपने गले मढ़ना, राज्य से भय, चिन्ता, घबराहट, यात्रा में हानि, कार्य सिद्धि में बाधाएं तथा मानसिक उद्वेलन होता है।

5. पंचम भाव में व्यर्थ की चितांए, आर्थिक लाभ, शोक एवं व्यर्थ भ्रमण कराता है।

6. छठे भाव में सुख, सुविधाओं में वृद्धि, स्वास्थ्य लाभ, शत्रुओं पर विजय, मुकदमे में जीत के आसार बढ़ता है।

7. सप्तम भाव में सम्मान, सुख सुविधाओं में वृद्धि, कोई ऐसा कार्य या समझौता होना जिससे भविष्य में लाभ तथा धन लाभ मिलता है।

8. अष्टम भाव में व्यर्थ की बाधाएँ या परेशानियाँ, कार्य की सफलता में संदेह एवं अशुभ फल प्राप्त होते हैं।

9. नवम भाव में मानसिक चिन्ता, व्यर्थ भ्रमण, उदर रोगों में वृद्धि, धन हानि, रोजगार के क्षेत्र में असफलताएँ मिलती हैं।

10. दसम भाव में सफलता, कार्यसिद्धि, बाधाएँ दूर होना तथा अपने कार्य की संसिद्धि से प्रसन्नता, उत्साह, उच्चाधिकारियों से मदद मिलना, भावनाओं में सफलता मिलती है।

11. एकादश भाव में नये मित्रों से परिचय, रोजगार व्यापार में सफलता, शुभ समाचार मिलना तथा कठिन परिस्थितियों पर विजय प्राप्त होती है।

12. द्वादश भाव में दुर्घटना के योग, शत्रुओं द्वारा शारीरिक क्षति, व्यर्थ का व्यय, परेशानी एवं कठिनाई मिलती हैं।

मंगल का प्रत्येक भाव में गोचर फल

1. प्रथम भाव में कई प्रकार की कठिनाइयों में वृद्धि, कार्य सिद्धि में बाधाएँ एवं आर्थिक दृष्टि से परेशानी तथा चिन्ताएँ उत्पन्न होती हैं।

2. द्वितीय भाव में शासन अथवा उच्च अधिकारियों के द्वारा परेशानियाँ तथा वाद–विवाद उत्पन्न होना, मन में संताप एवं शत्रुओं द्वारा हानि पहुँचाना। वाक्य शक्ति में शिथिलता, सिरदर्द, मानसिक तनाव आदि में वृद्धि होती है।

3. तृतीय भाव में प्रत्येक कार्य में सफलता, आर्थिक कार्य क्षेत्र में अच्छी सफलता उच्च अधिकारियों से मित्रता एवं कार्य में सहयोग, धन प्राप्ति तथा शत्रुओं पर विजय मिलती है।

4. चतुर्थ भाव में रोजगार में हानि या अनुकूल स्थान की प्राप्ति न होना, ज्वर, उदर रोग, रक्तचाप, शुभ कार्यो में बाधाएं, बन्धुओं से विग्रह होता है।

5. पंचम भाव में शत्रुओ की बल वृद्धि होना तथा शत्रुओं का हावी होना, बुखार से कष्ट, चिन्ता, सफलता के मार्ग में व्यवधान, बन्धुओं से मतभेद तथा पुत्रों से वाद विवाद होता है।

6. छठे भाव में शत्रुओं पर विजय अथवा समझौता, रोग निवारण, कार्यों में सफलता तथा समस्त कार्यो में मन के अनुकूल स्थिति प्राप्त होती है।

7. सप्तम भाव में पत्नी से झगड़ा, ससुराल वालों से वाद विवाद, नेत्र रोग, उदर पीड़ा, रक्तचाप या रक्त संबंधित बीमारियों में वृद्धि होती है।

8. अष्टम भाव में खून की कमी, उच्च रक्तचाप, रोग वृद्धि, शत्रुओं द्वारा परेशानी, दुर्घटना योग, सिर में चोट लगना, धननाश, व्यर्थ का भ्रमण एवं कठिनाइयों में वृद्धि होती है।

9. नवम भाव में सम्मान, आदर, प्रतिष्ठा में कमी, धननाश, शारीरिक दुर्बलता, वीर्य दोष तथा कई प्रकार की बाधाएं उत्पन्न होती हैं।

10. दसम भाव में असफलता, शुभ कार्यो में विघ्न, परिश्रम करने पर भी सफलता के आसार नहीं बनते।

11. एकादश भाव में अप्रत्याशित सफलता एवं प्रत्येक कार्य में सिद्धि तथा प्रसिद्धि, आर्थिक लाभ, शत्रुओं पर विजय एवं अधिकारियों का विश्वास मिलता है।

12. द्वादश भाव में धनहानि, अप्रत्याशित झंझटें उत्पन्न होना, नेत्र पीड़ा, संबंधियों से विवाद, चिन्ता की वृद्धि होती है।

बुध का प्रत्येक भाव में गोचर फल

1. प्रथम भाव में आर्थिक हानि एवं परेशानियाँ, गलत एवं अयोग्य व्यक्तियों की सलाह से व्यर्थ की चिन्ताएं, यात्राएँ करने पर भी कार्य में सफलता नहीं मिलती।
2. द्वितीय भाव में प्रत्येक कार्य में बाधा तथा कठिनाइयाँ अपने किसी संबंधी रिश्तेदार के संबंध में अशुभ समाचार मिलना, न्यूनाधिक बाधाएँ होने पर भी आर्थिक लाभ होता है।
3. तृतीय भाव में शत्रुओं से हानि, शासकीय चिन्ता, अधिकारियों द्वारा परेशानी, व्यर्थ का वाद विवाद, मन में संताप, व्यर्थ की यात्राएं या इधर–उधर घूमना पड़ता है।
4. चतुर्थ भाव में काफी दिनों से रुका हुआ कार्य होना, आर्थिक लाभ, कठिनाइयों पर विजय, रिश्तेदारों के बारे में शुभ समाचार सुनना, धन लाभ एवं मानसिक सुख मिलता है।
5. पंचम भाव में पुत्रों द्वारा मानमर्दन, घरेलू कारणों से लड़ाई–झगड़े, परिणाम स्वरूप मन में संताप एवं परेशानीयों में वृद्धि होती है।
6. छठे भाव में समस्त शुभ कार्यो में विजय, प्रसिद्धि, ख्याति एवं आत्म सम्मान मिलता है।
7. सप्तम भाव में त्वचा से संबंधित रोगों में वृद्धि, उच्च रक्तचाप, आपसी व्यक्तियों के बीच मतभेद होना, बाधाएं, चिन्ता एवं अस्त व्यस्तता देता है।
8. अष्टम भाव में परिवार के सदस्यों में वृद्धि, कोई शुभ कार्य होना, धन लाभ एवं ऐसे सभी कार्य सम्पन्न होते हैं, जो किन्ही कारणों से रुके हुए थे, आर्थिक क्षेत्र में सफलता मिलती है।
9. नवम भाव में मानसिक परेशानियाँ तथा आर्थिक लाभ में व्यवधान तथा कठिनाइयाँ, शुभ कार्यो में निरंतर विघ्न आते रहते हैं।
10. दसम भाव में शत्रुओं का मानमर्दन होता है, धन संग्रह एवं रोजगार के कार्यो में विशेष सफलता, गृहस्थ जीवन में भौतिक सुविधाओं में वृद्धि, तथा विश्वसनीय मित्रों का सहयोग मिलता है।
11. एकादश भाव में सन्तान लाभ या संतान से लाभ, धन लाभ एवं आर्थिक क्षेत्र में विशेष सफलता, आत्मिक प्रसन्नता, तथा सभी प्रकार के सुख मिलते हैं।

12. द्वादश भाव में शत्रुओं द्वारा पराजय, मित्रों के सहयोग में बाधा, व्यर्थ का भ्रमण तथा विविध रोगों से ग्रसित होना एवं गृहस्थ जीवन में बाधाएं आती हैं।

गुरु का प्रत्येक भाव में गोचर फल

1. प्रथम भाव में आर्थिक क्षति, आकस्मिक बाधा एवं दैविक प्रकोप, अधिक दूरी की यात्राएं होना तथा धन हानि के योग बनते हैं।
2. द्वितीय भाव में भौतिक सुख सुविधाओं में वृद्धि, गृहस्थ जीवन में विशेष प्रसन्नता के समाचार मिलना, आर्थिक लाभ एवं दूसरों को प्रभावित करने में सफलता मिलती है।
3. तृतीय भाव में विद्यमान स्थिति में गिरावट, एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकने की प्रवृत्ति, व्यक्तिगत कार्यो में बाधाएं तथा मान हानि एवं आर्थिक चिन्ता रहती है।
4. चतुर्थ भाव में बन्धुओं द्वारा षडयंत्र रचना, चौपाये जानवर से शरीरिक क्षति, पिछले किये गये कार्यो का बुरा परिणाम भोगना पड़ता है।
5. पंचम भाव में परिवार में पुत्र उत्पन्न होना, संतान सुख, संतान की उन्नति, सर्वांगीण विकास, राज्य, शासन से लाभ तथा श्रेष्ठ अनुकूल समय रहता है।
6. छठे भाव में अपने चचेरे या ममेरे भाईयों से विवाद, रोग वृद्धि, मानसिक तनाव या मानसिक असन्तुलन, मित्रों द्वारा शत्रुवत् व्यवहार करना तथा आर्थिक क्षति होती है।
7. सप्तम भाव में सुख, समृद्धि एवं प्रसन्नता में वृद्धि, उत्तम स्वास्थ्य, लाभ में वृद्धि, उत्तम वाहन सुख या नया वाहन खरीदना तथा भाषण कला में वृद्धि होती है।
8. अष्टम भाव में रोग वृद्धि, व्यर्थ की यात्राएं एवं कार्य सिद्धि में बाधा तथा कठिनाईयां, विविध समस्याओं से सामना तथा आर्थिक हानि के योग बनते हैं।
9. नवम भाव में समस्त प्रकार के सुख सौभाग्य में वृद्धि एवं भाग्य से लाभ, प्रभाव, साहस में वृद्धि, तथा सम्मान, यश, कीर्ति में वृद्धि होती है।
10. दसम भाव में आर्थिक क्षेत्र में हानि, कार्य सिद्धि में रुकावटें या बिगाड़, पदच्युति, पदोन्नति में बाधा, संतान की ओर से चिन्ता, कोई अप्रिय समाचार मिलता है।

11. एकादश भाव में उत्तम स्वास्थ्य, पुत्र या पुत्र से लाभ, सम्मान कीर्ति, प्रशंसा एवं यश में वृद्धि होती है।

12. द्वादश भाव में आदर्श या अपने लक्ष्य में हानि, आर्थिक हानि, भय, चिन्ता एवं बुरे स्वप्न दिखाई देते हैं।

शुक्र का प्रत्येक भाव में गोचर फल

1. प्रथम भाव में समस्त प्रकार की सुख सुविधाओं में वृद्धि एवं आत्मिक प्रसन्नता के साथ सुखमय जीवन में वृद्धि, आर्थिक लाभ तथा अनुकूल अवसरों में वृद्धि होती है।

2. द्वितीय भाव में आर्थिक लाभ मिलने से मानसिक प्रसन्नता, विविध स्त्रोतों से धनागम, आनन्दमय जीवन, प्रत्येक कार्य में सिद्धि एवं श्रेष्ठता प्राप्त होती है।

3. तृतीय भाव में आर्थिक दृष्टि से श्रेष्ठ फल, रोजगार–व्यापार में सफलता, सम्मान, यश कीर्ति में वृद्धि होती है।

4. चतुर्थ भाव में नये–नये मित्र बनना एवं मित्रों से लाभ, शत्रुओं पर विजय, तथा आर्थिक स्थिति में सुधार होता है।

5. पंचम भाव में सन्तान सुख, परिवार या कुल में संतान का जन्म, अर्थलाभ, संतान के कार्यो में सम्मान, यश एवं कीर्ति लाभ तथा श्रेष्ठता प्राप्त होती है।

6. छठे भाव में सामान्यतः सभी ओर से प्रसन्नता का वातावरण बनना, कार्य सिद्धि में अड़चने एवं बाधाएँ आती हैं।

7. सप्तम भाव में पत्नी से कलह, स्त्री के स्वास्थ्य में गिरावट, दुर्घटना होने की संभावना, ससुराल से परेशानी एवं कष्ट मिलता है।

8. अष्टम भाव में मानसिक परेशानी तथा चरित्र में कमजोरी आना, बदनामी, आर्थिक हानि, व्यर्थ ही इधर उधर भटकना तथा लक्ष्य च्युति होती है।

9. नवम भाव में नया मकान बनाना या खरीदना या उसके बारे में अनुकूल बात होना, भूमि संबंधी कार्यो में लाभ, समस्त सुख सुविधाओं में वृद्धि प्राप्त होती है। अविवाहितों के विवाह होने की संभावनाए अनुकूल बनती हैं।

10. दसम भाव में प्रभाव में वृद्धि, यश, कीर्ति एवं सम्मान मिलना, परिचितों में मतभेद एवं कुटुम्ब में कलह बढ़ना, धार्मिक कार्यो में रुचि एवं वृद्धि, धन खर्च में वृद्धि होती है।
11. एकादश भाव में पतन, पराभव, शत्रुओं का हावी होना तथा विविध परेशानियों से ग्रस्त होना, मन में एक अज्ञात सा डर बना रहना, कुटुम्बियों से कलह होती है।
12. द्वादश भाव में नये मित्रों से लाभ, धन का विशेष लाभ, कोई अप्रत्याशित अनुकूल कार्य होना एवं हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होती है।

शनि का प्रत्येक भाव में गोचर फल

1. प्रथम भाव में आग लगना, या जहर खाना, या कोई विषैला प्रभाव शरीर पर होना, अनहोनी, आकस्मिक दुर्घटना, परिवार की तरफ से कुचक्र रचना, मित्रों का शत्रुवत् व्यवहार करना, विदेश यात्रा, घर से दूर रहना, स्थानांतरण, असत्य बालने की प्रवृत्ति को बढ़ावा तथा स्थान–स्थान पर निरादर अपमान का सामना करना पड़ता है।
2. द्वितीय भाव में रोग वृद्धि तथा विविध प्रकार के रोगों से ग्रस्त होना, धन नाश, जो भी कार्य करें उसमें हानि, अपमान, कठिनाइयां होना, संतान बाधा, गर्भ च्युति आदि होती है।
3. तृतीय भाव में धनागम, आर्थिक स्त्रोतों का प्रादुर्भाव तथा विविध स्त्रोतों से धनलाभ, सुख सुविधाओं में वृद्धि, नौकरी लगना, मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तर, रोजगार व्यापार में वृद्धि तथा समस्त प्रकार के शुभ कार्य होते हैं।
4. चतुर्थ भाव में कुटुम्ब से अलग होना, मित्रों से दूरी, विद्वेषण एवं विवाद होना, संदेह बना रहना, तोड़–फोड़ एवं विध्वंसकारी प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिलना, भावनाओं में कमी आती है।
5. पंचम भाव में आकस्मिक घाटा हो, जिससे रोजगार व्यापार में कठिनाइयाँ, मानहानि, संतान कष्ट, संतान की तरफ से बाधाएं, मन में उद्वेग एवं अशान्ति बनी रहती है।
6. छठे भाव में शत्रुओं पर विजय, मुकदमें में जीत, मित्रों तथा संबंधियों में लोकप्रियता, रोगमुक्ति तथा कठिनाइयों पर विजय दिलाता है। विपरीत सैक्स के प्रति रुचि एवं सफलता मिलती है।

7. सप्तम भाव में व्यर्थ ही इधर–उधर भटकना, कार्य की सफलता में अनेक प्रकार की बाधाएं, पत्नी से झगड़ा, बच्चों से विग्रह एवं साथियों से मनमुटाव होती है।

8. अष्टम भाव में मानसिक प्रसन्नता, कठिनाइयों पर विजय लेकिन संतान बाधा, गर्भ च्युति, पशु हानि, मित्रों से विवाद, विग्रह एवं फूट, चोरी होने की संभावनाएं बढ़ना, स्वास्थ्य में गिरावट, स्वभाव में चिडचिड़ाहट आती है।

9. नवम भाव में दरिद्रता, धन का नाश, शुभ कार्यों में बाधाएं एवं कठिनाइयां, मानहानि, परिवार के किसी वृद्ध व्यक्ति का मरण, दुःख, चिन्ता एवं उद्योग में हानि होती है।

10. दसम भाव में सम्मान भंग, शील भंग, चरित्र हानि, आर्थिक हानि एवं प्रसिद्धि में बट्टा लगता है। जातक आर्थिक हानि होने से मानसिक रूप से चिंचित बने रहता है।

11. एकादश भाव में मूड बदलना, विचारे हुए कार्यो में बाधाएं, कठिनाइयां एवं परेशानियां आती हैं। लेकिन गलत कार्यो, धोखा, रिश्वत आदि से विशेष धन प्राप्ति होती है।

12. द्वादश भाव में व्यर्थ के कार्यो में व्यस्त रहना, समय का अपव्यय, आर्थिक हानि, इधर–उधर भटकना, स्वास्थ्य में गिरावट, रोजगार–व्यापार में घाटा एवं शत्रुओं की विजय, तथा स्त्री पुत्रों को रोग कष्ट होता है।

राहु का प्रत्येक भाव में गोचर फल

1. प्रथम भाव में शारीरिक क्षीणता, विभिन्न प्रकार के कष्ट उत्पन्न होते हैं।
2. द्वितीय भाव में धन का नाश या अपव्यय, कुटुम्ब सुख में कमी होती है।
3. तृतीय भाव में विविध स्त्रोतों से लाभ एवं सुख, पराक्रम में वृद्धि होती है।
4. चतुर्थ भाव में घोर कष्ट, दुर्घटना के योग, भूमि वाहन से कष्ट होता है।
5. पंचम भाव में धन हानि, संतान सुख में कमी या संतान को पीड़ा होती है।
6. छठे भाव में सुख सौभाग्य कीर्ति सम्मान में वृद्धि, शत्रुओं पर विजय मिलती है।
7. सप्तम भाव में स्वास्थ्य में कमी, ग्रहस्थ सुख में कमी एवं विवाद उत्पन्न होते हैं।
8. अष्टम भाव में मृत्यु तुल्य कष्ट, यात्राओं में पीड़ा, इधर–उधर भटकना पड़ता है।

9. नवम भाव में आर्थिक हानि, धर्म कर्म में कमी, स्वभाव में नास्तिकता आती है।

10. दसम भाव में कर्म से लाभ, राज्य या राज्य अधिकारियों से लाभ मिलता है।

11. एकादश भाव में सुख सम्पत्ति में वृद्धि, राज नेताओं से विशेष सहयोग मिलता है।

12. द्वादश भाव में आकस्मिक व्यय में वृद्धि, दूर देश की यात्रा में खर्च होता है।

ऊपर प्रत्येक राशि में भाव के अनुसार भ्रमण करते समय ग्रह क्या–क्या फल देते हैं, उसकी जानकारी दी है। अष्टक वर्ग के क्षेत्र में यह जानकारी सत्यता के निकट पहुंचाने में सक्षम होती है। लेकिन फल विवेचन के साथ–साथ ग्रहों की पुष्टता को भी देख लेना चाहिए। यदि ग्रह आठ रेखाओं से युक्त होगा, तो वह विशेष धनदाता, सुख प्रदायक एवं लाभकारी होगा, और वही यदि शून्य रेखा युक्त हुआ, तो कष्ट बाधा या पीड़ा देगा।

नीचे अगल अलग रेखाओं से सम्पन्न ग्रह क्या क्या फल दे सकते हैं, इसकी जानकारी प्रत्येक ग्रह की स्पष्ट की जा रही है।

सूर्य

8. रेखा पूर्ण अनुकूलता, धनदायक एवे विशेष अच्छे फल देने की क्षमता।
7. रेखा मानसिक प्रसन्नता, कीर्ति, यश एवं धन का लाभ होता है।
6. रेखा उन्नति की ओर अग्रसर, पदोन्नति प्राप्त होती है।
5. रेखा धन एवं सम्पत्ति में वृद्धि कारक, भूमि–वाहन का लाभ मिलता है।
4. रेखा सम न शुभ न अशुभ, समय सामान्य रहता है।
3. रेखा परेशानियों के बाद ही सफलता मिलने के योग होते हैं।
2. रेखा अपने द्वारा ही मूर्खतापूर्ण कार्यो से हानि होती है।
1. रेखा घोर कष्ट या मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

ऊपर प्रत्येक रेखायुक्त सूर्य का फल स्पष्ट किया गया है। उदाहरण हेतु सूर्य जब प्रथम भाव में गोचर भ्रमण करेगा तो सूर्य से संबंधित फल आर्थिक व्यय, व्यर्थ की परेशानी इत्यादि तो प्राप्त होगी, परन्तु यदि सूर्य आठ रेखाओं से युक्त हुआ तो इन परेशानियों के मध्य भी कुछ अनुकूल स्थितियां बन जाएंगी जिनसे कुछ न कुछ लाभ जातक को मिल सकेगा। लेकिन यदि सूर्य चार रेखाओं से युक्त हो तो उपर्युक्त फल ज्यों के त्यों समझना चाहिए, और यदि सूर्य एक या शून्य रेखायुक्त हो तो इस फल में विशेष निम्नता समझनी चाहिए।

इस प्रकार ज्योतिषी को चाहिए कि वह गोचर फल कहते समय सूर्य की रेखाओं का भी पूर्ण अध्ययन करने के पश्चात ही फलादेश कथन करे। जिस प्रकार ऊपर की पंक्तियों में सूर्य के बारे में स्थिति स्पष्ट की है, उसी प्रकार अन्य ग्रहों के बारे में भी समझना चाहिए। आगे सभी ग्रहों का रेखानुसार गोचर फल दिया गया है।

चन्द्र

8. रेखा मानसिक प्रसन्नता, संबंधियों से सहयोग एवं लाभ मिलता है।
7. सहयोग, कार्यो में सफलता प्राप्त होती है।
6. उच्चाधिकारियों से लाभ, शासकीय कार्यों में सफलता मिलती है।
5. साहस, सम्मान में वृद्धि होती है।
4. स्वास्थ्य में गिरावट आती है।
3. संबंधियों से लड़ाई–झगड़ा उत्पन्न होता है।
2. धनहानि के योग बनते हैं।
1. परिश्रम व्यर्थ होना एवं अपव्यय अधिक होता है।
0. विविध माध्यमों से दुख मिलता है।

मंगल

8. भूमि, मकान, मशीनरी संबंधी कार्यो से लाभ मिलता है।
7. भाइयों एवं मित्रों से सहयोग मिलता है।
6. राज्य, शासन, शासकीय अधिकारियों से लाभ मिलता है।
5. भौतिक सुखों की वृद्धि होती है।
4. मध्यम न लाभ न हानि।
3. परिवार में कलह उत्पन्न होती है।
2. पत्नी से विवाद एवं संतान की चिंता सताती है।
1. रक्त से संबंधित रोगों की वृद्धि होती है।
0. आग लगना, उदर रोग एवं दुर्घटना की आशंका रहती है।

बुध

8. राज्य से सम्मान, यश कीर्ति में वृद्धि होती है।
7. धन लाभ एवं आर्थिक स्थिति में सुधार होता है।

6. जो भी कार्य हाथ में लिया जाए वह सफल होता है।
5. सगे संबंधियों से लाभ मिलता है।
4. उत्साह में वृद्धि होती है।
3. बिना वजह धन का अपव्यय होता है।
2. विविध प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं।
1. चर्म रोग होने की संभावना रहती है।
0. आकस्मिक हानि के साथ साथ मान–सम्मान की हानि होती है।

गुरु

8. सम्मान, यश कीर्ति लाभ, धन लाभ में वृद्धि होती है।
7. प्रसन्नता, आय के विविध स्त्रोत मिलते हैं।
6. नया वाहन मिलना या सवारी का लाभ मिलता है।
5. शत्रुओं पर या विवाद में विजय मिलती है।
4. सम यह समय मध्यम फल देता है।
3. मानसिक चिन्ता या मन में तनाव बना रहता है।
2. राज्य या पद च्युति, स्थानान्तरण अथवा स्थान बदलने की संभावना रहती है।
1. धनहानि अन्यथा बिना वजह धन का अपव्यय होता है।
0. विभिन्न प्रकार के कष्टों का समना करना पड़ता है।

शुक्र

8. प्रेम या विवाह संबंध में सफलता तथा पूर्ण भौतिक सुख मिलता है।
7. वस्त्र, आभूषण या भौतिक सुखों से संबंधित वस्तु का लाभ मिलता है।
6. मन में प्रसन्नता एवं उल्लास की वृद्धि होती है।
5. मित्रों से, संबंधी या सहयोगियों से सहायता मिलती है।
4. सम, यह समय मध्यम फल देता है।
3. संबंधियों से विवाद, कलह उत्पन्न होती है।
2. नौकरी में हानि तथा रोगों में वृद्धि होती है।
1. जल से घात या चोट की संभावना रहती है।
0. सभी कार्यो में असफलता मिलती है।

शनि

8. प्रशासकीय एवं उत्तरदायित्व पूर्ण कार्यो में सफलता मिलती है।
7. नौकरों से, सहयोगियों या अधिनस्थों से लाभ मिलता है।
6. शुभ प्रचार एवं यश कीर्ति तथा ख्याति में वृद्धि होती है।
5. धन–धान्य, भौतिक वस्तुओं का लाभ प्राप्त होता है।
4. सम, यह समय मध्यम फल देता है। ।
3. धन हानि या बिना वजह के व्ययों में वृद्धि होती है।
2. रोगों में वृद्धि, जेल, मुकदमा आदि की संभावना बनती है।
1. झूठा लांछन, अपयश, अपकीर्ति प्राप्त होती है।
0. बीमारी या शारीरिक कमजोरी में वृद्धि होती है।

ग्रहों का विशेष प्रभाव

प्रश्न उत्पन्न होता है कि ग्रह अपना शुभ या अशुभ प्रभाव कब प्रदान करते हैं ? एक राशि तीस अंशों की होती है, अर्थात् एक राशि में एक ग्रह जब तीस अंश भुगत लेता है, तब वह अगली राशि में प्रवेश करता है। इन तीस अंशों में कौनसा ग्रह कितने अंश पर अपना प्रभाव देता है, यह बताया जा रहा है।

सूर्य– एक से दस अशों के भ्रमण में अपना फल प्रदान कर देता है।
चन्द्र– बीस से तीस अंश पर जब भ्रमण करता है।
मंगल–एक से दस अंशों के बीच भ्रमण करते समय फल देता है।
बुध– सम्पूर्ण राशि में एकसा फल देता है।
गुरु– राशि के मध्य भाग में अर्थात् दस अंश से बीस अंश के बीच भ्रमण करते समय।
शुक्र– गुरु के समान ही फल देता है।
शनि– चन्द्रमा के समान फल देता है।
राहु– बुध के समान फल देता है।

ऊपर गोचर फल बताते समय रोगवृद्धि, रोग आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है। प्रश्न उठता है, कि यह रोग शरीर के किस भाग में होगा ? इसके लिए यह ध्यान रखना पड़ता है कि अमुक ग्रह किस नक्षत्र पर भ्रमण कर रहा है, नक्षत्र के अनुसार ही रोग स्थान ज्ञात किया जाता है।

नीचे प्रत्येक ग्रह का नक्षत्रानुसार रोग स्थान दे रहे हैं।

सूर्य

1 पहला नक्षत्र अश्विनी चेहरे पर।
2 2, 3, 4, 5 वां नक्षत्र सिर में।
3 6, 7, 8, 9 वां नक्षत्र छाती या हृदय में।
4 10, 11, 12, 13 वां नक्षत्र दाहिने हाथ में।
5 14, 15, 16, 17, 18, 19 वां नक्षत्र दोनों पैरों में।
6 20, 21, 22, 23 वां नक्षत्र बांए हाथ में।
7 24, 25 वां नक्षत्र दोनों नेत्रों में।
8 26, 27 वां नक्षत्र गुप्तांग में।

चंद्रमा

1. 1, 2 रा नक्षत्र चेहरे पर।
2. 3, 4, 5, 6 वां नक्षत्र सिर में।
3. 7, 8 वां नक्षत्र पीठ में।
4. 9, 10 वां नक्षत्र दोनों नेत्रों में।
5. 11, 12, 13, 14, 15 वां नक्षत्र हृदय में।
6. 16, 17, 18 वां नक्षत्र बाएं हाथ में।
7. 19, 20, 21, 22, 23, 24 वां नक्षत्र दोनों पैरों में।
8. 25, 26, 27 वां नक्षत्र दाहिने हाथ में।

मंगल

1. 1, 2 रा नक्षत्र चेहरे पर।
2. 3, 4, 5, 6, 7, 8 वां नक्षत्र दोनों पैरों में।
3. 9, 10, 11 वां नक्षत्र कुक्षि में।
4. 12, 13, 14, 15 वां नक्षत्र बांएं हाथ में।
5. 16, 17 वां नक्षत्र सिर में।
6. 22, 23, 24, 25 वां नक्षत्र दाहिने हाथ में।
7. 26, 27 वां नक्षत्र विदेश गमन।

बुध, गुरु, शुक्र

1. 1, 2, 3 रा नक्षत्र सिर में।
1. 4,5,6 वां नक्षत्र चेहरे पर।
2. 7, 8, 9, 10, 11, 12 वां नक्षत्र कुक्षि में।
3. 18, 19 वां नक्षत्र गुप्त स्थान में।
4. 20 से 27 वां नक्षत्र दोनो पैरों में।

शनि, राहु, केतु

1. पहिला नक्षत्र चेहरे पर।
1. 2, 3, 4, 5 वां नक्षत्र दाहिने हाथ में।
2. 6, 7, 8 वां नक्षत्र दाहिने पैर में।
3. 9, 10, 11 वां नक्षत्र बाएं पैर में।
4. 12, 13, 14, 15 वां नक्षत्र बाएं हाथ में।
5. 16, 17, 18, 19, 20 वां नक्षत्र कुक्षि में।
6. 21, 22, 23 वां नक्षत्र सिर में।
7. 26, 27 वां नक्षत्र पीठ में।

उपरोक्त सभी ग्रहों के लिए नक्षत्रों की गणना चन्द्र राशि से की जानी चाहिए।

विशेष फल का विचार

सूर्य

1. जब सूर्य 5, 6 या 8 रेखाओं से युक्त हो और चन्द्र लग्न पर आता है तो विवाह, यात्रा, शुभ कार्य एवं धन वृद्धि के साधन जुटाता है।

2. जब सूर्य 2, 3 या 4 रेखाओं से युक्त होकर चन्द्र राशि पर आता है तो प्रत्येक कार्य में विलंब बाधा या परेशानी होती है।

3. जब सूर्य शून्य रेखा से युक्त होकर चन्द्र राशि पर आता है तो प्रत्येक कार्य में बाधा एवं मृत्यु तुल्य कष्ट जातक को होता है।

चन्द्र

1. चन्द्रमा अपनी राशि पर 6, 7, 8 रेखाओं से युक्त होकर आता है तो वैवाहिक कार्यो में शुभ, शिक्षा एवं उन्नति एवं साक्षात्कार में सफलता प्रदान करने वाला होता है।

2. परन्तु जब चन्द्र 1, 2, 3, 4 रेखाओं से युक्त होकर अपनी जन्मराशि पर आता है तो कार्य में विलंब एवं कठिनाइयां उपस्थित होती हैं।

3. जब चन्द्रमा अधिक रेखओं से युक्त होता है, तो उसका वैवाहिक जीवन सुखी होता है।

मंगल

1. चन्द्र राशि या जन्मराशि पर जब मंगल गोचर में आता है और वह पांच या इससे अधिक रेखाओं से युक्त हो तो भूमिक्रय होना, कृषि कार्यो से लाभ एवं अचल सम्पत्ति संबंधि कार्यो से लाभ होता है।

2. यदि शून्य रेखा या 1, 2 रेखाओं से युक्त मंगल अपनी जन्म राशि या चन्द्र राशि पर गोचर करे, तो रक्त संबंधी रोग में वृद्धि होती है।

बुध

1. बुध पांच या अधिक रेखाओं से युक्त होकर अपनी जन्मराशि या चन्द्रराशि पर गोचर करे तो शिक्षा में लाभ, साक्षात्कार में सफलता, व्यापार में वृद्धि, विशेष लाभ आदि होता है।

2. जब शून्य रेखा से युक्त होकर सूर्य लग्न, चन्द्र लग्न या बुध लग्न पर गोचर करे तो व्यापार में आकस्मिक हानि एवं घाटा होता है।

गुरु

1. जब गुरु 6, 7, 8 रेखाओं से युक्त होकर चन्द्रराशि या गुरु राशि पर गोचर करे तो मानसिक सन्तोष, आध्यात्मिक साधना में वृद्धि, वेदज्ञान, संतान सुख एवं धार्मिक भावनाओं में वृद्धि होती है।
2. जब गुरु 4, 5 रेखाओं से युक्त हो तो सोना, चांदी, जवाहरात से लाभ तथा अर्थवृद्धि होती है।

3. शून्य रेखा से युक्त हो तो बदनामी होती है।

शुक्र

1. शुक्र 4 से 8 रेखाओं से युक्त होकर चन्द्रराशि या जन्मस्थित शुक्र राशि पर गोचर करे तो प्रेम संबंधी कार्यो में सफलता, मानसिक सन्तोष एवं सुख में वृद्धि तथा विवाहादि कार्यो में लाभ होता है।

2. यदि शून्य रेखा या 1, 2 रेखा से युक्त शुक्र गोचर करे तो बदनामी होती है।

शनि

1. जब शनि 6, 7, 8 रेखाओं से युक्त होकर अपनी जन्मराशि या चंद्र राशि पर गोचर करता है, तब लोहा या कृषि संबंधी कार्यो में विशेष सफलता एवं धन प्रदान करता है।

2. शनि शून्य 1 या 2 रेखा से युक्त आार्थिक हानि देता है।

राहु अष्टक वर्ग

अष्टक वर्ग प्रकरण में यद्यपि सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र एवं लग्न इन आठों के विवेचन को अष्टक वर्ग की संज्ञा दी गई है। इसमें राहु की कोई गणना नहीं की गई है, ज्योतिष ग्रन्थों में अष्टक वर्ग के विवेचन पर जो भी कार्य हुआ है, उसमें भी राहु को कोई स्थान नहीं दिया गया, क्योंकि राहु मूलतः एक छाया ग्रह है। लेकिन शुभ होरा प्रकाश में राहु को भी अष्टक वर्ग में स्थान दिया है। यद्यपि राहु की गणना अष्टक वर्ग में करना न तो न्याय संगत है, और न ही फलित नियमों के अनुकूल है। मात्र ज्योतिष के जानकारों हेतु राहु अष्टक वर्ग का विवेचन प्रस्तुत कर रहे हैं।

यहां पर यह स्पष्ट करना आवश्यक हो जाता है कि राहु का अष्टक वर्ग चक्र या कुंडली नहीं बनाई जाती है। लेकिन जानकारी हेतु आगे दे रहे हैं। राहु के गोचर प्रभाव को जानने हेतु राहु के अष्टक वर्ग में रेखाप्रद स्थानों का विचार किया जा सकता है।

राहु के रेखा स्थान

सूर्य से–	1, 2, 3, 4, 7, 8, 10
चन्द्र से–	1, 3, 5, 7, 8, 9, 10
मंगल से–	2, 3, 5, 12
बुध से–	2, 4, 7, 8, 12
गुरु से–	1, 3, 4, 6, 8
शुक्र से–	6, 7, 11, 12
शनि से–	3, 5, 7, 10, 11, 12
लग्न से–	3, 4, 5, 9, 12
कुल रेखा योग–	44

राहु अष्टक वर्ग रेखा स्थान (43)

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
1	1	2	2	1	6	3	3
2	3	3	4	3	7	5	4
3	5	5	7	4	11	7	5
4	7	12	8	6	12	10	9
7	8		12	8		11	12
8	9					12	
10	10						

राहु का न तो त्रिकोण शोधन संभव है और न ही एकाधिपत्य शोधन। उदाहरण कुण्डली में राहु अष्टक वर्ग में निम्न रेखाएं प्राप्त होंगी।

राहु अष्टक वर्ग

राशि	ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.	योग
मेष		0	0	।	0	0	।	।	।	4
वृष	चं.मं.ल.	0	।	0	।	।	।	।	0	5
मिथुन	सू.बु.शु.	।	0	।	0	0	0	।	0	3
कर्क	श.	।	।	।	।	0	0	0	।	5
सिंह		।	0	0	0	0	0	0	।	2
कन्या		।	।	।	।	0	0	।	।	6
तुला	गु.	0	0	0	0	।	0	0	0	1
वृश्चिक		0	।	0	0	0	।	।	0	3
धनु		।	।	0	।	।	।	0	0	5
मकर		।	।	0	।	।	0	।	।	6
कुंभ		0	।	0	0	0	0	0	0	1
मीन		।	0	0	0	।	0	0	0	2
योग		7	7	4	5	5	4	6	5	43

राहु अष्टक वर्ग उदाहरण कुंडली

राहु भ्रमण काल (चन्द्र राशि में)

1. रोग उत्पत्ति, बिना वजह की परेशानी एवं कष्ट होता है।
2. धन का अपव्यय या धन का नाश एवं कुटुम्ब में परेशानी होती है।
3. स्वास्थ्य उत्तम रहता है एवं मन में प्रसन्नता एवं सुख मिलता है।
4. दुर्घटना का खतरा या बीमारी तथा विविध प्रकार के दुःख मिलते हैं।
5. संतान की चिन्ताएं एवं आर्थिक हानि होती है।
6. मन में प्रसन्नता उत्पन्न होती है एवं विजय मिलती है।
7. शारीरिक हानि, पति या पत्नि को कष्ट होती है तथा रोजगार में रुकावटें आती हैं।
8. वाहन से दुर्घटना या यात्रा में कष्ट या चोट लगती है।
9. मानसिक तनाव बढ़ता है एवं धर्म की हानि होती है।
10. शत्रुओं की वृद्धि तथा बिना वजह के विवाद उत्पन्न होते हैं।
11. मानसिक प्रसन्नता एवं भौतिक सुखों में वृद्धि होती है।
12. बिना वजह के खर्चों में वृद्धि होती है एवं यात्रा व्यय बढ़ता है।

उपरोक्त प्रकार से राहु के फल का विचार कर फलादेश करना चाहिए।